॥ श्रीः ॥

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र।

चंदनलालकृत।

उसीको
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
इनके " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें
रामचन्द्र राघो इन्होंने मालिकके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया.

शके १८३६, संवत् १९७१.

कल्याण–मुंबई.

भूमिका.

मैं उस ईश्वर परमात्माको धन्यवाद देता हूं कि जिसने मुझसे मतिमंदको एक उत्तम अग्रवालवंशमें जन्म दिया और अनुग्रह करके लाला जमैयतरायजी स्वर्गवासी रोहतकनिवासीके गृहमें उत्पन्न किया कि जो श्रीगोस्वामीतुलसीदासजीकी रामायणके अत्यन्त प्रेमी थे, जिनकी उत्तम शिक्षासे मुझसे शठकोभी रामचरणमें प्रीति हुई. मैं देश और जातिकी उन्नतिके विषयमें ड्रामा लिखा करता था, परंतु मेरे ज्येष्ठ भ्राता लाला उमरावसिंहजी व लालाकुन्दनलालजीने मुझको यह उपदेश किया कि इस वाणीरूपी भवरीको रामचरित्ररूपी मकरन्दसे पोषण करना योग्य है और लालाकिशनलालजी, लाला प्यारेलालजी, लाला मुन्शीलालजी, पं० जैरामदासजीने जो अति-सज्जन पुरुष हैं और अपने वैष्णवधर्मपर सावधान हैं. तन मन धनसे उद्योग करके धर्मके प्रचारके निमित्त एक कम्पनी बना दी जिसका नाम रामलीला थिएट्रिकल कम्पनी रखकर इस दासको इसका मॅनेजर बना दिया. प्रिय सज्जनो! इसी कारण यह श्रीराम जानकीजीका चरित्र रचा गया है, आशा है कि जो कुछ भूल चूक हो गई हो उसको बुधजन सुधार लेंगे. और इस दासको अपना पुत्र लखकर कृतार्थ करेंगे, सज्जनोंकी सेवामें यहभी निवेदन है कि विवाह आदिक उत्सवपर जिस किसी भक्तजनको रामचरित्र श्रवण करनेकी अभिलाषा हो तो यह कम्पनी उसके ग्राममें आके श्रीरघुनाथजी महाराजके गुणानुवाद वर्णन कर सकती है.

सज्जनोंका सेवक-

चन्दनलाल मॅनेजर.

रामलीला थिएट्रिकल कम्पनी पुत्र लाला
जमैयत रायजी शरिस्तेदार स्वर्गवासी.
रोहतक मोहल्ला—बाबरा.

जिन पुरुषोंका वर्णन इस नाटकमें लिखा है उनके नाम.

१ श्रीमान् राजा दशरथजी	अयोध्यापुरीके नृपति और श्रीरामचंद्रजीके पिता.
२ वशिष्ठजी	राजा दशरथजीके गुरु.
३ शृंगिऋषि	एक ऋषिका नाम.
४ विश्वामित्रजी	,, ,, ,,
५ मारीच	एक राक्षसका नाम.
६ सुबाहु	,, ,, ,,
७ रावण	लंकाका नृपति.
८ जनक	मिथिलापुरीके नृपति और जानकीजीके पिता.
९ परशुरामजी	एक ऋषिका नाम.
१० शतानन्दजी	राजा जनकके पुरोहित.
११ श्रीरामचन्द्रजी	राजा दशरथजीके पुत्र और अयोध्याके नृपति.
१२ भरतजी	राजा दशरथजीके पुत्र.
१३ लक्ष्मणजी	,, ,,
१४ शत्रुघ्नजी	,, ,,
१५ नारदजी	देवर्षि.
१६ जैकंवार	प्रजाजन.
१७ सुमंत	राजा दशरथके सचिव.
१८ निषाद	एक भील.
१९ रणधीर	निषादका सेनापति.
२० बलवीर	,, ,,
२१ सुरणधीर	,, ,,

२२ खर	रावणका भाई.
२३ दूषण	,, ,,
२४ जटायू	राजा दशरथजीका मित्र.
२५ सुग्रीव	किष्किन्धापुरीका नृपति.
२६ वालि	,, ,,
२७ हनुमान्	सुग्रीवका मंत्री.
२८ अंगद	वालिका पुत्र.
२९ नल	सुग्रीवका सेनापति.
३० नील	,, ,,
३१ मयंद	,, ,,
३२ संपाती	जटायूका भाई.
३३ जांववंत	सुग्रीवका सेनापति.
३४ विभीषण	रावणका भाई.
३५ टिविया	एक मसखरा.
३६ महोदर	रावणका सेनापति.
३७ अनी	,, ,,
३८ अकंपन	,, ,,
३९ अक्षयकुमार	रावणका पुत्र.
४० मेघनाद	,, ,,
४१ शुक	रावणका दूत.
४२ सारण	,, ,,
४३ सुषेण	वैद्य.
४४ कुम्भकर्ण	रावणका भाई.
४५ कुमुख	रावणका सेनापति.
४६ कालनेमि	एक राक्षस.
४७ वाल्मीकिजी	एक ऋषि.

जिन स्त्रियोंका वर्णन इस नाटकमें लिखा है उनके नाम.

१ कौसल्या	राजा दशरथकी भार्या और रामचन्द्रजीकी माता.
२ कैकेयीजी	राजा दशरथकी भार्या और भरतजीकी माता.
३ सुमित्राजी	राजा दशरथकी भार्या और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्नकी माता.
४ जानकीजी	राजा जनककी पुत्री और रामचन्द्रजीकी भार्या.
५ शिरोमणि	जानकीजीकी सहेली.
६ उर्मिला	.. ..
७ मांडवी	.. ..
८ अहल्या	गौतमऋषिकी भार्या.
९ ताडका	एक राक्षसी.
१० देवांगना	एक अप्सरा.
११ सरस्वती	एक देवी.
१२ मंथरा	रानी कैकयीकी दासी.
१३ शूर्पणखा	रावणकी बहन.
१४ तारा	बालिकी भार्या.
१५ बामा	पातर.
१६ देवांगना	देवकन्या.
१७ मन्दोदरी	रावणकी भार्या.
१८ त्रिजटा	एक राक्षसी.
१९ लंकिनी	,, ,,

२० कामकन्दला	पातर.
२१ श्यामप्यारी	,, ,,
२२ सुलोचना	मेघनादकी भार्या.
२३ योगिनी	एक राक्षसी.
२४ वनचरी	,, ,,
२५ शरमा	विभीषणकी भार्या.



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र ।



काण्ड प्रथम भाग ।

ॲक्ट नं. १. सीन नं. १.

(सम्पूर्ण देवतागणका रावणके भयसे दुःखित होकर श्रीसच्चि-
दानन्द विष्णुभगवान्‌की प्रार्थना करना.)

छन्द ।

(तर्ज—भये प्रकट कृपाला, दीनदयाला, कौशल्याहितकारी.)

देवतागण—

जय जय प्रभु स्वामी, अंतर्यामी, प्रणतपाल खरारी ।
खलदुष्टनिकंदन, सुरगणरंजन, गोद्विजके रखवारी ॥
प्रभु दीनदयाला, नाथ कृपाला, जड चेतन हितकारी ।
अब करहु सहाई, विपता आई, मेटो चिंता हमारी ॥
तेरा नाम न रूपा, अजर अनूपा, निर्गुण तो निर्विकारी ।
प्रभु भवभयभंजन, जनमनचंदन, दुष्टदलन असुरारी ॥

(सुरसमूहका नैन मूंदकर ईश्वरका ध्यान करना.)

(आकाशवाणी)

प्रिय देवतागण ! धैर्य धरो, मेरी वाणीको श्रवण करो, मैं तुम्हारे हितकारण नरदेह धारण करूंगा, तुम्हारे सम्पूर्ण क्लेश

हरूंगा, देखो मैं अयोध्यापुरीके नृपति दशरथका पुत्र बनूंगा, अपनी शक्तिसहित अवतरूंगा, नरलीला करूंगा, तुम सब वानर भालूकी देह बनाओ, किष्किंधापुरीके पर्वतोंकी कन्दरामें जाओ, मैं शीघ्रही आकर मिलूंगा और तुमसे सहायता लूंगा.

सीन नं. २.

(श्रीमान् राजा दशरथजीका राजमंदिरमें उदास बैठना.)

गजल धुन जिला, ताल कवाली ।

(तर्ज–मेंवं तानी हैं, खञ्जर हाथमें है, तनके बैठे हो.)

राजा दशरथ–

यह प्रभुता द्रव्य धन माया मेरे क्या काम आवेगी ।
चलूंगा जबके दुनियासे नहीं यह साथ जावेगी ॥
अयोध्याकी यह रजधानी श्रीसरयू बहे जिसमें ।
मेरे पीछे नहीं मालूम यह किसकी कहावेगी ॥
हुआ है चौथापन मेरा बुढापा छागया तनमें ।
धरूं कैसे मैं अब धीर्ज कर्मगति क्या दिखावेगी ॥

(वसिष्ठजीका शृंगिऋषिसहित आना, राजाका दण्डवत् करना.)

वसिष्ठजी–राजन्! संदेह त्यागो, परमात्माकी प्रभुताईको देखो, अभी पुत्रयज्ञ करता हूं, आपका संदेह मिटाता हूं, धैर्य धरो, आपके चार पुत्र उत्पन्न होंगे, जो आपको अनेक प्रकारसे सुख देंगे.

(शृंगिऋषिका पुत्रयज्ञ करना, अग्निका प्रगट होकर एक हविका पात्र देना.)

दीन्ही भूपति दानमें, हर्ष न हृदय समाय ॥
सहित प्रिया चरणन गह्यो, बहुविधि विनय बखान ।
तुम्हरे घर कहँ टहलवी, कन्या दीन्ही दान ॥
मैं सेवक तुम्हरा प्रभू, सहि सब राजसमाज ।
तुम भूपति रघुकुलकमल, सबविध मम सिरताज ॥

(श्रीरामचंद्रजी और श्रीजानकीजीका बहावरी देना देवताओंका आनंद होकर पुष्प बरसाना.)

ठुमरी धुन खमाच ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज-राम बिना आराम नहीं.)

सब सहेली-
गोरी मनोहर विधना बनाई रामसरिस वर दुलहन सीता ।
श्याम गौर सुंदर छबि सेवा सुभग अंग शुचि परम पुनीता ॥
शारद प्रभुता वर्ण सके को कर जोरें सुरादिप विनीता ।
युग जुग जीवें वर दुलहन यह गावें चंदन मंगल गीता ॥

ड्राफसीनका आहिस्ते आहिस्ते गिराया जाना ।

प्रथम भाग समाप्त ।

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र।



अयोध्याकाण्ड द्वितीय भाग।

ॲक्ट नं. २.

श्रीरामवनगमनलीला.

सीन नं. १.

(श्रीमान् महाराजा दशरथका राजभवनमें विराजमान होना
देवांगनाओंका नृत्य गायन० करना.)

देवांगना– दोहरा।

कर जोरे विनती करे, चरण निवावे माथ।
चन्दन तव अधीन है, रघुकुलपति महाराज ॥

ठुमरी।

(तर्ज–आज तो आनन्द मोरे शामजीका आवना.)

राजा तोरे अंगमें फूलोंकी बहार है।
मोतिया गुलाब गैंदा जूही केतकी अनूप।
प्यारी चम्पा चमेलीका बिराजे हार है ॥
धन्य धन्य भाग तव भूप मन जगतपती।
रामचन्द्र पुत्र जाके कीर्ती अपार है।

श्रृंगिऋषि-राजन् ! जो कुछ वसिष्ठजी महाराजने विचारा था सो सिद्ध हुआ, यह हवि ले जाओ, रानियोंको भोजन कराओ. ईश्वरकी कृपासे चार पुत्र होंगे जो संसारको आनन्द देंगे.

(राजाका हविका दोना लेकर रानियोंको भोजन कराना.)

सीन नं. २.

(विश्वामित्रऋषिका वनमें तपस्या करना और ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

गजल धुन बिहाग, ताल दवांली ।

(तर्ज-गमसे जिगर है जलाता नैनोंसे नीर जारी ।)

विश्वामित्रजी-प्रभू दीनबन्धु स्वामी, संकट मिटानेहारे ।
दंडवत् तुमको मेरी, सृष्टी रचानेहारे ॥
रवि घोर तमको नाशै, शशि रैनको प्रकाशै ।
ईश्वर है धन्य तोको, सब कुछ बनानेहारे ॥
मुनि संत और उदासी, नृप रंक बनके वासी ।
पाया न भेद तेरा, करने करानेहारे ॥
अब तो शरीर धारो, भूमीका भार तारो ।
सृष्टीमें भर रहेहैं, मुनिजन सतानेहारे ॥

(मारीच और सुबाहुका आकर मुनिकी तपस्यामें बाधा करना.)

गजल धुन देसकार, ताल चाचर ।

(तर्ज-अब समर्ग की गम है जिंदा बशरको ।)

विश्वामित्रजी-अरे दुष्टो वृथा न मोको सतावो ।
तपस्यामें हूं ध्यान क्यों तुम डिगावो ॥

किसीको सताना न अच्छा है पापी ।
न छेडो मुझे तुम चले भाई जावो ॥
मैं बैठा हुवा याद ईश्वर करूं हूं ।
क्या कहता हूं मैं तुमको यह तो बतावो ॥

अंग्रेजी बजन धुन सुन्दरा ताल कहरवा ।
(तर्ज-दूर दूर ओ मगरूर)

मारीच-बातें बहुत बनाता, हमको हैं अब रिझाता ।
न उठ यहांसे जाता, खोवेगा अपनी जान ॥
सुबाहु-मुझको नहीं पहचाना, बलको न मेरे जाना ।
दे छोड यहां आना, बस कहना मेरा मान ॥

सीन नं. ४.

श्रीरामजन्मउत्सव ।

(श्रीमान् राजा दशरथजीका वसिष्ठजीसहित राजभवनमें विराजमान होना.)

राजा-महाराज ! आपकी कृपासे आज मनवांछित फल मिल गया है, हृदयरूपी कमल खिल गया है, अब इनके नामभी धर दीजिये, मुझको कृतार्थ कीजिये.

वसिष्ठजी-राजन् ! आपके ज्येष्ठ पुत्र जो श्रीमती कौशल्यादेवीके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं; यह संपूर्ण सृष्टिके नायक हैं, मुनिजनके सुखदायक हैं, यह दुष्टोंका संहार करेंगे, सज्जनोंका उद्धार करेंगे, इनका नाम राम है, जो सर्व सिद्धिका धाम है.

राजा—अच्छा महाराज !

वसिष्ठजी—दूसरे कुमार जो श्रीमती कैकयीके उदरसे प्रकट हुए हैं यह सम्पूर्ण संसारका पालन करेंगे, विश्वको भरेंगे, उनका नाम भरत है.

राजा—महाराज !

वसिष्ठजी—जो दो पुत्र श्रीमती सुमित्रासे हुए हैं उनमें जो बडा कुमार है वह आपके ज्येष्ठ पुत्रका बडा हितकारी है, सब लक्षणोंसे सम्पन्न है, इसी कारण इसका नाम लक्ष्मण है, दूसरे कुँवर जिनके स्मरण करनेसे शत्रुका नाश होता है, बल व तेज अत्यंत बढता है, जो उसका ध्यान करेगा उसको धन्य है, उसका नाम शत्रुघ्न है. (राजाका दण्डवत् करना.)

सीन नं. ५.

(विश्वामित्रजीका वनमें ईश्वरका भजन करना.)

अंग्रेजी वजन, धुन सिन्धरा, ताल कवाली.

(तर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी.)

विश्वामित्र—मोको पापी दुष्ट सतावें, सुध लीजे मेरी महाराज ।
यज्ञ नहीं होने दी पूरी, कष्ट दिया है भारी आज ॥
हे जगदीश दयानिधि स्वामी, राखो तुम अब मेरी लाज ।
टेर सुनो अब प्रभुजी मेरी, बेग संवारो मेरा काज ॥
हे दीनबंधु राम, मोको नहीं आराम ।
जलता हूं आठों याम, कैसे लूं तेरा नाम ॥

भक्तोंके हो आधार, आवो अजी सरार ।
तुमसे मेरी पुकार, अब राखो जनकी लाज ॥

(नेत्र मूंदकर ईश्वरका ध्यान करना.)

विश्वामित्रजी–मैं इसी समय जाता. और राजासे दोनों कुमार मांगकर लाता हूं.

—

सीन नं. ६.

(श्रीराजादशरथका चारों पुत्रोंसहित राजभवनमें विराजना विश्वामित्रका आना.)

राजा–(दण्डवत् करके) महाराज ! बडी कृपा कारी जो दर्शन दिया, दासको कृतार्थ किया, सिंहासनपर विराज जाओ, जो चरणसेवा हो सुनाओ, अपना मुझको दास जानो, इन चारों पुत्रोंसहित चरणसेवक मानो.

मुनि–महाराज! आपकी प्रभुताई दूनी बढे, ईश्वर मनकामना पूरी करे, मैं वनमें यज्ञ करता हूं, परंतु निशिदिन डरता हूं, क्योंकि मारीच और सुबाहु दो दुष्ट मुझको सताते हैं, मेरी यज्ञको विध्वंस बनाते हैं और नाना प्रकारके उपद्रव करके भाग जाते हैं, आज मैंने ईश्वरका ध्यान किया तो मालूम हुआ कि उनका नाश आपके पुत्रोंके हाथसे हो जावेगा, फिर मुझे कोई न सतावेगा । इस कारण राजन् ! तुम्हारे पास आया हूं, यह फरियाद लाया हूं, सो आप मेरा उद्धार कीजिये, थोडे दिनोंके वास्ते श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसहित दे दीजिये

ठुमरी।

(तर्ज-चले सिया राम लखन वनको.)

राजा-

मुनीश्वर कीजे जरा विचार, नहीं मुझको है कुछ इन्कार।
वह निश्चर अतिघोर हैं, युद्ध करनेसे काम ॥
पुत्र मेरे यह लाडले, क्या जाने संग्राम।
अभी भोले भाले सुकुमार, किया नहीं मृगकाभीहै शिकार ॥
जान माल ले लीजिये, जो कुछ हो दरकार।
चौथेपनमें पाये हैं, नाथ यह सुत मैं चार ॥
यही मेरे प्राणआधार, मुनीश्वर कीजे जरा विचार ॥

वसिष्ठजी-राजन्! क्या संदेह करते हो? क्यों मोहमें फंसते हो? आपके नजदीक कुँवर अभी नादान है, परन्तु इनके सितारे बडे बलवान् हैं, इनकी जन्मकुंडली बता रही है, साफ दिखा रही है कि, यह दुष्टोंका संहार करेंगे, सज्जनोंका उद्धार करेंगे, निःसंदेह दोनों कुमार मुनिको दे दीजिये, कुछ वहम न कीजिये, यह दोनों भाई उनको संग्रामशय्यापर सुलावेंगे, मुनीश्वरका कष्ट मिटावेंगे.

राजा-(विश्वामित्रसे) अच्छा महाराज! आपको अख्त्यार है, दासको क्या इनकार है, मगर इनपर अपनी कृपा रखना, जल्दीही लौट आना, ये दोनों मुझको प्राणोंसेभी प्यारे हैं, मेरी आंखोंके तारे हैं.

विश्वामित्रजी-राजन् ! मैं शीघ्रही आऊंगा. आपके पुत्रों-को कुशलपूर्वक लाऊंगा.

राजा-(श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजीसे) मेरे प्राण-पियारे नैनोंके उजयारे ! धनुष बाण उठाओ, मुनीश्वरके संग जाओ, इनका कष्ट मिटाओ, जल्दी आकर अपना चन्द्रवदन दिखाओ.

(श्रीरामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीसहित सबको दण्डवत् करके विश्वामित्रके संग चलना.)

सीन. नं. ७.

(श्रीरामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीसहित विश्वामित्रजीके संग वनमें विचरना, मार्गमें ताडकाका मिलना, महाराजका एकही बाणसे उसके प्राण हर लेना, विश्वामित्रजीका अपने आश्रमपर आकर यज्ञ करना, महाराजका धनुषबाण धारण करके बंधुसहित यज्ञकी रक्षा करना.)

ठुमरी ।

(तर्ज-रामको अधार बन्दे रामको आधार रे.)

विश्वामित्रजी-हरिनाम ना बिसार बंदे जन्म ले सुधार तू ।
छोड द्रोह मोह कोह, बासना जहानकी ।
लोभ मोह, फांसी जीव, गल न अपने डार तू ॥
जीव आश, त्रास नाश, ईर्षा मद आदि मान ।
भोग रोग, सोग छोड, आत्मा संवार तू ॥

(मारीच और सुबाहुका राक्षसीसेना लेकर आना, श्रीरामचन्द्र-जीका मारीचको बाण मारकर शत योजन समुद्रके तीर गिरा देना, लक्ष्मणजीका सुबाहुको अग्निबाणसे भस्म करके सम्पूर्ण राक्षसीसे-नाका नाश कर देना, विश्वामित्रजीका आनन्द होना.)

ठुमरी धुन जिला, ताल पंजाबी ठेका।
(तर्ज–एक चतुर नार कर कर सिंगार.)

विश्वामित्रजी–
तेरी माया न ईश्वर जान परे, एक पलमें रंकसे राव करे।
सबका आधार करे बेडा पार, अवगुण न काहूके चितमें धरे॥
तेरी अजबशान, सके कौन जान, भरतेको रीता रीतेको भरे।
लीला अपार ऐसा दातार, तेरे दरसे न कोई निरास फिरे॥
दीनोंके नाथ, तोहे नाऊं माथ, जनके क्लेशको तूही हरे॥

विश्वामित्रजी–हे रघुराज! आपने मेरे सम्पूर्ण क्लेश मिटा दिये हैं. मेरे शत्रु रणभूमीमें सुला दिये हैं, इस वनके मुनि अभय बना दिये हैं.

रामचन्द्रजी–महाराज! हम क्षत्रियोंका तो यह परम धर्म है, कि मुनीश्वरोंकी सेवा करें, उनके संकट हरें.

(मुनिका कंद मूल फूल लाकर देना. महाराजका भोजन करना.)

विश्वामित्रजी–हे रघुराज! आजकल तो मिथिलापुरीमें बडी तयारी हो रही है. जनकदुलारी स्वयंवर रच रही है.

चलो हमभी देखें स्वयंवरको अब।
जमा हो रहे नामवर वहां सब॥

रामचंद्रजी–हमें हुकम मंजूर है आपका।
भताअत करें आपको सिर झुका॥

(विश्वामित्रजीका श्रीरामचंद्रजी और लक्ष्मणजीसहित चलना, वनमें एक पत्थरकी शिला पडी हुई दृष्ट आना.)

रामचंद्रजी—यह क्या मामला है महाराजजी! यह पत्थरका शिला क्यों यहां है पडी? कोई आदमी नजर आता नहीं, परिंदाभी उडता न फिरता कहीं।

विश्वामित्र—हुए हैं मुनि एक गौतमजी नाम। उन्हीकी है यह स्त्री सुनिये राम। हुई शापसे यह शिला संगकी। करो दूर दुख इसका रघुबर अभी॥

(महाराजके चरण लगनेसे उस पत्थरकी शिलाका फट जाना और एक सुंदररूपवती स्त्री अर्थात् अहल्याका उसमेंसे प्रगट होकर महाराजके चरण पकडना.)

ठुमरी रेखता।

(तर्ज—बुरा मैं क्या किया तेरा तू दुशमन बन गया मेरा.)

अहल्या—

प्रभु तुम जगतहितकारी, दयालू नाथ असुरारी।
तुम्हींने हिरनाकुश मारा, भक्त प्रहलाद निस्तारा॥
चीर खम्ब दुष्ट संहारा, तुर्त नरसिंह देह धारी।
पकड गज ग्राह जब लीन्हा, तो गजने ध्यान तब कीन्हा॥
बचाया पलमें आकरके, सुनी तुम टेर खरआरी॥

(अहल्याका आकाशमार्गको उड जाना, महाराजका आगे चलना.)

सीन. नं. ८.

(विश्वामित्रजीका श्रीरामचंद्रजी व लक्ष्मणजीसहित जनकपुरीकी फुलवारीमें बैठकर ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

पद धुन पर्ज ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज-देखो ऐसो चतुर नार डिगमिग पग करत जात.)

विश्वामित्रजी-

देखा झूठा व्यवहार, तेरा सब असंसार ।
मोह द्रोह फैल रहा धन्य है तोको करतार ॥
सांचा तू है सरजनहार, बेडा सबका करता पार ।
दुष्ट मारे जन उबारे, नेक न लगावे बार ॥

(राजा जनकका आना.)

राजा-महाराज ! आपको दण्डवत् करता हूं, चरणोंमें सिर धरता हूं.

मुनि-राजन् ! चिरंजीव रहो, मनकामना पूरी हो.

राजा-महाराज ! आज तो मेरा जन्म सफल हो गया है, जो आपने चरणकमल फेरकर मेरे ग्रामको पवित्र किया है. अब कृपा करके यह और बता दीजिये. मेरा संदेह मिटा दीजिये कि यह दोनों कुंवर जिनकी सुंदरताईके आगे पूर्ण चंद्रमाभी लजाता है, मेरा मन जिनके स्वरूपको देखकर मोहित हुआ जाता है, किस प्रतापीके प्राणपियारे हैं. उसको धन्य है, जिसकी आंखोंके यह तारे हैं.

मुनि-राजन् ! इनका रामचन्द्र और लक्ष्मण नाम है, अयोध्यापुरी इनका धाम है, श्रीमान् राजा दशरथके दुलारे हैं, मेरे संग आकर मारीच और सुबाहु रणमें संहारे हैं, अब स्वयंवरसभाके कारण आपकी पुरीमें पग धारे हैं.

राजा–महाराज ! बडी कृपा की. जो चरण फेरकर स्वयं-वरको शोभा दी, अब दासकी यह प्रार्थना कबूल कीजिये मेरे स्थानकोभी पवित्र कर दीजिये, कुछ दिन सेवकके पास बास कीजिये.

मुनि–अच्छा राजन् ! चलिये, कोई स्थान बता दीजिये.

(राजाका महाराजसहित चलना और एक सुंदर स्थानमें बास देना

सीन. नं. ९.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबन्धुसहित राजा जनकके बागमें पूजनके कारण पुष्प लेने जाना.)

ठुमरी धुन जिला ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज–एक चतुर नार करके सिंगार.)

केसरकी क्यार, नरगिसकतार, देखो बहार, क शिंगार । गुलका अजीब सुंदर सिंगार ॥ केसरकी क कोकलका शोर, है चारों ओर, कूकें हैं मोर, कीजे तो गौर करते किलोल फिरैं डारडार ॥ केसरकी क्यार । सुंदर तडाग रचा मध्य बाग, निर्मल है नीर, देखो तो तीर । मंदिर अनूप गिरिजाका मझार ॥ केसरकी क्यार ॥

(श्रीजनकनन्दिनीका सखियोंसहित पार्वतीजीका पूजन कर आना, उर्मिलाका फुलवारीमें टलहना और दूसरे रामचन्द्रजीके दर्शन करके हर्षित होकर जानकीजीके समीप आना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज–सुन रे काले देव रे.)

शिरोमणि–का तोको आली मिला, जो हर्ष न हृदय समाय
बेग पियारी ऐ सखी, कारण हमें सुनाय

उर्मिला–कौशलपति दशरथसुवन, वय किशोर सुकुमार।
सुंदर श्यामल गौर तन, सुखमा अंग अपार॥
पुष्प तोडने कारने, फिरत हैं केशरक्यार।
मोहनी मूर्त माधुरी, दिखलाई कर्तार॥

मांडवी–सुन सीता प्यारी मेरी, मैंभी सुनी यह बात।
मुनिकौशिकके संगमें, आये हैं दो भ्रात॥
जिन स्वरूपकी मोहनी, डार स्ववश किये लोग।
अवश देखिये हे प्रिये, वह तो देखन योग॥

(श्रीजानकीजीको लताओंकी ओटसे महाराजके दर्शन करके चकित हो जाना.)

रामचन्द्रजी–(लक्ष्मणजीसे) भाई लक्ष्मण! देखो यह वही विदेहकुमारी जनकदुलारी है, कि जिसके कारण स्वयंवर रचा गया है, सम्पूर्ण ब्रह्मांडके राजाओंको जमा किया गया है, अब यह सखियोंसहित पार्वतीजीका पूजन करने आई है, विधाताने कैसी मोहनी मूर्ति बनाई है, रतिसेभी अधिक छबि पाई है, मुहकी कांति पूर्णचन्द्रमाको शरमाती है, मतवाली चाल मस्त हाथीको लज्जित बनाती है, दांतोंकी बतीसी मोतियोंकी लडीको खाकमें मिलाती है. मृगके नैनभी उसके कटाक्षनेत्रके आगे सकुचाते हैं, कैसी अलौकिक शोभा है, कि जिसको देख मेरा मनभी मोहित होता है, भाई! मेरा शुभग अंगभी फडकता है देखो विधाता क्या करता है.

लावनी धुन बिहाग ताल कव्वाली ।

(तर्ज–मुख चंदाकासा कमलनैन रतनारे.)

सखी–(जानकीजीसे–)

हुई आलि हमको देर महल चलो प्यारी ।
कल आवें फिर इस जगह जावें बलिहारी ॥
यह लीजे चम्बेलीका हार गूंद लाया माली ।
पूजनका बीते समय पियारी आली ॥
अब तोडो प्यारी पुष्प झुकावो डाली ।
प्रिय चलो गवरजापूजन कर लो थाली ॥
प्यारी तकती होगी माता राह हमारी ।
कल आओं फिर इस जगह जावें बलिहारी ॥

(श्रीजानकीजीका पार्वतीके मंदिरमें आकर पूजन करना.)

अंग्रेजी वजन.

(तर्ज–तोरे छलबल है प्यारी तोरी कलबल है प्यारी.)

श्रीजानकीजी–

गजआननमहतारी, शिवशंकरकी प्यारी ।
मय्या लीला तुम्हारी, है अपरम्पार ॥
हम हैं चेरी तुम्हारी, कीजे रक्षा हमारी ।
भवसागरसे हमको उतारो पार ॥
नावें नावें माथ हम, जोडें हाथ हम ।
करो माता हमाराभी अब निस्तार ॥

प्यारी जननी गनेश, काटो जनके क्लेश ।

शिव शंकर महेश ॥

प्रिय जै जै जै, जै जै जै, जै जै जै ।

(श्रीजानकीजीका पूजन करके चला जाना.)

सीन नं. १०.

(विश्वामित्रजीका ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

लावनी धुन जिला ताल कवाली ।

(तर्ज–चमनमें फसले बहारी है.)

विश्वामित्रजी–

यह माया तेरी न्यारी है । कोई हर्षित काहूके नीर जारी है ॥ मृगीको कैसे दिये सुंदर नैन नवीन । उज्ज्वल परम सुहावने पर बुगलेको दीन ॥ करी कोयल क्यों कारी है । यह लीला तेरी न्यारी है ॥ सुंदर जल नदियन भरा, उज्ज्वल परमसुहात । पान किये तिर्षा मिटे, मज्जनतें श्रम जात ॥ किया सागर क्यों खारी है, यह लीला तेरी न्यारी है ॥ ऊजड खेडे थे जहां, बैठे गीदड नाग । मनुष्य कोई आवे नहीं, निशि दिन उडते काग ॥ वहां फूली फुलवारी है । यह माया तेरी न्यारी है ॥

(रामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीसहित आकर चरणोंमें सिर निवाना, विश्वामित्रजीका पुष्प लेकर पूजन करना.)

गजल धुन छन्द.

(तर्ज–परसे चरण कर प्रेम पूर्ण प्रणतपाल खरारिके.)

विश्वामित्रजी–

प्रभु दीनबंधु दयालु नाथ कृपाल जगत आधार है ।
गो द्विज मुनि जन संतका तूही हरि रखवार है ॥
धरनी गगन जल थल बसे सबमेंही तेरा रूप है ।
चेतन चराचर जीव जड सृष्टीका पालनहार है ॥
जब जब विपत संतन परी तब तब सहाय तुम करी ।
तेरे नाम अगणित हैं हरि निर्गुण तूही निर्विकार है ॥

सीन नं. ११.

(श्रीजानकीजीका महलमें उदास बैठना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कव्वाली ।

(तर्ज–एक तीर फेंकता जा बांकी कमानवाले.)

जानकीजी–शिवका धनुष कठिन है रावण सरीखे हरे ।
तोडेंगे कैसे इसको, सुकुमार प्यारे बारे ॥
कैसा कठोर यह पन, प्यारे पिता किया है ।
समझाया काहूभी ना, मतिमंद हुये सारे ॥
शंकरधनुष न टूटे, दुनिया पिता हंसेगी ।
सब हैं तमाशा देखू, कहलावें जो हमारे ॥

गजल धुन बिहाग ।

(तर्ज–बेकली है आज दिल किनके लिये.)

शिरोमणि–त्यागो संशय सुन्दरी मानो कहा ।
तोडेगा शिवका धनुष वह सांवरा ॥

जिसने मारे शत्रु विश्वामित्रके ।
क्यों न भजें वह धनुष सोचो जरा ॥
याद कीजे देवऋषि बानी प्रिये ।
काहेको संदेह यह आली करा ॥

सीन नं. १२.

(विश्वामित्रजीका ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

भजन ।

(तर्ज–यह जग है गोरखधन्धा.)

श्वामित्रजी–
नर रामनाम गुन गाले, परलोककी राह बनाले ।
यह दुनिया रैन बसेरा, यहां कौन मूर्ख है तेरा ॥
क्यों फंसा मोहके फंदे, हरिनामसे चित्त लगाले ।
जब समय कूचका आवे, सब छोड अकेला जावे ॥
सब झूठा जगका नाता, कोई संग न तेरे चाले ॥

रामचन्द्रजी–देखो लक्ष्मण ! सूर्यनारायण उदय हो गये अपनी लाल किरणोंसे जगत्‌को प्रकाशित कर रहे हैं, कवा चकवीके शोकको हर रहे हैं.

लक्ष्मणजी–महाराज ! सूर्य भगवान्‌के उदय होनेसे रागण मलीन हो गये हैं, इसी प्रकार आपके आनेसे सम्पूर्ण जा बलहीन हो गये हैं, वे चापरूपी अंधकारको नहीं सकते हैं, शिवधनुषको नहीं उठा सकते हैं.

(शतानन्दजीका आना.)

शतानन्दजी—महाराज ! स्वयंवरका समय आ गया है इस कारण महाराज विदेहने मुझको पठाया है; आपको दोनों कुमारोंसहित बुलाया है.

विश्वामित्रजी-(महाराजसे) उठो रघुराज ! जनकनन्दिनीके स्वयंवरमें चलें, राजाओंका पराक्रम देखें, को शिवधनुष उठाता है, विदेहकुमारी पाता है.

लक्ष्मणजी—महाराज ! जिसपर आप कृपा करोगे, वह शिवधनुष उठावेगा, स्वयंवरमें बडाई पावेगा.

सीन. नं. १३.

(सब राजोंका सभामें विराजमान होना. विश्वामित्रजीका श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजीसाहित आना. राजा जनकका दण्डवत् करके एक उंचे सिंहासनपर महाराजको विराजमान करना. श्रीजानकीजीका सखियोंसहित जयमाला लेकर आना.

ठुमरी धुन पर्ज ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज—जागो जागो ए दिलप्यारी सखियां तुम्हें अमानत है.)

सहेली जानकीजी—

देखो देखो कमां यह शिवकी, जो कोई इसे उठावेगा ।
अपनी ताकत बाजूसे फिरतोड़ जमीप गिरावेगा ॥
यह सुकुमारी जनकदुलारी राजकुमारी सीया प्यारी ।
ज्ञान उजागर सबगुननागर आज सभामें पावेगा ॥

(सम्पूर्ण राजोंका उठउठकर शिवधनुषपर बल करना, परन्तु धनुषका न उठना, राजाओंका लज्जित होकर बैठ जाना.)

गजल सोहनी।

(तर्ज—मरहबा ऐ आशिक सादिक हमारे.)

राजा जनक—

तोडा न काहू शिव धनुष, अंधेर यह कैसा हुआ।
सोचूं मैं क्या जाऊं कहां, होय वाम विधि कीन्हा कहा॥
आये स्वयंवर सुनके सब, कहलावे थे जो सूर्मा।
रहा तोडना तो अतिकठिन, तिलभर न कोई उठा सका॥
अब जावो सब निज निज भवन, पुत्री कुमारी रह गई।
निश्चय मोहे अब हो गया, योधा नहीं कोई रहा॥
हटको न अपनी त्यागहूं, विपता पडे सो सब सहूं।
चल बैठ पुत्री भवन अब, पति तेरे कर्ममें ना लिखा॥

लक्ष्मणजी—(रामचन्द्रसे) महाराज! राजा जनकको तो मुनिजन विद्वान् बताते हैं, यह तो विदेह कहलाते हैं, आज कैसे अनुचित वचन सुनाते हैं, सबको कायर ठहराते पृथ्वीको योधाओंसे हीन बताते हैं, यद्यपि जानते हैं कि इस स्वयंवरमें रघुकुलके तिलक श्रीरामचन्द्रजी महाराज विराजमान हो रहे हैं, दुष्टोंको संहार रहे हैं, पृथ्वीका भार उतार रहे हैं, जो आपकी आज्ञा पाऊं तो अभी ब्रह्मांडको हाथपर उठाऊं, काचे घटके समान फोडकर शत खण्ड बनाऊं, सूर्यवंशी कुलकी प्रभुताई प्रगट करके दिखाऊं.

रामचन्द्रजी—भाई! तुम जो कुछ कहते हो सोई कर

दिखाओगे, देर न लगाओगे, जरा बैठ जाओ, क्रोध न कर स्वयंवरका उत्सव देखो, राजाओंके बलको परेखो.

(लक्ष्मणजीका दण्डवत् करके बैठजाना, किसी राजाका धनुष करने न उठना, श्रीजनकनन्दिनीका अति कष्टको प्राप्त होना.)

विश्वामित्रजी—हे रघुराज! अब विलम्ब न करो, ज कनन्दिनीका कष्ट हरो, शीघ्रही शिवधनुषके दो खंड बनाओ विदेहका संकट मिटाओ.

(श्रीरामचन्द्रजी महाराजका शिवधनुषके दो खण्ड करके पृथ्वी गिरा देना, श्रीजानकीजीका आनन्द होकर महाराजको जयम पहिराना.)

ठुमरी (तर्ज—होवे जयजयकार.)

सहेली जानकीजी—

जय हो सीताराम, जय हो सीताराम, जय हो सीताराम, जोडी गौरश्याम । गवरजामाई, कीन्ह सहाई, आवो आली अब मंगळ गावो । हमें ईश्वरने यह दिन दिखाया, पूर्ण हुये सारे काम हांहा पूर्ण हुए सारे काम ॥

(परशुरामजीका आना, सबका दण्डवत् करना.)

परशुरामजी—यह देशान्तरके राजा किस का आये हैं? किसने बुलाये हैं?

राजा जनक—मराराज! आपकी दासी जानकीने स्व वर रचा था इसी कारण सम्पूर्ण राजाओंको जमा किया

परशुरामजी—यह शिवका धनुष तोड किसने दिया।
यह अपराध ऐसा है किसने किया ॥
ऐ राजा तू क्या सोचता है खडा
सुना जल्द मनको है गुस्सा बडा ॥
याद रख जो देर लगावेगा।
तो अपनी सम्पूर्ण रजधानीका नाश करावेगा ॥

रामचंद्र— दोहा।
खोजत हो महाराज तुम, धनुष तोडनेहार।
सोभी तो एक है प्रभु, सेवक चरण तुम्हार ॥

परशुरामजी—सेवकका काम है, कि सिवकाई करे, न के वैरभाव करके लडाई करे. सुनो मैं पुकारकर कहता हूं, सबको सुनाता हूं.

दोहा।
जाने यह शंकरधनुष, दिया सभामें तोर।
सोई सहस्रबाहुसम, अब शत्रु है मोर ॥

उसको उचित है कि पंगतीसे उठ जावे, अपने साथ सबको न मरवावे, जल्दी मेरे सामने आवे, इस वक्त मुझको बडा गुस्सा छा रहा है, क्रोधरूपी अग्निसे हृदय जला जा रहा है.

लक्ष्मणजी—महाराज! मैंने लडकपनमें अनेक धनुष तोडे हैं, एक एकके सौ सौ टुकडे कर दिये हैं, अपने कुछभी दुःख नहीं देया, कभी ऐसा क्रोध नहीं किया.

इस धनुषपर ममता है किस कारने।
जिसके बदले अब लगे हो मारने॥

परशुरामजी–राजकुमार मुह सँभालकर नहीं बोलना मालूम होता है कि तेरे दिमागमें चक्कर आ गया है, क सिरपर मंडला गया है, क्या उनको इस धनुषके सम मानता है? मूर्ख! यह शिवजीका धनुष है, जिसको सम्पू ब्रह्मांड जानता है.

लक्ष्मणजी–(हँसकर) महाराज! आप तो ठीक बत हैं, मगर हमको तो सब एकही नजर आते हैं, यह पुरा धनुष छूतेही टूट गया है, इसमें रघुनाथजीका अपराध क्या है? महाराजने तो इसको नवीन जानकर हाथ लगा था, अपने बलकी परीक्षा करना चाहा था, वृथा क्रोध करो, थक गये होगे, बैठ जाओ.

परशुरामजी–क्या तू मेरे पराक्रमको नहीं जानता जो ऐसा निडर होकर बातें करता है, मैंने इन भुजाओं बलसे अनेक बार पृथ्वीको राजाओंसे छीन लिया है, ब्रा णोंको दान देदिया है, इस कुठारसे क्षत्रियोंका नाश दिया है.

लक्ष्मणजी–महाराज! आप तो बडा घमंड दिखाते पहाडको फूंकसे उडाना चाहते हो, आपके गलेमें यज्ञोप नजर आ रहा है, जो आपको विप्रवंशसे बता रहा है,

रण आपकी कठोर बानी सहता हूं, वज्रके समान दुर्व-न सुनता हूं.

परशुरामजी--चुप हो नादान. कैसी चिड चिड बातें ता है; बहादुरीमें पैर धरता है, मुझको ब्राह्मणही मानता यह नहीं जानता है, कि मैंने इस कुठारसे अनेक राजा-का सिर उडा दिया है, शूरमाओंको रणभूमिमें सुला दिया क्षत्रियोंकी प्रभुताईको खाकमें मिला दिया है, तुझकोभी थोडीही देरमें मजा चखाऊंगा. इस कुठारसे तेरा सिर ाऊंगा.

लक्ष्मणजी--महाराज! आपने तो घरमेंही कुठार चलाया संग्राममें किसी शूरमासे हाथ नहीं मिलाया है.

परशुरामजी--जरा होशसे बोल अबेशहूर।
कर दूं अभी तेरा सिर तनसे दूर ॥

(परशुरामजीका कुठार उठाना.)

रामचन्द्रजी--यह बच्चा अभी नाथ अनजान है।
अभी कम समझ है यह नादान है ॥
क्षमा इसका अपराध कर दीजिये।
कृपादृष्टि इसपर प्रभु कीजिये ॥

परशुरामजी--यह भाई तेरा कैसा शैतान है।
अभीतकभी हँसता यह नादान है ॥
मेरे सामनेसे हटा दो इसे।
मेरा जोर बाजू सुना दो इसे ॥

लक्ष्मणजी—जरा आंख अपनीही बंद अब करो ।
न आवे नजर कुछभी फिर आपको ॥

परशुरामजी—(रामचन्द्रजीसे) धनुषको ऐ मूर्ख तूने तोर, आर अब छलसे बिनती करे हाथ जोड. बस संग्रामके लिये तैयार होजा, रणभूमिमें पराक्रम दिखा. हैं दोनोंका इस कुठारसे सिर उडाऊंगा, तब चैन पाऊंगा.

रामचन्द्रजी—महाराज ! क्रोध त्याग दो, अपराध करो, हमें आपसे लडाई शोभा नहीं देती है, इसमें हमारे कु कीर्ति घटती है, क्योंकि आप भृगुकुलके केवल हो, ह कृपा करो, जो और कोई होता तो हमारे हाथमेंभी बाण था शीघ्रही युद्धको तैयार हो जाते, संग्राममें पी दिखाते, चाहे रणमें प्राणही गँवाते, सूर्यवंशियोंने आ कुलको कलंक नहीं लगाया है, कोई संग्रामसे भागक आया है.

परशुरामजी—जरा इस धनुषको चढा दीजिये ।
शुबा मेरे जीका मिटा दीजिये ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका धनषका चढा देना, परशुरामजीका विस्मित होकर चरणोंमें गिर पडना.)

भजन धुन जिला गौरी ताल पंजाबी ठेका ।
(तर्ज—दाता कर तू दयाका फेरा.)

परशुरामजी—प्रभुजी मैं नहीं समझें ....

तुमस्वामी महाराज प्रभु हो तीन लोकके सांई ।
भार उतारन असुरसंहारन प्रगट हुये भगवाना ॥
माया अपरम्पार तुम्हारी मोहित सब संसारा ।
क्षत्रीकुलका भूप कोई हरि मैंने तुमको जाना ॥
दोउ कर जोरूं चरण गहत हूं दीनबंधु रघुराई ।
क्षमा करो अपराध हरि सब चूक हुई अनजाना ॥

(परशुरामजीका दंडवत् करके चला जाना.)

सीन नं० १४.

(रानी कौशल्याजीका भवनमें उदास बैठना.)

गजल धुन जिला बिहाग तालकव्वाली ।

(तर्ज–गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी.)

रानी–
कौशिकमुनी न आये लेकर प्राण प्यारे ।
किस बनमें फिर रहे हैं आंखोंके मेरे तारे ॥
जबसे मुनी गये हैं कुछभी न सुध मिली है ।
ईश्वर रहें कुशलसे मेरे लाडले दुलारे ॥
देखो सखी पियारी यह सोच मोको भारी ।
कैसे लडेंगे रनमें सुकुमार प्यारे बारे ॥

(श्रीमान् राजा दशरथजीका आना.)

राजा–प्रियकौशल्या! आज उदास क्यों हो रही हो ?
किस कारण आंसुओंसे मुह धो रही हो ?

रानी–महाराज! मेरे प्राणप्यारे नैनोंके उजियारे जबसे

मुनिके संग सिधारे तबसे उनकी कुशलकी कोई सुध मिली है, इसी कारण देह व्याकुल हो रही है.

राजा–प्राणप्यारी ! अब तो विधाताने पूर्ण की है म मना तुम्हारी, देखो यह मिथिलापुरीसे पत्रिका आई है राजा विदेहने पठाई है, लिखा है कि जल्दी बरात सज आओ, मेरी पुत्री जानकीको श्रीरामचंद्रजीकी टहलकी बन लो प्यारी ! हर्ष मनाओ, मंगल गाओ, सहेलियोंको बुल आभूषण सजाओ, मैं तो अब जाता हूं, बरातका स बनाता हूं.

(महाराजका चला जाना, रनवासका कौशल्याके पास आन

ठुमरी धुन पर्ज ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज–जागो जागो ऐ शहजादा फूल बहार दिखावत है)

कौशल्या–देखो देखो राम व्याहकी लग्नपत्रिका आई
मिथिलापुरके राजा जनकने दूतके हाथ पठाई
आली आवो मंगल गावो विधना बात बनाई है
जनकदुलारी सीया प्यारी आज वधू मैं पाई

सीन नं० १५.

(श्रीमान् राजा दशरथजीका बरातियों सहित जनकपुरीमें वि मान होना.)

गजल.

(तर्ज–वाह किस हुसनसे दूल्हाने बंधाया सेहरा.)

पातर–गलमें फूलोंका तेरे हार मुबारिक होवे ।

गुंचा अब दिलका खुला फसले बहार आई।
शादीका यह जशन शहर यार मुबारिक होवे ॥
अरशसे फर्शतलक धूम मची शादीकी।
हमको महाराजाका दीदार मुबारिक होवे ॥

(विश्वामित्रजीका श्रीरामचंद्रजी और लक्ष्मणजीको लेकर आना. राजा दशरथजीका विश्वामित्रजीके चरणोंमें सिर निवाना.)

राजा—महाराज! आज मेरा जन्म सफल हो गया, आपकी कृपासे मुझको जीनेका फल मिल गया है.

(विश्वामित्रजीका राजाको उठाना, श्रीरामचंद्रजीका और लक्ष्मणजीका पिताको दंडवत् करना, राजाका दोनों पुत्रोंको हृदयसे लगाना.)

वसिष्ठजी—राजन्! अब विलम्ब न करो, राजाके महलोंमें चलो, देखो लग्नका समय आ गया है, सायंकाल हो गया है.

(राजा दशरथका सम्पूर्ण बरातसहित राजा जनकके महलोंमें चलना.)

सीन नं. १६.

(श्रीमान् राजा दशरथजीका चारों पुत्रों और प्रजाजनोसहित मंडपमें विराजमान होना, सखियोंका श्रीजानकीजीको लेकर आना.)

ठुमरी।

(तर्ज—झूठा जगव्योहार प्यारे.)

सखी—राम मिले भर्तार सीता।
सुंदर शामल गात मनोहर, सुखमा अंग अपार।
सीता राम मिले भर्तार ॥

दशरथ जावे सजन हमारे, भली करी कर्तार।
सीता राम मिले भर्तार॥
संकटहर्ता आनन्द करता, मुनिजनके रखवार।
सीता राम मिले भर्तार॥
दुष्ट संहारन देव उबारन, सकल जगत हितकार।
सीता राम मिले भर्तार॥

(श्रीजानकीजीका मंडपमें विराजमान होना.)

वसिष्ठ— शाखोच्चारण.

श्रीशारद गणपति सुमिरि, गुरुका धर उर ध्यान
रामचंद्रके विवाहकी, शाखा करूं बखान॥
रघुकुलतिलक दशरथनृपति, सकल गुणनकर धा
चार पुत्र ताके भये, कहूं तासु कर नाम॥
भरत शत्रुहन भ्रात दो, और लषन श्रीराम।
अतिसुंदर सुकुमार सब, देखत लाजत काम॥
एक समय कौशिकमुनी, मांग लषन श्रीराम।
निश्चरवधके कारणे, ले आये निज धाम॥
खल मारीच सुबाहु दो, परम सुभट रणधीर।
करैं जो मख विध्वंस मुनि, सब मारे रघुबीर॥
सहित मुनी आये बहुर, जनक भूपके ग्राम।
सब राजन देखें खडे, धनुष तोड दियो राम॥
धनुष भङ्ग कर शब्द सुन, परशुराम तहां आये।

सब राजन बलहीन हो, गवने निज निज गेह ।
जयमाला गल आनके, डारी सुता विदेह ॥
तबही लग्न कर पत्रिका, लिखी जनक हर्षाय ।
दूत बुलाकर दीन्ह तब, और कहो समझाय ॥
कहो श्रीदशरथ भूपसन, बहुविध सीस निवाय ।
परम सुभट रणधीर हैं, राम लषन दो भाय ॥
मोर लाज राखी जगत, मेटा कष्ट अपार ।
सब राजनकर मान मथ, भंज्यो धनु त्रिपुरार ॥
बांच पत्रिका भूप सुनि, सकल समाज बनाय ।
व्याहरीतिके कारणे, आवहु मुनि हर्षाय ॥
चले दूत हर्षात मन, आये अवधपतिधाम ।
नृपदशरथसे जायकर, कीन्ही दंड प्रणाम ॥
बांच पत्रिका भूप सुनि, गुरुहिं सुनाई जाय ।
जनकनगर कह पुन चले, रथ गज लेन बनाय ॥
अगवानी कीन्ही जनक, मिले हृदय अतिप्रीत ।
परमानन्द और चावसू, करी व्याहकी रीत ॥

नन्दजी— कन्यापक्ष.

शुभ मुहूर्त शुभ दिन, शुभ लग्न है आज ।
जो अब भूपति गेहमें, धरे चरण रघुराज ॥
एक समय आनन्दयुत, सिया व्याहके काज ।
सब भूपन कहि पत्रिका, लिखी हर्ष निमिराज ॥
रच्यो स्वयंवर भूप सुनी, नृप आये हर्षाय ।

जनकनृपति सबसन कहो, याविध वचन सुनाय ॥
सुनो भूप परवीन सब, जो धनु भंजै आज ।
सीता पुत्री कुँवरि मम, सोइ ब्याहे सिरताज ॥
सुन प्रण अभिलाषे सकल, लागे धनुष उठान ।
भूमि तजत नहिं शिवधनुष, बैठे तज अभिमान ॥
रावन आदिक भूपभट, गवने निज निज गेह ।
देख दशा अस नृपनकी, भयो संदेह विदेह ॥
का उपाय अब मैं करूं, कीन्हो हृदय विचार ।
कोउ जगमें प्रगटै नहीं, धनुष भंजनेहार ॥
रही कुमारी कुँवरि मम, भयो दुख हृदय अपार ।
चलत विचार न अब कछू, काह कीन्ह कर्तार ॥
जो बिन भंजे धनुष अब, करवरी करूं विवाह ।
पुण्य तेज बल सुयश तो, सकल नाश हो जाय ॥
ताहि समय रघुराज नृप, तासु बुलारे आन ।
सब राजनके मध्यमें, धनुष तोड दियो तान ॥
सुमन वृष्टि नभतें भई, बाजें गगन निशान ।
गावें किन्नर अप्सरा, नाचें चढें विमान ॥
जनकनंदिनी हर्ष मन, जयमाला दी डार ।
मिथिलापुर आनंद भयो, जयजयकार पुकार ॥
हर्ष आनंद मन चावयुत, तब आये रघुराज ।
भुप जनक चरणन गहो, हर्षसमेत समाज ॥
कपिला धौरी धूमरी, और सुरधेनुगाय ।

पुत्रवधू गुणनिधान जनकलली जानकी ॥
रूपराशि नागरी लक्ष्मी अवतार है ॥

(महाराजाका मुकुरमें मुखारविंद विलोकना और श्रवणोंके समीप सित केश निहारके किसी चिन्तामें मग्न हो जाना.)

सुमन्त–महाराज ! क्या ध्यान आया है, क्या किसी ...के राजाको दंड देनेका खयाल समाया है.

राजा–प्रिय सुमन्त ! देखो मेरे कानोंके समीप सित केश आते हैं. जो यह बताते हैं कि जवानी व्यतीत हो गई वृद्धअवस्था आ गई है, देखो स्याहीमें सफेदी छा गई है, यह उपदेश करती है कि अब राजकाजसे हाथ उठा, सरयूके तीर बैठकर ईश्वरके गुणानुवाद गा, इस कारण चेत है कि रामचन्द्रको युवराज बनाऊं और मैं परमा-...से ध्यान लगाऊं जो तुमको मेरी सम्मति भाती हो तो मैं ...जीके चरणोंमें शीस निवाऊं और आज्ञा लाऊं.

सुमन्त–हां महाराज ! श्रीरामचन्द्रजी अब राजपदवीके ...र हैं. क्योंकि उनसे आनन्द सम्पूर्ण प्रजावासी लोग हैं. ...कृपालु दयाके निधान हैं. शूरवीरताईमें निपुण स-...की खान हैं, श्रीजनकनन्दिनीके स्वयंवरमें सम्पूर्ण ब्रह्मां-...राजाओंको नीचा दिखाया है. सबके दिलोंपर अपनी ...ताईका सिक्का जमाया है. मारीच और सुबाहु जैसे दुष्टोंको ...भूमिमें सुलाया है. मेरी तो यह सम्मति है कि विलम्ब न ...जिये. श्रीरामचन्द्रजीको युवराजपदवी दे दीजिये.

३

राजा—अच्छा तो तुम गुरुजीके स्थानपर आगमन जतावो.

सीन नं. २.

(श्रीसरस्वतीजीका क्षीरसागरके तीर विराजमान हो देवगणका आकर पुकार करना.)

देवतागण—हाय माता ! मर गये, दुष्ट राव सम्पूर्ण अंग भंग कर दिये. माताजी रक्षा करो, हमारे

ठुमरी ।

(तर्ज—पति मग देखमें कटे..)

सरस्वती—

सीतापति रघुनाथ सियावर मुखसे प्यारे उच्चारो
दुष्टदलन आरिमर्दन रघुवर प्रिय नाम यह आध
श्रीराम रघुराज हमारे संकट विपत मिटावेंगे
धरा है नरतन काज हमारे निर्भय हमें बनावेंगे
रावण आदिक पापीको रणसागरमध्य खपावेंगे
मुनिजन सज्जन ध्यान धरेंगे ब्रह्मादिक गुण गावें
प्रिय अमर त्यागहु सब चिंता धीरज मनमें अ
सीतापति रघुनाथ सियावर मुखसे प्यारे उच्चारं

देवता—हे माताजी ! जो श्रीरामचन्द्रजी अयोध्य काजमें लग जावेंगे तो फिर हमारे क्लेश किस प्रकार इस कारण आप अयोध्यामें जाओ, कोई ऐसा उपाय

श्रीरामचन्द्रजी राजपदवी न पावे और जनकनन्दिनी-
त वनमें जावें.

सरस्वती—अच्छा मैं अयोध्यामें जाती हूं और सुरस्वा-
काज किसी निर्दोषके कलंक लगाती हूं. देखो रातही
में क्यासे क्या कर दिखाती हूं. प्रभात होतेही रामचन्द्र-
जी जानकीसहित वनमें पठाती हूं, धीरज धरो, मैं तुम्हारी
ा मिटाती हूं.

(सरस्वतीका चला जाना.)

सीन नं. ३.

(दशरथजी महाराजका सुमन्तसहित वासिष्ठजीको दंडवत् करना.)

ष्ठजी— दोहा।

चिरंजीव राजन रहो, पूरण हों मन काज।
कारण निज आगमनकर, कहो प्रिय रघुराज॥

—नाथ कृपा मनकामना, पूरी सब जगदीश।
एक अभिलाषा हृदय अति, कहूं नाय पद शीश॥
केश भये सित देखिये, वृद्ध भयो महाराज।
आयसु दो तो रामकहि, देहुँ अवधकर राज॥

ष्ठ—धन्य धन्य दशरथ तोहे, रघुकुलके सिरताज।
भल कारज यह भूप मन, देहो रामकहँ राज॥

राजा—प्रिय सुमन्त! तुम नगरमें जावो, प्रजावासियोंको
सुनाओ कि कल रामचंद्रजी अयोध्याके नृपति बनेंगे,
ी मनकामना पूरी करेंगे.

(सुमन्तका दंडवत् करके चलना.)

सीन नं. ४.

(मंथराका अयोध्याजीमें विचरना और पुरीकी शोभा देखके चकित होना.)

गजल धुन जिला ताल कवाली.

(तर्ज–भवें तानी हैं खंजर हाथमें है तकते बैठे हो.)

मंथरा–क्या कारण है विधाता आज क्यों पुरको सजाते हैं
पुरुष वनिता युवा आनन्दमन बाजे बजाते हैं ॥
बसन भूषण सजे तनमें फिरें आनन्द गलियनमें ।
प्रजावासी मगन हर्षित नहीं फूले समाते हैं ॥
अमित शोभा है नृपमंदिर बनी वीथी परम सुंदर ।
मची है कींच केसरकी सुगंधित पुर बनाते हैं ॥
रुचिरताके करे वर्णन सभीके अंगमें चन्दन ई है ।
विधाता आज कहीं कारण सियावर जय मभा है ॥ है ॥

जैकवार–मंथरा ! तू क्या करती है ? कहां भ[illegible] पचाप [illegible]

मंथरा–महाराज ! मैं पुरीकी शोभाको देख रही [illegible] है [illegible] हो रही हूं, समझमें नहीं आता है, आज [illegible] नहीं [illegible] है [illegible] नाया जाता है. जो पूछती हूं तो कोईभी कुछ [illegible] बताता है, हँसके निकल जाता है.

जैकवार–ठीक तो है जो हँसके पीछा नहीं छुडावे तो क्या करे, तू तो जानबूझकर मचलाती है, लोगोंके कान [illegible] है.

मंथरा—महाराज! मैं कान खाती हूं जानके मचलाती हूं?

जैकुवार—और नहीं भी क्या तू नहीं जानती है कि रामचंद्रजी कल युवराज बनेंगे. प्रजाको आनंद देंगे.

मंथरा—सत्य कहते हो या हँसी करते हो?

जैकुवार—वाह हँसी कैसी अभी तो मुनादी हुई थी क्या तो नहीं सुनी है?

मंथरा—महाराज! मैं सौगंध खाती हूं, चरणोंमें सिर झुकाती हूं जो मैं जानती हूं तो परमात्मा मुझे उठा ले. मेरा नाम दुनियासे मिटा दे.

जैकुवार—सौगंध क्यों खाती है नाहक कोहराम मचाती क्या तुको नहीं खबर होगी अब तो जान गई.

मंथरा—हां तो रामचंद्र राजपदवी पावेगा. अयोध्यानाथ होगा.

जैकुवार—अरी तू कैसी बातें करती है क्या नशेमें जाती है?

मंथरा—हां महाराज! मैं नशेमें बुडबुडाती हूं. कोप रहे हो तो मैं तो जाती हूं.

(मंथराका चला जाना.)

सीन नं. ५.

(रानी केकेयीके भवनमें विराजमान होना, मंथराका मलीनमन आना.)

केकई—उदासी क्यों तेरे मुँहपर है प्यारी, बता बैनोंसे

क्यों है नीर जारी, तेरे रोनेसे मेरा जी दहलता, कहो आनन्द-युत हैं राम सीता ?

मंथरा—सिवा ये रामके पूछेगी किसको, मिलेगा क्योंकि अब तो राज उसको. वह होगा राजा हम उसकी हैं परजा, किया जो कुछके है ईश्वरने अच्छा.

ठुमरी धुन खम्माच ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज—राम बिना आराम नहीं.)

रानी—

धन धन हैं आली आज भाग प्रिय सुंदर बात सुनाई है ।
हैं राम पियारे मेरे दुलारे तू क्यों मन घबराई है ॥
ले मांग पियारी रुची जो तुम्हारी बात तेरी मन भाई है ।
... ...सुआ बंहावे जियरा जलावे काहे उदासी छाई है ॥
मैं गनपत पूजूं देव मनाऊं विधना बात बनाई है ॥

...से कुछ तो बोल, चांडाली जिह्वा खाल, चुपचाप खड़ी है, क्या तुझपर बिजली गिर पडी है. सच कहा है जिन मनुष्योंके खोर होती है उनको आनन्दकी बात नहीं भाती है, बस जो कुछ कहना है तो कह सुना, नहीं तो मेरे आगेसे चली जा.

बांदी—नहीं रानीजी ! मुझको क्या कहना है क्या आपको क्रोध दिलाना है, अच्छा उल्टा जमाना है. हितकारी द्रोही कहलाते हैं. शत्रु मित्र बन जाते हैं, मैं यूंही रंज उठाती हूं,

ड़की खाती हूं, कहने योग्य तो वह होती हैं जो बराबरकी होती हैं, मैं तो एक नीच खिदमतगार हूं, क्या कहूं स्वभावसे चार हूं, यह नहीं हो सकता, कि मालिककी बुराई देखूं ौर खामोश रहूं.

रानी—मंथरा। मेरी समझमें नहीं आती है कि तू कैसी तें बनाती है?

बांदी—रानीजी। कल जब रामचंद्र राजा हो जावेगा तो कुछ स । आ जावेगा, जो इस वक्त कुछ कहूंगी तो दृष्ट आओ, मेरे ओरसे कोई राजा हो, मेरे क्या हाथ ंगा मैं तो बांदीही रहूंगी, कोई रानी थोडाही बनावेगा? या कहूं आपका अन्न खाती हूं आनन्द मनाती हूं इस कारण दुःख हुआ था, बस माताजी क्षमा करो, मैंने कुछ नहीं कहा था. "होवे सोइ जो राम रच राखा."

(मंथराका रोना.)

रानी—प्यारी मंथरा। मैं नहीं हूं खफा मैं भरतकी सौगंध खाती हूं, मुझको तुझपर बडा भरोसा है परन्तु नहीं समझी कि तेरा मतलब क्या है जल्द सुना प्यारी देर न लगा.

बांदी—रानीजी। सत्य तो यह है कि आप भोलीभाली हैं, दुनियासे निराली हैं, शत्रुओंको हितकारी मानती हो, यह नहीं जानती हो कि स्वार्थके कारण सब प्रीति करते हैं, मित्रताईमें पैर धरते हैं, परन्तु जब मतलब निकल जाता है तो फिर कोई पासभी नहीं आता है.

रानी—हां हां ठीक है, मैं दुनियाकी मक्कारी नहीं जानती हूं, झूठकोभी सच जानती हूं, मैंभी सोचती हूं कि अवश्य मुझपर कोई विपता आवेगी, नहीं मालूम कर्मगति क्या दिखावेगी क्योंकि मेरे दहने अंग फरकते हैं, रात्रीको खोटे स्वप्न दृष्ट आते हैं.

बांदी—रानीजी ! मैं चुप तो नहीं रहूंगी, इतना जरूर कहूंगी कि कौशल्याने खूब फंदा लगाया है आप जैसी भोलीभालीको धोखेके जालमें फंसाया है इस करण मुझको कलहारी जानती हो. कौशील्याको हितकारी मानती हो.

रानी—नहीं प्यारी ! मुझको तो भाती हैं बातें तुम्हारी, आ मेरे समीप बैठ जा सम्पूर्ण भेद बता.

बांदी—तो रानीजी ! गौर करो, ध्यान धरो. जब रामचंद्र राजा बन जावेगा, तो तुमको अनेक प्रकारसे सतावेगा, भरतको चाकर बनावेगा, नीच काम करवावेगा, उस समय कौशल्याभी हाथ पैर संभालेगी, जी खोलके दिलके अरमानिका लेगी, कारण यह है कि महाराज आपसे प्रीति रखते हैं वह दिलही दिलमें दहती है, चिन्तामें रहती है, परंतु क्या करे उसकी पार नहीं बसाती है, इस समय उसने राजाको अपने जालमें फंसा लिया है, इस कारण उसने भरतजीको तो ननिहाल पठा दिया है, और पीछेसे रामचन्द्रको राज देनेपर महाराजको पक्का लिया है.

रानी–हां हां मैं जान गई, तेरी बात मान गई, बेशक कौशल्या बडी अय्यारा है, पूरी मक्कारा है, मुझे सतानेको तैयार है, खबरना नहीं प्यारी। मेराभी ईश्वर मददगार है.

बांदी–रानीजी! जो आजकी रात्री बीत गई तो फिर कुछ बनाये नहीं बनेगा, कोई जादू नहीं चलेगा, फिर तो आपको कौशल्याकी लौंडी बनकर रहना होगा. नहीं तो यह राजमहल त्यागन करना होगा और नाना प्रकारका क्लेश सहना होगा.

रानी–हाय तो अब मैं कौशल्याकी टहलवी कहाऊंगी. सौतके चरण दबाऊंगी.

बांदी–बेशक रानीजी! जो रामचंद्रको राज हो गया, हमारा नसीबा सो गया, तो नहीं मालूम कौशल्या क्या क्या कर दिखावेगी, किस किसके रुधिरसे सौतसालरूपी अग्निको शान्त बनावेगी?

गजल धुन बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज–एक तीर फेकता जा बांकी कमानवाले.)

रानी–मैं जानती हूं दिलसे तू खैरखा है प्यारी।
बेशक हैं सच पियारी बातें तुम्हारी सारी ॥
आता नहीं समझमें न तदबीर क्या करूं मैं।
[illegible] सो गई है तकदीर अब हमारी ॥
[illegible] बिपत सुनाऊं हाय कहां मैं जाऊं।
[illegible] हो गई अब दुनियामें मेरी ख्वारी ॥

सब हो रहे हैं शादां पीरो जवान तिफलां
एक मैंही रो रही हूं कर्मोंकी आहहारी ॥

(केकईका पृथ्वीपर गिरना, मंथराको पकडना.)

बांदी–रानीजी ! धीर्ज धरो, चिन्ता न करो, भगवान् कृपा करेंगे, हमारे सम्पूर्ण क्लेश हरेंगे.

गजल धुन बिहाग ताल दादरा
(तर्ज–गैर तन तुझको आई ऐयार बेशर्म.)

रानी–दे छोड प्यारी प्राण मैं अपने गवाऊंगी ।
अब सौतकी मैं टहलवी होय कहाऊंगी ॥
जीतब मेरा क्या अब रहा तू सोच तो जरा ।
दासी बनूं न सौतकी मैं जीसे जाऊंगी ॥
मैं केकसुता केकई ईश्वरने विपत दी ।
कलंक प्यारी न मैं तो लगाऊंगी ॥

बांदी–रानीजी ! मैं चरणोंमें सीस निवाती हूं. सौगंध खाती हूं. यह आपको सुनाती हूं, कि रामचंद्र राजपदवी नहीं पावेगा नृपति तो आपकाही पुत्र कहावेगा.

रानी–भरत किस प्रकार राजपदवी पावेगा, रामचन्द्र तो कल युवराज बन जावेगा.

बांदी–रानीजी ! मैं एक सुगम उपाय बताती हूं. देखो आपको याद दिलाती हूं, एक समय जब महाराज आपकी चतुरताईपर प्रसन्न हुए थे जो आनन्द होकर दो वरदान दिये थे अब वह दोनों वर महाराजसे मांगो और अपना कार्य

सिद्ध करो. बस अब सब शृंगार उतार दो, एक पुरानी साडी बांध लो, जब महाराजा आवेंगे और आपको इस दुर्दशामें पावेंगे तो व्याकुल हो जावेंगे, नाना प्रकारसे आपको मनावेंगे परन्तु उस समय गम्भीरताईसे काम लेना, घबरा न जाना, जब महाराज सब प्रकार वशमें हो जावे और रामचन्द्रकी सौगंध खा जावें तो यह मांग लेना कि भरत राजतिलक पावे और रामचन्द्र चौदह वर्ष वनमें वास बनावे.

राग—अंग्रेजी वजन.

रानी—

वाह री आली वाह दिल प्यारी, मृतक जियावन गिरा उचारी।
धन्य धन्य प्रिय बुद्धि तुम्हारी, तन मन डारूं तोपर वारी॥
तोसी प्रिय हितकार, दूजी न कोई नार। तोरे मेरा यह हार, फैंको सभी सिंगार अपनी मोहे दे सारी॥

सीन नं० ६.

(श्रीकौशल्याजीका आनन्दयुत राजभवनमें विराजमान होना.)

कौशल्या—राम प्यारे पुत्र मेरे भूपति कहावेंगे. धन्य धन्य भाग मम कौन जगत मोह सम सीसताज तिलकराज भाल पकरावेंगे, गणपति सहाय करें उमापती कृपा करें प्रातःकाल मेरे लाल नृपति कहे जावेंगे.

सीन नं० ७.

(श्रीमान् राजा दशरथका सायंकालमें केकईके भवनमें प्रवेश करना, महलको शोभापुष्ट विलोक चकित होना.)

राजा–ऐ मंथरा! ऐसी तू क्यों भयभीत खडी है ? कुछ दर्द है या किसीसे तू लडी है ?

मंथरा–न दर्द है मुझको न किसीसे मैं लडूं हूं. यूंही किसी खयालमें महाराज खडी हूं.

राजा–दीपकभी क्यों न जलता है अंधेरा छा रहा, कारण है कौन जल्द अब ऐ मंथरा सुना.

मंथरा–कारण श्रीमहाराज ! क्या मैं आपसे कहूं, हैरान परेशान मैं सरकार खुदही हूं.

राजा–हैरान परेशान क्यों वहूदा बकती है. जो बात है वह क्यों नहीं तू मुंहसे कहती है ?

(महाराजका मंथराके लात मारना, मंथराका रोना.)

मंथरा–महाराज ! क्या कहूं आज रानीजी कोपभवनमें [illegible]ी कुछ नहीं बोलती है, जो कोई पास जाता है तो धमकाती है झिडकी देती है.

(महाराजाका केकईके समीप जाना.)

अंग्रेजी वजन.

(तर्ज–दहीवालीका तौर दिखाना.)

राजा–अलबेली छैल सुन्दरी खोलो आंखें जरा मतवारी।
रानी–जावो जावो सय्यां मत गहो बय्यां ॥
राजा–रही क्यों रिसा मोहे तू सुना ।
रानी–छूवो छूवो न पिया मोरी सारी ॥

राजा–अलबेली छैलसुंदरी खोलो आंखें जरा मतवारी ॥

रानी–जिया घबरावे कछू न सुहावे ।
हट पिया जा मोहे न सता ॥

राजा–उठो बैठो मेरी प्रिय प्यारी ।
अलबेली छैल सुंदरी खोलो आंखें जरा मतवारी॥
मृगपतिनैनी कोकिलबैनी ।
मोहे तू सुना बतियां बता ॥
प्रिय नैनोंसे क्यों नीर जारी अलबेली छैल सुंदरी ॥

ठुमरी खम्माच ।

(तर्ज–एक दो तीन चार.)

रानी–जावो जावो जी पिया मेरा फूको न जिया ।
नहीं मानूंगी मानूंगी मैं तुम्हरी बात ॥
तुम सौतपे जावो हर्ष मनावो ।
मोरे काहेको आवो मत छूवो मोरा गात ॥

राजा–प्यारी मैं चकोर मुख चन्द्र तोर ।
तोहे देख दुखित मोहे कछू न सुहात ॥

रानी–जावो जावो जी पिया मेरा फूको न जिया ।
झूठी बतियां बनावो सय्यां मोको रिझावो ॥
मोहे काहेको जलावो मत लावो मोरे हाथ ॥

राजा–प्यारी विधुवदनी, मृगनैनी, गजगामिनी ! अपने कोपका कारण बता, इतनी न रिसा, हां यह तो सुना

तुम्हारा कंवलरूपी मुखारविंद आज क्यों कुमलाया है ? किस कारण भूमिपर गिराया है ?

रानी—बस महाराज ! बय्यां न गहो, कृपा करो, जाओ, किसीके संग आनन्द मनाओ, मेरे पास बैठकर अपना जी न जलाओ, मुझको न सताओ, मैं तो जिंदगीसे बेजार हूं, मरनेको तैय्यार हूं. हुई हूं तंग मैं जीनेसे, अब तो उठा ले जल्द अब मालिक तू मुझको.

नकिा भूमिपर गिरना, महाराजाका उठाना.)

राजा—आह प्यारी ! क्या करती हो ? क्यों जी जलाती हो ? कंवलनैनोंसे जल धार बहाती हो, चन्द्रमारूपी मुखारविंद मेघरूपी काजलमें छुपाती हो.

रानी—बस महाराज ! क्यों बातें बनाते हो ? हँसी उडाते हो. जो यह मुख चन्द्ररूपी होता तो यह दिनही क्यों देखना ...नी तो वह है जिसपर मोहित हो रहे हो, जिसको सरवस तन मन धन अर्पण कर चुके हैं.

राजा—प्राणप्यारी ! मैं नहीं समझता हूं बातें तुम्हारी, ...में क्या समाया है, जरूर तुमको किसीने बहकाया है.

रानी—महाराज ! कौन है जो मुझको बहका दे, झूठ भडका दे, मैं भली प्रकार जानती हूं, सब कुछ पहचानती हूं कि अब

तुमको मुझसे प्रीति नहीं रही है, किसीकी भोलीभाली सूरत मनमें बस गई है.

राजा–वाह क्या करती हो ? कैसी तोहमत धरती हो ? भला यह तुम किस प्रकार कहती हो कि अब मुझको तुमसे प्रीति नहीं रही है, किसी औरसे मोहब्बत कर लई है ?

रानी–जो तुम्हारा दिल मुझसे नहीं फिरा है तो उसका कारण क्या है ?

दोहरा–आप थाप.

दो वर देने थे किये, मोइ न अबलग दीन ।
और करूं क्या आप मैं, सुन राजन परवीन ॥

राजा–भूल गया था प्यारी मैं. याद रहे मोहे नांह ।
दोईके चार लिय मांग लो, जो रुचि हो मनमांह ॥

रानी–धन्य धन्य तो हे भूपमुनि, धन्य प्राण आधार ।
शपथ करो प्रिय रामकी, तो मांगूं भर्तार ॥

राजा–रामचन्द्रकर शपथ मोहे, सुन भामिन मृगनैन ।
जो रुचि हो सो माग लो, कहो पियारी बैन ॥

रानी–मांगू एक वर नाथ मैं, सुन मेरे सिरताज ।
वर्ष चार दस बन बसें, रामचन्द्र महाराज ॥
वर दूसर दो यह मोहे, भरत होंय युवराज ।
सत्यसिंधु तुम प्राणपति, रघुकुलके सिरताज ॥

राजा–हैं हैं प्यारी ! यह क्या कह रही हो कैसी सी कर रही हो ?

रानी—महाराज! हँसी नहीं करती हूं सत्य कहती हूं. अपने वचनोंसे फिर जाओ, धर्मसे गिर जाओ.

राजा— दोहा.

भरत करूं युवराज मैं, सुन संशय कुछ नांह।
बर पहला पुनि हे प्रिये, मांग समझ मनमांह॥

मैं भरतको अवश्य युवराज बनाऊंगा, प्रात होतेही दूत पठाऊंगा, परन्तु यह बता कि रामको किस कारण वनवास देती है? कैसा अनर्थ करती है? याद रख जो राम वनमें जावेगा तो मेरा प्राणभी इस शरीरमें नहीं रहने पावेगा.

रानी—मैं इन चालोंमें नहीं आऊंगी, कौशल्याको भली प्रकार दिन दिखाऊंगी, या तो वचनोंका पालन करो, नहीं तो महाराज असत्यवादी बनो.

(राजाका भूमीपर गिरना.)

अंग्रेजी वजन धुनधुंधरा ताल कवाली.

(तर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू कर कर देख.)

ऐयारी यह मक्कारी किसको तुम सिखलाते हो।
मीठी मीठी करके बातें क्यों मुझको फुसलाते हो॥
मैं नहीं ऐसी डरनेवाली दहशत क्या दिखलाते हो।
कैसी धोखाबाजी करते कुछभी नहीं शरमाते हो॥
जरा इस तर्फको ध्यान अब कीजे शाह जहां।
सुन लो लगाके कान कहे चाहे सब जहां॥

मानूं न मैं जिन्हार करते हो क्यों इसरार ।
कहते हो क्या हरबार मुझको बहकाते हो ॥

गजल घुनजिला बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज—गमसे जिगर है जलना नैनोंसे नीर जारी.)

राजा—था वैर किस जनमका, मुझसे तेरा ऐ भामिन ।
जो बनके भार्या अब, बदला लिया ऐ पापन ॥
प्रिय राम प्यारे आवो, मैं क्या करूं बतावो ।
कटती नहीं है हाये, वैरन हुई है यामिन ॥
मिटता नहीं मिटाये, कर्मोंका लेख हाये ।
मुझको न मुंह दिखा तू, हट दूर बैठ नागन ॥

(राजाका मूर्च्छित भूमिपर गिरना.)

सीन नं. ८.

(सम्पूर्ण प्रजावासियोंका सभामें आनन्द मनाना.)

लावनी कवाली.

(तर्ज—खिली हरजा फुलवारी है.)

…वासी—
जगत आनन्द है छाया, विधाता दिन यह दिखलाया ॥
सीतापति श्रीरामजी, दीनानाथ दयाल ।
सुररञ्जन भञ्जन असुर, दुष्ट दलन किरपाल ॥
बनें रघुकुकके अब राया, जगत आनन्द है छाया ॥
श्याम घटा श्रीरामजी, दामिन जनककुमार ।
नित नव बरषो वारि सुख, धन्य धन्य करतार ॥

प्रजाने जनमफल पाया, जगत आनन्द है छाया॥
हेमसिंहासन मुदितमन, शोभित हो सिय राम।
विधना कीन्ह सहाय अब, पूरे सब मन काम॥
मनोरथवृक्ष फल लाया, जगत आनन्द है छाया॥

वसिष्ठजी— दोहरा.

प्रातकाल नित उठत हैं, रघुकुलपति रघुराज।
आये अजहुँ न भूप मन, क्या कारण है आज॥
प्रिय सुमन्त परवीन तुम, नृपमंदिरमें जाय।
सोवत होंगे जगतपती, आनहु वेग बुलाय॥

(सुमन्तका दण्डवत् करके चलना.)

सीन नं. ९.

(सुमन्तका केकईके घरमें प्रवेश करना और महाराजाको [illegible]त विलोक विस्मित खडा हो जाना.)

दोहा.

परी न राजहिं नींद निशि, हेतु न जानहुँ तात।
[illegible]सिय राम कह, सकल बिताई रात॥
[illegible] तुम वेग अब, आनहु राम बुलाय।
सोइ बूझेगा मर्म सब, सचिव न वार लगाय॥

(सुमन्तका चकित होकर चलना.)

सीन नं. १०.

(श्रीरामचन्द्रजीका राजभवनमें शयन करना और श्रीजनक-नन्दिनीका महाराजको जगाना.)

ठुमरी.

(तर्ज-राम स्वामी जगतपती दीनके आधार हो.)

जानकीजी-

दीनबन्धु दीनानाथ जागिये कृपानिधान ।
निशा गई प्रभात भई तारागण मलीनमन,
चन्द्र दुखित ज्योतिरहित देखिये उग्यो है भान ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका जागना, जानकीका दण्डवत् करना.)

जानकीजी-महाराज! सुमन्तजी द्वारपर आये हैं, आप श्रीमहाराजाने माता केकईके भवनमें बुलाये हैं.

रामचन्द्रजी-अच्छा प्रिये! मैं जाता हूं, पिताजीके दर्शन जाता हूं.

(महाराजका चलना.)

सीन नं. ११.

(श्रीरामचन्द्रमहाराजका केकईके भवनमें प्रवेश करना और महाराजाको मूर्च्छित देखकर माता केकईको दण्डवत् करना.)

रामचन्द्रजी- दोहा.

हाथ जोड विनती करूं, कोहि कारण प्रिय मात ।
तन विवरण मूर्च्छित विकल, अवधपती मम तात ॥

केकई-हे राम! कारण तो यह है कि राजाको तुमपर परम स्नेह है, राजाने मुझको दो वरदान देने किये थे, आज जो मुझको भाये सो मांग लिये, सो पिताका कष्ट दूर करना चाहो तो मुनिवेष धारण करके वनमें जाओ. भरतको युवराज बनाओ, विलम्ब न लगाओ.

रामचंद्रजी–हे माता! वनगवनमें तो मेरा अति कल्याण है, क्योंकि वहां तो ऋषिमुनियोंका स्थान है कि जिनके दर्शनसे पापोंका नाश होता है, परलोकका पंथ संवरता है. भरत जो मुझे प्राणोंसे प्यारे हैं, मेरी आंखोंके तारे हैं, बडे बुद्धिमान् हैं, तेजबलके निधान हैं, अतिचतुराईसे राज करेंगे, प्रजाको आनन्द देंगे, परन्तु हे माता! मुझको विश्वास नहीं आता कि पिताजी इस तुच्छ बातके कारण दुःखित हो रहे हैं, मूर्च्छित अवनीपै सो रहे हैं, अवश्य मुझसे कोई भारी अपराध हुआ है, जो माताजी! तुमने नहीं बताया है, इस कारण मैं अपनी सौगन्ध दिवाता हूं, चरणोंमें सीस निवाता हूं, कृपा करके सम्पूर्ण वृत्तांत सुनाओ, मेरा संदेह मिटाओ.

केकई–हे पुत्र! मैं तुम्हारी शपथ और भरतकी आन करती हूं, और तो कोई हेतु नहीं जानती हूं, परन्तु यह बार बार समझती हूं कि अवश्य पिताके वचनोंका पालन करना, लोकोंमें असत्यवादी न बनाना.

(रामचन्द्रजीका पिताको दण्डवत करना.)

रामचन्द्रजी–पिताजी! चिन्ता त्यागन करो, आनन्द-मग्न धर्मका पालन करो, मैं अपनी जननीसे मिल आता हूं, चरणोंमें सीस निवाता हूं, और आनन्दयुत वनगवन करता हूं.

सीन नं. १२.

(माता कौशल्याका श्रीजानकीजीसहित राजभवनमें पार्वती-जीका पूजन करना.)

कौशल्या- **चौपाई.**

गणपतमात गिरीशकुमारी। शिवशंकरअर्धंगी प्यारी ॥
महिमा अपरंपार तुम्हारी। मोहित हैं सब नर औ नारी ॥
जीव चराचर पालनहारी। सकल विश्वकी तू रखवारी ॥
पूरी मन अभिलाष हमारी। धन्य धन्य प्रजेशकुमारी ॥

(श्रीरामचंद्रजीका सचिवपुत्रसहित आकर माताजीको दंडवत् करना.)

कौशल्याजी—हे पुत्र! राजकाजमें तो बहुत समय लगेगा, तुम्हारा कोमल वदन क्षुधासे कुमला जावेगा, इस कारण कुछ मधुर भोजन खाओ फिर अपने पिताके समीप जाओ.

रामचंद्रजी—माताजी! पिताने आज मुझको वनका राज्य दिया है, अति अनुग्रह किया है, प्रियजननी! आनन्दमन आज्ञा दो, कुछ चिन्ता न करो.

कौशल्या—हाय पुत्र! यह क्या सुनाया किस अपराधका यह दंड पाया ?

सचिवपुत्र—माताजी! पापन केकईने यह दुष्ट कर्म किया है, राजासे यह वर मांग लिया है कि भरतजी तो युवराजपदवी पावे और श्रीरामचंद्रजी चौदह वर्ष वनमें वास बनावें.

गजल.

(तर्ज—हाथमें लेके जाम गदाई शाम सबेरे फिरते हैं.)

कौशल्या-

बैरन पापन ऐ कलहारी कबका बदला तूने लिया।

क्या यह समाई कुमत कमाई संकट दारुण मोहे दिया ॥
रामपियारे भूपदुलारे वनमें काह पठावत है ।
प्रजा दहेगी तोहे क्या कहेगी कैसा कठिन किया तूने हिया ॥
दिनकरकुलकर विटपकुठारी केकई पापन हत्यारी ।
आह करातन मंद अभागन काहे सतावे मेरा जिया ॥

रामचंद्रजी—

चिन्ता त्यागो धीरज धारो काहे जीव जलावत हो ।
कर्म लिखाया सो फल पाया, क्यों तुम नीर बहावत हो॥
यह संसारा मोह अँधियारा, जीव भ्रमत नित डोलत है ।
लेख विधाता मिटत न माता, किसको दोष लगावत हो ॥

कौशल्या—आह पापन केकई ! क्या किया, किस जन्मका सौत बनके बदला लिया ? राम जैसे प्यारे पुत्रको वनवास [illegible] पिया ! तुमनेभी कुछ न विचार किया कुमतिको [illegible]।

रामचंद्रजी—माताजी ! कर्मगति अति बलवान है, मेरा [illegible] प्रकार कल्याण है, चिन्ता त्यागो आनंदमन [illegible]

कौशल्या—हाय क्या करूं ? जो आज्ञा न दूं तो कुलको दाग लगेगा, राजा असत्यवादी बनेगा, जो वनगवन करनेको कहूं तो आह मैं किस प्रकार तुम्हारा वियोग सहूं (कुछ सोच-कर) जिस प्रकार बनेगा चौदह वर्ष बिताऊंगी, पतिको सत्य-

खे विमुख न बनाऊंगी; हे पुत्र आनन्दमन वनमें जाओ।
वेमणके दर्शन पाओ, अपना जन्म सफल बनाओ.

(श्रीजानकीजीका माता कौशल्याजीको दण्डवत् करना.)

ठुमरी.

(तर्ज—यह जग है गोरखधंदा.)

नकीजी—

मैं प्राणनाथ संग जाऊं, जो आयसु माता पाऊं।
मोहे अवध न अब प्रिय लागे, मन पतिचरण अनुरागी।
कर जोरूं विनय सुनाऊं, मैं प्राणनाथ संग जाऊं॥
वन आनन्द मंगलदाता, नहीं कष्ट मोहे कुछ माता।
पतिसेवामें मन लाऊं, मैं प्राणनाथ संग जाऊं॥

शल्या—

विधि कैसी विपता डारी, मैं आज हुई भै मारी।
सुन रघुकुलके सुखदाई, मैं कौन अब करूं उपाई॥
चहे संग चलन वन प्यारी, प्रिय जनकसुता सुकुमारी॥
सिय बसे विपिन केहि भांती, कपिचित्र लिखतसे डराती।
मैं कनकवेल इव लाली, सींचा स्नेहके बारी॥

मचंद्रजी—

सुन कमलनैन प्रिय प्यारी, वन विपत कष्ट अति भारी॥
निश्चर वन घोर फिरत हैं, नाना उत्पात करत हैं।
कहैं निराहार सुरआरी, सुन कमलनैन सुकुमारी॥
लागे पहाडकर पानी, नहीं जावे विपत बखानी।

तुम चंद्रवदन सुकुमारी, वन विपत कष्ट अति भारी ॥
निशि सोवत डांस सतावें, नित कंद मूल फल खावें ।
वन गहन मिले नहीं वारी, सुन कमलनयन सुकुमारी ॥
मग कांकर कंटक नाना, नहीं असन वसन पदत्राणा ।
रहें भालु कराल भयकारी, वन विपत कष्ट अति भारी ॥

जानकीजी—

पति अवध न मोहे सुहावे, कानन मोको अति भावे ।
जहां बसें मुनी संन्यासी, संग प्राणनाथ सुखरासी ॥
सोचो को मोहे सतावे, पति अवध न मोहे सुहावे ॥
बहे शीतल मंद बयारी, सब रोग नशावनहारी ।
पुष्पनकी सुगंधी आवे, कानन मोको अति भावे ॥
जहां बहे श्रीगंगाजी, रहें शिवशंकर कैलासी ।
दर्शनसे पातक जावे, कानन मोको अति भावे ॥

रामचन्द्रजी—देखो प्रिया ! मार्ग अति कठिन है, उसका नाम वन है, जिसमें अनेक प्रकारके भयंकर निशिचर वास [illegible]के भयसे तपश्वरी डरते हैं, जो स्त्रियोंको दुराचरणा ले जाते हैं, मनुष्योंको जहां कहीं देख पाते हैं, भक्षण कर जाते हैं.

जानकीजी—मार्ग तो प्राणनाथके संग कोमल बन जावेगा, कोई दुष्ट मुझको नहीं सतावेगा, आपकी प्रभुताईसे भय खावेग, मेरे सन्मुख नहा आवेगा.

रामचन्द्रजी—वनमें वस्त्र आदिक कुछ नहीं मिलेगा, टोंमें शयन करना पडेगा.

जानकीजी—कुशाकी सुन्दर साथरी बनाऊंगी, उसपर मल पुष्प बिछाऊंगी, आपके चरणकमल दबाऊंगी, पानन्द मनाऊंगी.

रामचन्द्रजी—वनमें अन्नादिक भोजन नहीं पाओगी, धासे व्याकुल हो जाओगी.

जानकीजी—वृक्षोंमें मधुर फल फूल लगे हैं, जो छत्तीस कारके भोजनसे भले हैं.

रामचन्द्रजी—महावन देखके भय खाओगी, कोई संगी हेली नहीं पाओगी, किससे जी बहलाओगी, किस प्रकार चौदह वर्ष बिताओगी.

जानकीजी—प्राणपतिके सङ्ग भय नहीं खाऊंगी, आपकी चरणसेवामें मन लगाऊंगी, मुनियोंकी स्त्रियोंके दर्शन पाऊंगी, आनन्दमन दिवस बिताऊंगी, जो सङ्ग नहीं ले जावोगे तो प्राण गँवाऊंगी, पतिवियोगका कष्ट नहीं उठाऊंगी.

रामचंद्रजी—अच्छा प्रिये ! विवाद न करो मेरे सङ्ग चलो.

(श्रीजानकीजीका कौशल्याके चरणमें दण्डवत् करना.)

जानकीजी—हे माता ! सेवाके समय दैवने वनवास दिया, मेरे मनोरथको सफल नहीं किया, सो कृपा करो, मेरा यह अपराध क्षमा करो, जब चौदह वर्ष बिताकर आऊंगी, तो आपकी चरणसेवामें मन लगाऊंगी.

कौशल्याजी— **दोहा.**

जबलग रवि शशि गगनमें, तबलग रहो अहिवात ।
करो मगन वन गमन अब, पार न होय बसात ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका भार्यासहित माताजीकी आज्ञा पाकर वनगमन करना, कौशल्याजीका भूमिपर गिरना.)

सीन नं० ११.

(श्रीरामचन्द्रजीका जनकनन्दिनीसहित केकईके भवनको चलना, मार्गमें लक्ष्मणजीका मिलना.)

लक्ष्मणजी—हे सच्चिदानन्द निर्विकार ! तेरी लीला अपार है कि जिसके वशमें सब संसार है, मनुष्य दैवगतिभी पहचान सकता है, परन्तु त्रियाके चरित्रोंको नहीं जान सकता है.

रामचन्द्रजी—भाई ! धैर्य धरो, कोई ऐसा उपाय करो जिससे पिताजी कष्ट न पावें, मेरे वियोगमें प्राण न गँवावें.

[illegible]—महाराज ! मेरे तो भ्राता पिता सर्वस्व हित- [illegible] हैं खरारी, महाराज ! मैं तो वनमें सङ्ग जाऊंगा, आपके विना अयोध्यामें क्या बनाऊंगा ?

[illegible]—भाई ! जो मैं तुमको सङ्ग ले जाऊंगा तो अयोध्या अनाथ हो जावेगी, प्रजा अनेक प्रकारसे कष्ट उठावेगी, क्योंकि भरत शत्रुघ्न तो ननिहाल हैं और महाराजा मेरे विरहमें विकल हैं, जिस राजाकी प्रजा दुःख पाती है, उस नृपतिका सम्पूर्ण सुकृत नाश हो जाता है, इस कारण तुम अयोध्यामें रहो, सबको धैर्य दो.

लक्ष्मणजी—महाराज ! मैं किसीको नहीं जानता हूं, मैं तो आपकोही अपना हितकारी मानता हूं, जो आपही त्यागोगे तो कहां जाऊंगा ? किसके चरणमें सिर निवाऊंगा ?

(लक्ष्मणजीका चरणमें दण्डवत् करना, महाराजका लक्ष्मणजीको कण्ठ लगाना.)

रामचन्द्रजी—अच्छा प्रियबन्धु ! विलम्ब न लगाओ, अपनी जननीसे आज्ञा ले आओ.

लक्ष्मणजी—महाराज ! आज्ञा ले आया हूं. मातानेही वनमें आपकी चरणसेवाके निमित्त पठाया हूं.

रामचन्द्रजी—चलो पिताजीके दर्शन कर आवें. चरणमें सीस निवा आवें.

सीन नं. १४.

(प्रजाकी स्त्रियोंका राजभवनमें केकइको उपदेश करना.)

गजल.

(तर्ज—अच्छे पिया याही देश बुला ले बनमें जी बबरावत है.)

ग्रामकी स्त्री—

सुमुखि सयानी केकईरानी रामको वन क्यों पठावत हो।
भूप दहे है कष्ट सहे है क्यों तुम जीव जलावत हो ॥
राम जो वन चले परजा मरे रो रो सारी।
काहे उत्पात करो सोचो जरा देखो प्यारी ॥
राव व्याकुल हैं निरख नीर हैं नैनों जारी।

असित अवनीमें परे देख तू प्यारी वारी ॥
मृगवातिनैनी कोकिलबैनी हमको काहे सतावत हो।
सुमुखि सयानी केकईरानी रामको वन क्यों पठावत हो॥

केकई—बस मुझको न सताओ, चली जाओ, मेरे भवनमें क्यों आई हो? किसने बुलाई हो?

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबन्धु और भार्यासहित आकर महाराजाको दण्डवत् करना.)

रामचन्द्रजी—पिताजी धैर्य धरो, नैन उघारो, हमको आज्ञा दो, चिन्ता त्यागन करो.

(केकईका मुनिवस्त्र लाकर रामचन्द्रजीको देना.)

केकई—हे राम! राजा अपने प्राणोंको तो त्यागन कर देगा. परन्तु अपने मुखारविंदसे तुमको वनगमनको नहीं [illegible] है कि अब सब भूषण वसन उतार दो, यह मुनिवस्त्र धारण कर लो.

([illegible]जीका प्रियबन्धु और भार्यासहित राजेश्वरी शृंगार [illegible] मुनिवस्त्र धारण करना, महाराजाका श्रीजनकनन्दिनीको गोदीमें बिठाकर शिक्षा देना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कव्वाली.

(तर्ज—यह न थी हमारी किसमत कि तू नेककार होता.)

राजा—वैदेही जानकी सुन, मोहे प्राणसे तू प्यारी।
गम्भीर वन कठिन है, मेरी लाडली दुलारी॥
निश्चर फिरैं भयंकर चिंघारें घोर करवर।

सुनकरके नाद केहर, डरपै हैं धीर धारी ॥
वनमें बसैं किरातन, पुत्री फिरै हैं डाकन ।
तुम वय किशोर लाली, महेलोंके रहनेहारी ॥
वनमें न हाय जावो, विपताके दिन बितावो ।
पितुगेह रहो या मोपै, रुचि हो जहां तुम्हारी ॥

जानकीजी—पिताजी ! आपकी कृपासे वन आनन्ददायक बनेगा, किसी प्रकारकी व्याधी नहीं करेगा.

(श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी और जानकीजीका वनगमन करना, महाराजाका मूर्च्छित पृथ्वीपर गिरना.)

ठुमरी.

(तर्ज—चले सिया राम लषण वनको.)

जा—चलो वन सङ्ग राम भाई, अवध भई बैरन दुखदाई ।
अह आभागिन केकई, काह कुमति यह कीन्ह ।
जो रघुनन्दन जानकि कहँ, सुख अवसर दुख दीन्ह ॥
विकल हैं रघुकुलके राई, चलो वन सङ्ग रामभाई ॥
राम लषण रघुकुलतिलक, शील स्नेहनिधान ।
त्याग चले अब अवधके, राई काह कीन्ह भगवान ॥
चली वन हाय जनकजाई, चलो वन संग रामभाई ॥

(सम्पूर्ण प्रजावासियोंका महाराजके संग चलना.)

राजा—(सुमन्तसे) हाय सुमन्त राम ! लक्ष्मण तो वनमें चले गये और मेरे प्राण शरीरमें रह गये, हाय मंदमति इससे कठिन कौन क्लेश पडेगा जिससे प्राण तजेगा.

सुमन्त–महाराज! आप तो बुद्धिमान् हैं, सम्पूर्ण सुकृतीकी खान हैं, धीरज धारण करो, परमात्माका ध्यान धरो, ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, आपका तो सदा कल्याण है.

राजा–सुमन्त! तुम शीघ्रही रथ लेकर जाओ, बिनती करके जनकनन्दिनीसहित राम लक्ष्मणको यान चढाओ, वन दिखराके सुरसरीमें स्नान कराओ, अपने संग अयोध्यामें ले आओ, जो कदापि दोनों भाई न आवें, वनमेंही जावें तो हे सखा! तुम कोई उचित उपाय करना, जिस प्रकार बने जनकनन्दिनीको अवश्य लाना.

(सुमन्तका दंडवत् करके चलना.)

राजा–देखो सुमन्त! जिस समय गम्भीर वन आवे और जनकदुलारी भय खावे, तुम उस समय वनके क्लेश वर्णन करना, मेरी ओरसे यह कहना हे पुत्री! अयोध्याको फिरो, [illegible]ना! जो जानकीभी न आवेगी, वनमें जावेगी [illegible] शरीरमें नहीं रहेंगे, अवश्य पयान करेंगे.

सुमन्त–महाराज! धीरज धरो, श्रीरामचंद्रजीको कुशल- [illegible] आपकी सब चिन्ता मिटाऊंगा.

(सुमन्तका दंडवत् करके रथसहित चलना.)

सीन नं. १५.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रजावासियोंको धीरज देना.)

रामचंद्रजी–प्रिय प्रजावासियो! तुम अयोध्यामें जाओ,

पिताजीको धीरज बंधाओ, मेरे वियोगमें नैनोंसे नीर न बहाओ, मैं चौदह वर्ष बिताऊंगा, तुमको आनन्दपूर्वक कंठ लगाऊंगा.

प्रजावासी—महाराज ! हम तो अयोध्यामें नहीं जावेंगे. आपके संग वनमें वास बनावेंगे, चौदह वर्ष काननमें बितावेंगे, नगरमें जाकर कौनसा सुख पावेंगे. आपके वियोगमें नीर बहावेंगे, अन्तमें प्राण गँवावेंगे.

(सुमन्तजीका रथसहित आना.)

सुमन्त—महाराज ! प्रजावासी इस प्रकार नहीं फिरेंगे, सब आपके साथ चलेंगे, उचित है कि रथमें विराज जाओ, अश्वोंको पवनवेगी चलाओ.

(श्रीरामचन्द्रजीका बंधु और भार्यासहित रथमें विराजमान होना.)

रामचन्द्रजी—देखो मेरा हितकारी वह कहावेगा जो अयोध्यामें जावेगा, ऐसा उपाय बनावेगा, जिससे पिताजी आनन्द पावें, मेरे वियोगमें कष्ट न उठावें.

(रथका पवनवेगी चलना और महाराजका सबको छोड-कर अदृष्ट हो जाना.)

प्रजावासी—हाय महाराज तो वनमें चले गये, हम सब अयोध्यामें रह गये, अब कौन उपाय बनावें, किस प्रकार श्रीरामचंद्रजी महाराजके दर्शन पावें.

(सबका विकल होकर भूमिपर गिरना.)

सीन नं. १६.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबंधु और भार्यासहित सुरसरीके तीर पूजन करना.)

प्रार्थना श्रीगंगाजीकी।

जानकीजी—

क्या सुन्दर नीर निर्मल है सकल दुख पाप अघहारी।
श्रीगंगे श्रीमाता तूही है मोक्षकी दाता।
विराजे शीस शिवशंकर अमित महिमा है महतारी॥
भागीरथी नाम अति पावन मुनिजन संतमन भावन।
सकल कलिमल कलुष भंजन दलन संताप तो बारी॥

(निषादका महाराजके सन्मुख भेट धरके दंडवत् करना.)

निषाद्—अहोभाग्य हैं महाराज! जो आपने चरणकमल फेरकर इस भूमिको पवित्र किया, मुझसे खल अधमको दर्शन दिया.

(महाराजका निषादको कंठ लगाना.)

[illegible]ी—हे सखा! मैं भूषण वसन अंगमें नहीं सजा- [illegible] अन्न आदिक भोजन खाऊंगा.

निषाद्—महाराज! कृपा करके ग्राममें पग धारो, इस [illegible] और निहारो.

रामचन्द्रजी—सखा! मैं किसी ग्राम देशमें नहीं जाऊंगा. चौदह वर्ष वनमें बिताऊंगा, कृपाकरके नौका मंगा दो, श्रीगंगाजीसे पार लंघादो.

सुमन्त—महाराज! कौशलनाथने यह आज्ञा दी थी कि थ लेकर संग जाओ और श्रीगंगाजीमें स्नान कराके अयोध्यामें ले आओ.

रामचन्द्रजी—आप पिताके समान हो और बुद्धिमान् हो, मुझको उचित शिक्षा दो ऐसा उपाय करो जिससे कीर्तिरूपी चन्द्रमामें कलंक न लगे और दिन दिन दूना प्रकाश करे, चौदह वर्ष अयोध्यामें नहीं जाऊंगा, आपके प्रतापसे वनमें आनन्द मनाऊंगा, पिताजीको सब प्रकार धीर्य देना, चरण पकडकर मेरी ओरसे विनय करना, परमात्माका ध्यान धरें, आनन्दमन सत्यव्रतका पालन करें. प्रिय निषाद! विलम्ब न लगाओ नैय्या मंगाओ.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबन्धु और भार्यासहित नौकामें विराजमान होना.)

सुमन्त—हाय क्या करूं, कौन उपाय बताऊं, किस प्रकार अयोध्यामें जाऊं, महाराजको क्या मुख दिखलाऊं, उचित है कि श्रीगंगाजीके तीर प्राण गँवाऊं.

(सुमन्तका भूमिमें मूर्छित गिरना.)

सीन नं. १७.

(श्रीमान् राजा दशरथजीका कौशल्याके भवनमें मलिनमन बैठना.)

राजा—प्रिय कौशल्या!

रानी—महाराज !

राजा—मेरे प्राणपियारे नैनोंके उजियारे नहीं आये. सुमन्तने बहुत दिव ि ये.

रानी— दोहा ।

सत्यसिंधु रघुकुलकमल, धीरज धरो नरेश ।
दिवस जात नहिं बार कछु, त्यागहु नाथ कलेश ॥

पति ! देखो शिवि दधीचिन सत्यके कारण अनेक प्रकारसे संकट सहे, जो धर्मपर सावधान रहे तो अंतमें आनन्दही प्राप्त हो गये.

राजा— दोहा ।

कानन योग कि घोर सुन, जनकसुता सुकुमार ।
विधिगति वाम कठोर अति, का कीन्ह करतार ॥

आह प्रिय रामका वियोग किस प्रकार सहूं उचित है कि

रानी— दोहा ।

धर्मधुरंधर भूपसुन, धीर धरो भरतार ।
सिय आ मिलें, दिवस जात नहिं बार ॥

हे प्राणनाथ ! विचार करो, धीरज धरो, देखो चौदह वर्ष शीघ्रही बीत जावेंगे, राम लषण जानकी आनन्दयुक्त आवेंगे.

राजा—हाये तो रामचन्द्र चौदह वर्षमें आवेंगे और मेरे प्राण इस शरीरमें रह जावेंगे.

(राजाका विकल होकर भूमिमें गिरना, कौशल्याजीका उठाना.)

रानी–हाय प्राणनाथ! क्या करते हो? यह तो बताओ मुझको किसके आसरेपर छोडते हो.

राजा– दोहा।

राज देन कह दीन्ह वन, तदपि न हृदय मलान।
सो सुत बिछडे जिवतहूं, अधम को मोह समान॥

आह मंदमति रामको राजके बदले वन दिया ऐसा कठोर हृदय किया.

कौशल्या–महाराज! कर्मगति अति बलवान् है, तुम्हारा किधर ध्यान है?

राजा–प्रिय कौशल्या! अब मैं इस अधम शरीरको त्यागन करता हूं, इस कारण तुमको एक गुप्त भेद बताता हूं, मैं एक समय चतुरंगिनी सेनासहित मृगया कारण वनमें गया था, और रात्रीको एक सरोवरके निकट विश्राम किया था निशाके समय सरवननामी पितुभक्तने उस सरोवरसे जल लिया था और मैंने उसको मृग जानकर वध किया था. उसके अंधे माता पिताने पुत्रके वियोगमें योगअग्निसे शरीरको भस्म कर दिया था और मरते समय मुझको यह शाप दिया था कि राजा तूभी पुत्रवियोग सहेगा और हमारी नाईं प्राण त्यागन करेगा. प्रिय कौशल्या वह समय तो आ गया है परंतु प्राण शरीरमें रह गया राम राम हा राम प्रिय राम राम हा राम.

(राजाका स्वर्गवास होना.)

गजल धुन सोहनी।

(तर्ज–मरहबा ऐ आशिके सादिक हमारे मरहबा.)

कौशल्या–

उठ जाग पीतम खोल अंखियां नींद किस सोवो पिया।

सोचूं मैं क्या जाऊं कहां व्याकुल पति मेरा जिया ॥

पुत्र तो वनको गये पति हाय दुनियासे चले।

मैं ना मरी दुख सह रही कैसा कठिन मेरा हिया ॥

मेरे राम प्यारे पुत्र आ पिता देख तेरा चल बसा।

अब क्या मेरा जीतब रहा विधि वाम हाये क्या किया ॥

(वसिष्ठजीका ज्ञानउपदेश करना.)

वसिष्ठजी–सदा न थिर कोई रहा, देखो हृदयविचार।

निशारूप प्रपंच यह, नाशमान संसार ॥

हे कौशल्या! देखो सगर, भगीरथ, दिलीप जैसेभी सदा न रहे, कालने भक्षण कर लिये, जो दुनियामें आया है सो गया है हे कौशल्या! शोक त्यागन करो, ईश्वरका ध्यान धरो, [illegible] तुम शीघ्रही धावन पठाओ, भरतको बुलाओ, [illegible] वाओ, राजाके शरीरको यत्नपूर्वक उसमें रखवाओ.

[illegible]–गुरुजी! मैं जाता हूं, शीघ्रही भरतजीको लाता हूं.

[illegible] भरतको कोई समाचार न सुनाना, केवल यह कहना कि एक कठिन कारण पडा है. गुरुने तुमको बुलाया है.

(धावनका दण्डवत् करना.)

सीन नं. १८.

(भरतजीका केकयदेशके राजभवनमें मलिनमन बैठना.)

भरतजी–नैनोंसे क्यों नीर हाय आता है, हा विधाता दिल क्यों बैठा जाता है. दृष्ट आये स्वप्नमें मुझको पिता, अङ्ग भी है बाम मेरा फरकना, क्या है कारण कुछ समझ आता नहीं, जी उचाटी है न दिल लगना कहीं.

(अयोध्यापुरीके धावनका आकर दण्डवत् करना.)

भरतजी–प्रिय हरकारा ! तुम किस प्रकार आये हो, क्या पिताजीने पठाये हो.

धावन–महाराज ! गुरुजीने पठाया हूं, आपको सङ्ग ले जानेके निमित्त आया हूं.

भरतजी–यह तो बताओ मेरा संदेह मिटाओ कि मेरे प्रियबन्धु आनन्दयुत है ?

धावन–हां महाराज ! विलम्ब न लगाओ, शीघ्रही गवनकी ठहरावो, जिस प्रकार बने पवनवेगी अयोध्यामें जाओ. कोई कठिन कारण पडा है गुरुजीने आपको याद किया है.

(भरतजीका धावनसहित अयोध्याको गमन करना.)

सीन नं. १९.

(केकईका मन्थरासहित राजभवनमें बैठना.)

केकई–प्रिय मन्थरा ! यह क्या हो गया, पति तो सचमुच मर गया, रामके विरहमें प्राण त्यागन कर गया.

बांदी–रानीजी ! जो दुनियामें आया है सो गया है. सदा कोई नहीं रहा, सबको कालने खाया है. महाराज तो अतिवृद्ध थे उनके तो मरनेके दिन थे, अपने पुत्रको अब राजगद्दीपर बिठाओ. आनन्द मनाओ, भूपतिमात कहाओ. (भरतजीका आना.) देखो भरतजी आ गये हैं, उनकी धीर बंधाओ.

(भरतजीका आकर माता केकईको दण्डवत् करना.)

माता–प्रिय पुत्र ! तुम्हारा मुख मलिन क्यों हो रहा है ? किस कारण नैनोंमें जल भर रहा है. शीघ्रही मेरे पितुगेहकी कुशल सुना, मेरा संदेह मिटा.

भरतजी–प्रिय जननी ! तुम्हारे पिताके तो सब प्रकार आनन्द हो रहा है. परन्तु मुझको अपने पितुगेहमें उत्पात [illegible] है. मैं देखता हूं कि सम्पूर्ण नगरमें सन्नाटा छा रहा है, मेरा जी अत्यन्त घबरा रहा है माताजी ! कृपा करके इसका कारण बताओ, पिताजीके दर्शन कराओ.

[illegible]–हे पुत्र ! तुम्हारे पिताने तो इस मृत्युलोकको त्याग किया है, सुरपुरमें निवास कर लिया है.

(भरतजीका भूमिपर विकल गिरना.)

भरतजी–हाये मैं दुनियामें वृथाही आया, अन्तसमय पिताके निकटभी न पाया.

केकई–हे पुत्र ! धीर्य धरो आनन्दमन प्रजाका पालन करो.

भरतजी–हे माता! पिताका मृत्युकी कारण तो बता, सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना.

केकई–पुत्र! विधाताने हमारी अति सहायता करी है, बेचारी मन्थराने बडी मदद दी है, मैंने राम लक्ष्मण जानकीको तो वनवास दिवा दिया है. इस कारण राजाके परलोककी कुछ ध्यान न लाओ, आनन्द मनाओ, अयोध्यापति कहावो.

भरतजी–हाये अभागिन, डंकनी, नागन, मन्दमति, करातन! तूने क्या किया, सम्पूर्ण अयोध्याको उजाड दिया. निर्लज्ज! लज्जाभी न आई कैसी कुमति कमाई. (मंथराके केश पकडकर) हत्यारी! तूने खूब की सहाई, अच्छी बुद्धि भ्रष्ट बनाई. (केकईसे) बस चांडाला मेरी आंखोंके आगेसे चली जा, अपना मुँह न दिखा, मुझको क्रोध न दिला, आह तूने पेड काटके पल्लवको सींचा, मीनके जीवनके हित वारिको उलीचा.

दोहरा।

हंसवंस मम जनम भा, राम लषणसे भ्रात।
जननी मोहे तोसी मिली, विधिसे काह बसात॥

(भरतजीका मूर्छित अवनीपर गिरना.)

सीन नं० २०.

(कौशल्याजीका राजभवनमें विलाप करना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज–गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी.)

कौशल्याजी–

विधनाने जो लिखा है मिटता नहीं मिटाये ।
पूर्व जनम किया जो सोई यह जीव पाये ॥
राम और लषण पियारे फिरते हैं मारे मारे ।
संग जानकी दुखारी पति प्राण हा गँवाये ॥
पति दाहभी पाया कर्मोंमें यह लिखाया ।
सो मूं करूं क्या आली अजहूं भरत न आये ॥

(भरतजीका आकर चरणोंमें दंडवत् करना.)

भरतजी– दोहा.

[illegible]या केकई, काह प्रगट जग कीन्ह ।
[illegible]तो वाम विधि, क्यों न बांझ कर दीन्ह ॥
सब अनर्थकर मूल जिन, कुलकलंक अघखान ।
[illegible] जन द्रोही मैं, विधिगति अति बलवान ॥

(कौशल्याजीका भरतको कंठ लगाना.)

कौशल्या–चिन्ता त्यागहु पुत्र प्रिय, धीर धरो मनमांह ।
कर्म किया सोइ फल लिया, दुख काहू कर नाह ॥

भरतजी–हे माता ! जो मनुष्य गोशालामें आग लगाते है, पराया धन चुराते हैं, माता पिताको सताते हैं, प्रिय मित्र

और महीपतिको छलसे विषपान कराते हैं, पराई स्त्रीसे रति करते हैं, क्षत्रीतन धरके संग्राममें पीठ दिखाते हैं, अबला और बालकको वध बनाते हैं और जो महापातक कहाते हैं हे माता! जो मेरी इसमें सम्मति हो तो मैं उनकी गति पाऊं, घोर नरकमें वास बनाऊं.

कौशल्याजी–हे पुत्र! जो इसमें तुम्हारी सम्मति कहेंगे वह अनेक प्रकारके कष्ट सहेंगे, जो तुमपर दोष धरेंगे वह घोर नरकमें वास करेंगे, प्रिय लाल! उठो, धीरज धरो, अपने पिताके मृतक शरीरको दाह करो.

(सुन्दर विमान बनाकर राजाके मृतक शरीरको स्मशान भूमिमें जाकर विधिपूर्वक दाह देना.)

सीन नं. २१.

(भरतजीका सम्पूर्ण प्रजावासी और वसिष्ठजीसहित माता कौशल्याके भवनमें शोकयुत विराजमान होना.)

गजल धुन विहाग.

(तर्ज–है बहारे बाग दुनिया चंद रोज.)

भरतजी–हाय पापन मात तूने क्या किया। बीज कैसा बिपतका यह बो दिया ॥ मांगते वर नागिनी रसना तेरी वज्रसेभी है कठिन तेरा हिया । थे सकल आनन्द अब दुनिया सभी किस जन्मका वैर यह तूने लिया ॥

कौशल्याजी–मेरे लाल! धीरज धरो, अपने पिताके वच-

नोंका पालन करो, प्रजावासी अति दुःखित हैं, उनका शोक हरो.

भरतजी–तो माताजी! अब मैं राजपदवी पाऊं, कीट मुकुट सजाऊं, अयोध्यानाथ कहाऊं.

कौशल्याजी–हां पुत्र! प्रजाका कष्ट मिटा, सबको धीरज बंधा.

भरतजी–माता! मेरे राज्यसे प्रजाका शोक नहीं मिटेगा, विपतरूपी वृक्षमें फल लगेगा. जो प्रजाका कष्ट मिटावो तो यह आज्ञा दो कि मैं वनमें जाऊं, श्रीरामचद्रजी महाराजसे अपना अपराध क्षमा कराऊं, विनती करके अयोध्यामें लाऊं.

वसिष्ठजी– दोहा.

धन्य धन्य मति बुद्धि तो, धन्य जन्म जग तोय ।
सुकृतरूप दशरथसुवन, काहु न गुणनिधि होय ॥

([illegible] सन्तसे)

[illegible] आनन्द बन, सजो सकल समाज ।
विनहिं देहिं मुनि राम कहँ, अवधपुरी कर राज ॥

[illegible]

धन्य भरत जग जन्म तो, को जग तोह समान ।
ग्यानउदधि परिजन सुखद, सद्गुणशील निधान ॥

(भरतजीका सब माता और सम्पूर्ण प्रजासहित वनगमन करना.)

सीन नं. २२.

(निषादका राजदरबारमें विराजमान होना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज- न रे काले देव रे ।)

रनधीर—हाथ जोड विनती करूं, चरण निवाऊं माथ ।
चित्रकोट गवने भरत, सेन अमित है साथ ॥
तरकस कटि सब वीरके, हाथ कठिन कोदंड ।
जात उतायल बाज गज, कांप रहा ब्रह्मांड ॥

बलवीर—केकइसुत है मंदमति, भरत सकल अवमूल ।
अति कठोर निर्लज्ज है, चले विश्वप्रतिकूल ॥

रनधीर—भरत संग चतुरंगिनी, सेना अमित अपार ।
राम संग प्रिय बंधु एक, और सिया सुकुमार ॥

निषाद—विषवेल कदापि अमी फल नहीं देगी, बबुलमें सदैव शूलही लगेगी, भरतके मनमें अवश्य कुचाल है, मूर्ख यह नहीं जानता कि रामचंद्रजीका स्वरूप दुष्टोंके वध करनेको भयानक काल है, मेरे शूरवीर! देखो दुनियामें सदा कोई नहीं रहा है, सबको कालने भक्षण किया है, उन पुरुषोंको धन्य है जो स्वामीके निमित्त शरीर त्यागन करते हैं, रणभूमिमें शत्रुके हाथसे मरते हैं, भाइयो! देर न लगाओ, जलदी सुरसरीके तीरपर जाओ, सम्पूर्ण नौका जलमें डुबाओ, भरतके सन्मुख होकर युद्ध करो, जीते जी श्रीगंगाजीसे पार न उतरने

दो, देखो जो मर गये तो मोक्ष पाओगे और जो भरतको जीत लिया तो शूरवीर कहाओगे.

सेना—महाराज ! आपके प्रतापसे पीछे पैर नहीं धरेंगे, पृथ्वीको रुंडमुंडसे भरेंगे, सियावर रामकी जय उच्चारण करेंगे, भरतकी सम्पूर्ण सेनाके प्राण हरेंगे.

(युद्धके बाजोंका बजना, बांई ओरसे छींकका होना.)

सुखेन—महाराज ! सगुन परीक्षा तो यह कहती है कि, भरतसे रार नहीं होगी, क्योंकि वाम अंग छींक होना यह बताता है कि भरत निष्कपट महाराजसे मिलने जाता है.

निषाद—अच्छा भेट सजाओ और तुम सब योधा श्रीसुरसरीके तीरपर जाओ जिस समय मेरा अनुशासन पाओ शीघ्रही सम्पूर्ण नौका जलमें डुबाओ और सजग होकर

नाश बनाओ.

(निषादका भेंट लेकर चलना.)

सीन नं. २३.

(भरतजीका प्रजावासियोंसाहित सुरंगवीरपुरके निकट आना.)

ठुमरी जैजैवंती.

(तर्ज—आंगनमें मत सोवे री सुंदर आजकी रैन चंद्र गहेगो ।)

भरतजी—

दोष देहूं कहुँको जगमांही मैं केवल अनरथकर मूला ।
मूढ मंद खल अधम अभागी लोक वेद श्रुतिपथप्रतिकूला ॥

मोर जन्मते राम राज तज वसत विपिन सह आतप सूला ।
धिक २ मात कहूं का तोको भई दिनकरकुल विटप बसूला ॥

(निषादका भेंट धरके दंडवत् करना.)

सुमन्त—महाराज ! यह गुहराज श्रीरामचंद्रजीका सखा है इसकी प्रीतिके कारण रघुनाथजीने प्रथम दिवस उस कुशाकी साथरीपर विश्राम किया है.

(भरतजीका आनन्द होकर निषादको कंठ लगाना और कुशाकी साथरीका प्रदक्षिणा करना और श्रीजानकीजीकी एक मस्तककी बिंदी सांथरीपरसे उठाकर भरतजीका सीसके लगाना.)

भरतजी—हे सखा ! जिस समय यह कनकबिंद श्रीजनकनन्दिनीके मस्तकपर बिराजमान थी तो सूरजकी नाई प्रकाशवान् थी आज श्रीजानकीजीके विरहमें द्युतिहीन हो रही है. देखो कैसी मलीन हो रही है. हाय महाराजके वियोगमें जड वस्तुकीभी यह दशा है, मेरा कैसा कठोर हिया है कि प्रियबंधुका वियोग सहता है, निर्दई फट क्यों नहीं जाता है ?

(भरतजीका भूमिपर गिरना, निषादका उठाना.)

निषाद—महाराज ! धीरज धरो, करुणा त्यागन करो, मैं शीघ्रही आपको सम्पूर्ण प्रजावासियोंसहित श्रीगंगाजीसे पार लंघाता हूं, चित्रकोट पर्वतपर ले जाता हूं, श्रीरघुनाथजी महाराजसे मिलाता हूं.

(भरतजीका श्रीगंगाजीसे पार उतारना.)

सीन नं. २४.

(श्रीरामचंद्रजीका चित्रकोटपर्वतपर पर्णकुटीमें शयन करना.
श्रीजनकनन्दिनीका जगाना.)

ठुमरी.

(तर्ज–वारी जाऊं जी सांवरिया तुमपर वारनाजी)

जानकीजी–

जागो जागो जी महाराज, पक्षी बोलते जी ।
देखो उगो हैं पीतम भान, जागो जागो कृपानिधान ।
मुनिजन करते कीर्तिगान, बनमें डोलते जी ॥
चकवा चकवी हर्ष मनावे, मिल मिल ईश्वरके गुण गावे ।
पंकज सुन्दर छवि दिखलावें, कलियें खोलते जी ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका उठकर विराजमान होना लक्ष्मणजी और
श्रीजानकीजीका महाराजको दण्डवत् करना.)

जानकीजी–महाराज ! आज तो रात्रीको एक विचित्र
[illegible] नहीं मालूम ईश्वरकी क्या माया है ?

रामचन्द्रजी–प्राणप्रिये ! विलम्ब न लगाओ, शीघ्रही
सम्पूर्ण स्वप्न सुनाओ.

दोहा ।

सहित प्रजा परिजन प्रिय, भरत दुखित अति दीन ।
चित्रकोट आये मनहु, कृशतनु परम मलीन ॥
मातु सकल देखी प्रभु, दुखित आनु अनुहार ।
तबते अति व्याकुल जिया, कल न परत खरारि ॥

रामचंद्रजी–

नीक स्वपन नहिं बन्धु यह, अवश होय कुछ हान ।
दोष काह दीजे प्रिय, विधिगति अति बलवान ॥

(रामचन्द्रजीका प्रियबन्धुसहित स्नान करके मुनिगणके संग पर्वतपर विराजमान होना और उत्तरदिशाकी ओर निहारके चकित होना.)

रामचंद्रजी–उन्मादशा विलोकहू, काहि कारण प्रिय भ्रात ।
खग मृग पशु पक्षी विकल, देखो भागे आत ॥

(एक भीलका आकर दण्डवत् करना.)

भील–चित्रकूट आवत भरत, सेना सङ्ग अपार ।
करत कुलाहल वीर सङ्ग, रथि पदचर असवार ॥

रामचंद्रजी–कवन हेतु आवत भरत, कह प्रियबंधु विचार ।
रथ गज वाहन सङ्ग हैं, पदचर औ असवार ॥

लक्ष्मणजी–

कुटिल कुटिलता ना तजे, नाहिं निचाई नीच ।
कदली काटे तौ फरै, कोटि यतन बरु सींच ॥
मधुर असन दे पालिये, वायस अति अनुराग ।
होवैं कबहुँ कि नाथ शठ, मूढ निरामिष काग ॥
राजनीति नहिं भरतमन, आनी नाथ सुजान ।
तब कलंक लिया जगतमें, अब हो जीवन हान ॥

महाराज ! दुष्ट भरतने यह विचार किया कि श्रीरघुनाथजीको चौदह वर्षका वनवास तो दिवा दिया, परन्तु जो

अवधि बिताकर आनन्दयुत आ जावेंगे तो अवश्य अयोध्यानाथ कहावेंगे इस कारण उचित है कि इस कुअवसरमें रघराजकी हानि बनाऊं और फिर अकंटक राज्यका आनन्द उठाऊं, निस्संदेह राजनीति तो यही है जो भरतने विचार करी है, परन्तु मूर्खने यह नहीं सोचा कि रघुपतिका एक सेवक उसकी सम्पूर्ण सेनाका नाश कर देगा, दोनों भाइयोंको सँग्रामशय्यापर सुला देगा. (महाराजके चरणोंमें दण्डवत् करके) महाराज! आपके प्रतापसे भरतको शत्रुघ्नसहित यमलोकमें पहुँचाऊंगा, सम्पूर्ण योधाओंको रणसागरमें बहाऊंगा, जो कुटिल बन्धुको वध करके न आऊंगा तो कदापि धनुष हाथमें न उठाऊंगा. आपका सेवक न कहाऊंगा.

(श्रीरामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीको कण्ठ लगाना.)

रामचन्द्रजी—प्रियबन्धु ! तुम्हारे पराक्रमको सम्पूर्ण ब्रह्मादि जानता है ऐसा कौन है जो तुम्हारे क्रोधसे भय नहीं मानता है, परंतु हे लक्ष्मण ! भरत कदापि अनुचित कर्म कलंकका भाजन नहीं बनेगा.

(श्रीजानकीजीका फल फूलका दोना भरके देना.)

जानकी—लक्ष्मण ! आओ बहुत दिवस बीत गया है. कुछ मधुर फल खाओ.

(लक्ष्मणजीका जानकीको दण्डवत् करके फल फूल भोजन करना.)

सीन नं. २५.

(भरतजीका सम्पूर्ण प्रजावासियोंसहित चित्रकूटके निकट आना और महाराजके चरणकमलके चिह्नकी रेनुकाको शीशपर रखना और पर्वतको दण्डवत् करना.)

गजल धुन बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज-गैरत न तुझको आई कुछ पियार बेशर्म.)

भरतजी—पर्वत पहाड कंदरा, तुमको है धन्य धन्य ।
बिन त्राण फिरैं जापे सिया राम और लषन ॥
बडभागी कोल भील यह पक्षी पशु मृगन ।
विचरैं जो सङ्ग रामके आनन्द मन मगन ॥
उपवनकी शोभा कीर्ति को करे वर्णन ।
जामें रहैं रमापति यह भाग्यवंत बन ॥
हाय जगतमें कौन अयोध्यासी अभागन ।
त्यागी जो सिया रामने मुझ दुष्टके कारन ॥

प्रिय निषाद! ऐसा न हो कि श्रीरामचन्द्रजी मुझ अभागीका आगमन सुनके चित्रकूट त्याग दें, किसी और वनमें वास कर लें.

निषाद—नहीं महाराज! चिन्ता न करो, देखो पर्वतकी शिखरपर फुलवारीके मध्य श्रीजनकनन्दिनी फिरती हैं, अपने चंद्रमारूपी मुखारविंदसे सम्पूर्ण पर्वतको प्रकाशित करती हैं.

(भरतजीका श्रीजानकीजीको दंडवत् और शीघ्रताईसे निषादसहित पर्वतपर चढना.)

भरतजी— दोहरा.

मूढ मन्दमति कुमति मैं, प्रभु परिपूरणकाम ।

त्राहि त्राहि आरतहरण, जनसुखदायक राम ॥
मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुनाथ।
शोकहरण संशयदलन, करहू मोहिं सनाथ ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रिय बन्धु और भार्यासहित पर्वतकी शिखरसे उतरकर भरतजीको कण्ठ लगाना और सब माताओं और प्रजावासियों-सहित आश्रमपर आना.)

कौशल्याजी- दोहा।

पुत्र तुम्हार वियोगमें, भूपति तज्यो शरीर।
भरत विकल पुरजन विकल, कौन बँधावे धीर ॥

रामचन्द्रजी—आह सूर्यवंशी कुलका सूर्य अस्त हो गया, सम्पूर्ण अयोध्यामें अंधेर छा गया, मैं अभागी अन्तसमय निकटभी न पाया, हाय प्रिय पिता मेरे वियोगमें प्राण गँवाया.

वसिष्ठजी—हे राम! तुम तो बुद्धिमान् हो, सम्पूर्ण विद्याके निधान हो, धैर्य धरो, कोई ऐसा उपाय करो कि जिससे [illegible]योंका कल्याण हो, तुम सद्गुणकी खान हो.

रामचन्द्रजी—महाराज! जो आप आज्ञा देंगे सोई स्वीकार करूंगा, सत्यव्रतसे विमुख न बनूंगा.

दोहा।

भरत दुखित अति विकल है, सुनो राम अवधेश।
तुम करुणाकर धर्मध्वज, मेटहु कठिन कलेश ॥

रामचन्द्रजी—प्रिय भरत! सोचो जिस धर्मधुरंधरने शरी-रको तो त्याग दिया परन्तु सत्यव्रतका पालन किया, देखो

हमकोभी अवश्य उचित है कि उस प्रतापीके वचनोंका पालन करें, धर्मसे न गिरें, यद्यपि अनेक प्रकारके कष्ट सहें.

भरतजी—अच्छा महाराज! यह कृपा करो, कोई ऐसा अवलम्ब दें कि जिसके आसरे चौदह वर्ष बिताऊं, अवधि-रूपी सागरसे पार हो जाऊं.

रामचन्द्रजी—प्रिय बन्धु! मेरी यह पादुका ले जावो, उनसे ध्यान लगावो, माताओंको धीर बंधावो, प्रजाका कष्ट मिटावो, मैं चौदह वर्ष बिताकर आनन्दयुत आऊंगा, गुरु-जीके चरणकमलमें सीस निवाऊंगा, तुमको कण्ठ लगाऊंगा, देखो जो शीघ्रही अध्योध्यामें न जावोगे, कुछ दिन मेरे समीप वनमें वास बनाओगे तो प्रिय प्रजावासी कष्ट उठावेंगे, नैनोंसे नीर बहावेंगे.

(भरतजीका महाराजकी पादुका सीसपर धरके श्रीरामचंद्रजी और जानकीजीको दण्डवत् करना, सम्पूर्ण अयोध्यावासियोंका दैव-मायाके वश होकर महाराजसे मिलकर अयोध्योका गमन करना·)

सीन नं० २६.

(भरतजीका अयोध्याके राजसिंहासनपर महाराजकी पादुकाको विराजमान करना.)

भरतजी—प्रिय शत्रुहन! तुम राजभवनमें रहा करो और सम्पूर्ण माताओंकी चरणसेवा किया करो.

शत्रुहन—अच्छा महाराज! आपकी आज्ञा पालूंगा, माताओंकी सेवामें मन लगाऊंगा.

भरतजी-(गुरुजीसे) महाराज ! मैं चौदह वर्ष नन्दीग्राममें बिताऊंगा, अपने हाथसे एक सुन्दर वाटिका बनाऊंगा. जब प्रिय बन्धु अवधि बिताकर आवेंगे तो उसके मधुर फल खावेंगे, इस कारण महाराज ! आप संपूर्ण प्रजाका पालन करें, सबके शोक हरें.

(भरतजीका गुरुजीसे दण्डवत करके न[illegible]ग्राममें कठिन तपस्या करना.)

सीन नं. २७.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रिय बन्धु और भार्यासहित चित्रकूटपर विराजमान होना, नारदजीका आना.)

गजल धुन जिला ताल कवाली.

(तर्ज-भवे तानी है खंजर हाथमें है तनके बैटे हैं।)

नारदजी-

कहो रसना सियावर रामकी जय, और शिरी लछमन।
[illegible] पाप अघहारी, मुनिजन संत मनरंजन ॥
[illegible] देह नर धारी, तेरी जय हो खरआरी।
मेरे मनमें बसे निशिदिन, श्रीरघुकुलपतिनन्दन ॥
[illegible] मातके कारन, किया मुनि वेष है धारन।
[illegible] विपत आतप, फिरो सीतासहित वन वन ॥
सकल कलिमलकलुषभंजन, दलन खल भक्तमन चन्दन ॥

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

द्वितीय भाग समाप्त.

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र ।

वनकाण्ड तृतीय भाग ।

ॲक्ट नं. ३.

सीन नं. १.

(श्रीरघुनाथजीमहाराजका श्रीजनकनन्दिनीसहित पंचवटीमें गोदावरीनदीके तीर पर्णकुटीमें विराजमान होना और देवतागणका आकर स्तुति करना.)

अंग्रेजी वजन.

(तर्ज–तोरी छलबल है न्यारी तोरी कलबल है न्यारी ।)

देवतागण–प्रभु तुम हो खरारी, मेटो चिन्ता हमारी,
प्रभु लीला तुम्हारी, है अपरम्पार ।
कीजो हमको सनाथ, नावें चरणोंमें माथ,
प्रभु दीनोंके नाथ, टारो भूमिभार ॥
सुनो सुनो स्वामी, अंतर्यामी,
करें तेरे सिवा कासे जाके पुकार ।
हमें निश्चर सतावें, पापी निसदिन जलावें,
चंदन हम कहां जावे स्वामी हाहाहाहाहाहाहाहाहा ॥

(सुरसमूहका दंडवत् करके चला जाना.)

(सूपनखा रावणकी भगिनीका सुन्दररूप धारण करके महाराजके सन्मुख हाथ जोडकर खडा होना.)

राम–सुन्दरी ! तू कौन है और किस कारण इस गम्भीर वनमें विचरती है ?

सूपनखा–महाराज ! मैं सुकुमारी राजदुलारी अबतक कुमारी हूं, परन्तु अब दासी तुम्हारी हूं.

राम–मुझको नहीं ऐ भामिनी ! ख्वाहिश है तुम्हारी, मौजूद है मुझ पास तो यह सुन्दरी नारी.

सूपनखा–दासी मुझेभी लो बना यह अर्ज लीजे मान, वरन अभी महाराज ! मैं खोदूंगी अपनी जान.

राम–(लक्ष्मणजीकी तर्फ हाथ उठाकर) वह देख पुरुष खूबरू बैठा है माहजबीं, लाखोंमें लाजवाब है सानी कोई नहीं, उससे कहो तुम हाल सब जावो अब उसके पास, शायद ... ी ! पूरी हो तेरी आस.

गजल धुन जिला बिहाग ताल कवाली।

(तर्ज–गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी।)

(लक्ष्मणजीके निकट जाकर)

सूरत प्यारी प्यारी दिलमें बसी तुम्हारी।
चितवनकी अब कटारी मेरे लगी है कारी॥
मुँह चांदसा तुम्हारा मुझको लगे है प्यारा।
भूली हूं काम सारा जाऊं मैं तुमपर वारी॥

लेलो मुझेभी साथ अब तुमपर फिदा हूं नाथ ।
अब जोडूं मैं दोनों हाथ अब चेरी मैं हूं तुम्हारी ॥

लक्ष्मणजी—मुझसे न होगी पुरी, ख्वाहिश अनार तेरी ।
तू मान बात मेरी, अपनी करे क्यों ख्वारी ॥
मैं तो हूं दास उनका रघुराज नाम जिनका ।
प्रभूही करेंगे पुरी, मनकामना तुम्हारी ॥

(सूपनखाका श्रीरामचंद्रजीके समीप आना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज—सुन रे काले देव रे ।)

सूपनखा—तुम स्वामी महाराज हो, मैं चरणकी धूल ।
हाथ जोड आगे खडी, मुझको करो कबूल ।

राम—ऐ तिरया तुमसे कहूं, मान मेरी यह बात ।
नहीं वह नौकर है मेरा, वह है मेरा भात ॥

(सूपनखाका फिर लक्ष्मणजीके पास आना.)

सूपनखा—इस सूरत और शकलपे, मैं सदकैं कुर्बान ।
लौंडी मुझे बनाय लो, नाहिं तो खोदूं प्रान ॥

लक्ष्मणजी—मरे कोई कोई जीये, कोई खोवे जान ।
मुझको इससे गर्ज क्या, बतला ऐ नादान ॥

सूपनखा—किसमत तेरी खुल गई, मनमें जरा विचार ।
जो मोहित तुझपर हुई, मुझसी सुन्दर नार ॥

देख तो मेरे रूपको, मैं चन्द लजावनहार ।
करले मुझे कबूल अब, मत कर तू इसरार ॥
लक्ष्मणजी–जा अपना रस्ता पकड, क्यों करती तकरार ।
लाखों ठोकर खाय है, तुझसी नार हजार ॥
(सूपनखाका भयंकररूप धारण करके श्रीजानकीजीकी तर्फ दौडना लक्ष्मणजीका उठकर उसका नाक काट लेना.)

सीन नं. २.

(खरदूषणका दरबारमें बैठना और सूपनखाका रोकर सिंहासनके आगे गिरना.)

सूपनखा–है लानत तेरे ताकत बलको भाई ।
तेरे होते मेरी यह गति बनाई ॥
[illegible]–नहे किसने सताया प्यारी खाहर ।
[illegible] काटूं अभी सिर उसका जाकर ॥
सूपनखा–चली जाती थी मैं जंगलमें भाई ।
[illegible] नजदीक दण्डकवनके आई ॥
[illegible] देखी मैं बैठी एक औरत ।
निहायत खूबरू थी हूरसूरत ॥
खडी मैं हो गई उस पास भाई ।
और पूछा क्यों तू इस सहरामें आई ॥
उसी दम दो जवां रानाने आकर ।
कलाई पकडली मेरी दबाकर ॥

दिया फिर जोरसे झटका उन्होंने ।
जमींपर बादमें पटका उन्होंने ॥
बहुत मारा मुझे दोनोंने मिलकर ।
एवज ले उनसे भाई जल्द चलकर ॥

खर—मेरी तीरो कमां अब जल्द लावो ।
बहादुर और दलेरोंको बुलावो ॥
करो सामान जलदी जंगका अब ।
चलो हमराह मेरे मिलके तुम सब ॥

(युद्धके बाजोंका बजना खरदूषणकी राक्षसी सेना लेकर चलना.)

सीन नं. ३.

(श्रीरघुनाथजीका बन्धु और भार्यासहित पर्णकुटीमें विराजमान होना.)

ठुमरी धुन जिला ताल पंजाबी ठेका ।

(तर्ज—एक चतुर नार कर कर सिंगार)

जानकीजी—
कैसी छाई घटा अब काली घोर तुम देखो नाथ पूर्वकी ओर।
हुआ नाथ आज इंदरका राज बदराकी गर्ज सुन कूकें मोर॥
मृगनकी डार देखो खरार ऐसी दौडी आत जैसे भागे चोर।
पक्षी अपार मुँह फारफार देखा तो नाथ कैसा करते शोर॥
बिजली करके बादल गर्जे चन्दन सुन जिवरा डरत मोर॥

रामचन्द्रजी—

नहीं है यह घटा दिल प्यारी जान, आवें दुष्ट मूढ खोने अपने प्रान
पायनकी धूर नभमें भरपूर, दिखत है सोई वारिदसमान ॥
सेना अपार आवे प्यारी नार, बिजलीसे चमक रहे उनके बान ।
बिजली करके नहीं नभ गर्जे, कूदे हैं सुभट बाजें निशान ॥
सब करतें शोर दिखलाते जोर, आवें मुझसे लडने मूर्ख नदान ॥

लक्ष्मणजी—हुकम अब दीजे महाराज ! मुझको, अभी मारूं मैं रणमें जाके सबको.

रामचन्द्रजी—तुम अब सीताको लेकर भाई जावो, किसी जाअमनसे इसको बिठावे वहां होशियार रहना तुम बिरादर, करूंगा जंग मैं उनसे यहांपर.

(लक्ष्मणजीका श्रीजानकीजीको लेकर पर्वतकी कन्दरामें छुप जाना, राक्षसी सेनाका महाराज रामचंद्रजीको घेर लेना.)

अंग्रेजी वजन.

(तर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी.)

राक्षसीसेना—

मारो मारो पकडो इसको नहीं जाने पावे जिन्हार ।
दौडो दौडो इसके पीछे भाग न जावे यह मक्कार ॥
घेरो घेरो मिलके इसको करदो तीरोंकी बूछार ।
हमपर तीर चलता है यह डालो जल्दी इसको मार ॥
करता है हमपै वार डरता नहीं मक्कार ।
सिर इसका लो उतार खंजरसे जल्द पार ॥

अबतकभी है अकडता, हमसे नहीं यह डरता।
आता हैं वार करता, हो जावो होशियार ॥
(महाराज रामचन्द्रके बानोंसे पीडित होकर राक्षसी सेनाका पृथ्वीपर गिरना.)
हाय मारे हारा खाये कैसे बचावें अब हम जां।
वाय क्यों लडने हम आये जान गँवाई आके यहां ॥
यह तो मालिक उलमौत है भाई नहीं यह हरगिज इन्सान।
हमसे लडे मैदान जंगमें आदममें यह ताब कहां ॥
(खरका घायल होकर विलाप करना.)
गजल धुन सोहनी.
(तर्ज-मरहबा ऐ आशिक सादिक हमारे मरहबा.)
खर—तूने हाय पापन बहन हमसे कबका यह बदला लिया।
मेरे सब कुटम परवारको अब रनमें आह खपा दिया ॥
करूं आह क्या तदबीर अब मेरी फूटी है तकदीर अब।
मेरे मर गये सब सूरमा नहीं जिन्दाहा एकभी रहा ॥
हाय सोचूं क्या जाऊं कहां उठनेके नहीं काबिल रहा।
मेरे भाई रावन जल्द आ अब मरता हूं मुझको बचा ॥
(राक्षसी सेनाका प्राणत्याग कर सुरलोकको प्राप्त होना. श्रीजानकीजीका और लक्ष्मणजीका कन्दरासे निकलकर महाराजको दण्डवत् करना. नारदजीका आकर महाराजके गुणानुवाद करना.)
भजन.
नारदजी—
सियावर रामगुण गावो, भवसागर पार हो जावो।
भजो रघुनाथ रघुराई, यही फल जन्मका भाई ॥

कहो जय हो सियावरकी, जो मार्ग मुक्तिका पावो।
यह सब झूंठा है संसारा, यूंही फैला है अंधियारा॥
नहीं कोई बंधू सुत दारा, क्यों फँसके मोहमें भरमावो॥

सीन नं. ४.

(सूपनखाका रावणके लंकामें जाकर विलाप करना.)

रावण—हैं हैं बहन! जल्द बता बता तेरा नाक किसने काट लिया.

गजल धुन सोहनी.

(तर्ज—जान दी उल्फतमें तूने हाय प्यारे मरहबा.)

सूपनखा—हाय भाई क्या कहूं, मुझको बहुत आजार है।
एक जवां बदमस्तने मुझको किया अब ख्वार है॥
मैं कहा उससे बहुत, हमशीरा हूं रावनकी मैं।
रौब मानें उसका सब, लंकाका वह सिर्दार है॥
तब कहा यह उसने, न छोडूंगा तुझको अब तोहें।
डर मुझे रावण नहीं, कहती तू क्या हरबार है॥
जब किया इसरार मनें, तब तो उसने नाकभी।
काट नशतरसे लिया, अब जिंदगी हा ख्वार है॥

रावण—मेरी ताकत सभी दुनियामें मशहूर, डरें मुझसे परी जिन्नो मलक हूर, बता तू जल्द नाम अब उसका मुझको, चखाऊं मैं मजा अब जाके उसको.

सूपनखा—किसी राजाके दो फरजिंद खुशतर, रहे सह

राय दण्डकवनमें आकर, उन्होंनेही है काटा नाक मेरा, नहीं डर दिलमें माना कुछभी तेरा, खर और दूषण मेरी इमदाद आये, बहुतसी फौज अपने साथ लाये, लडे आकर वह भाई उनसे रनमें, मगर मारे गये सब एक छिनमें.

रावण–नहीं ताकत है यह इन्सांमें जिन्हार, करे जो मेरे खादिमसेभी तकरार, खर और दूषन बहादुर सूरमा थे, बलो ताकतमें मेरेही समान थे, हुई ताकत यह इन्सांको कहांसे, कि मारा उनको रनमें तन्हा आके.

सूपनखा–है उनके साथ एक सुकुमार पियारी, नहीं देखी कोई जैसी वह नारी, कहांतक मैं कहूं उसकी बडाई, गजब आंखें अजब मुँहकी सफाई, वह दौलते हुशनसे है बसके मामूर, खिजल हो देख उसकी शकलको हूर.

रावण–रखो दिलमें तसल्ली तुम ऐ रबाहर, किसी सूरतसे लाऊं उसको जाकर.

(रावणका दरबारसे उठकर चला जाना.)

सीन नं. ५.

(मारीचका सागरके तीर बैठना, रावणका आना.)

मारीच–कहो खैर्यतसे हो शाहे जहां, सबब क्या है जो आप आये यहां.

रावण–हमें आज एक काम तुमसे पडा, जो कर दो तो हो अहसां हमपर बडा.

लक्ष्मणजी–ऐ माता मेरी सुनो, अर्ज करूं सिर नाय ।
कुछ दहशत मानो नहीं, कुशलसहित रघुराय ॥
जानकीजी–मतकुछ देर लगावे अब, जल्द लखन तू जाय ।
प्राणनाथ पतिम मेरे, मुझसे बिछडे हाय ॥
लक्ष्मणजी–इस वनमें माता फिरें, दुष्ट निशाचर घोर ।
नहीं जाऊं मैं छोडके, कहूं दोऊ कर जोड ॥

ठुमरी धुन खम्माच ताल पंजाबी, ठेका.
(तर्ज–राम बिना आराम नहीं.)

जानकीजी–
आज अलमका रोज विधाता बचों मुझको दिखलाया है ।
ऐ दुष्ट तुम्हारा क्या मैं बिगारा विपतामें मोह सताया है ॥
मैं देख विचारा या संसारा नहीं साथी दुखमें पाया है ।
लछमन हट जावो मुँह ना दिखावो क्यों वनमें संग आया है॥
चंदन मर जाऊं अवध न जाऊं क्या मनमें तेरे समाया है ॥

लक्ष्मणजी–न गुस्सा दिलमें तुम माताजी लावो, न रंजो गमकी यह बातें सुनावो, तेरे माता चरण सिरसे लगाऊं, अभी महाराजके मैं पास जाऊं, यह रेखा खैंच देता हूं यहांपर, न आना इससे तुम माताजी बाहर.

(लक्ष्मणजीका श्रीजानकीजीको दण्डवत् करके चला जाना. रावणका मुनिरूप धारण करके आना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.
(तर्ज–सुन रे काले देव रे.)

रावण–दे भिक्षा मोहे सुंदरी मैं भूखा दरवेश ।
सदा याद ईश्वर करूं देख बढे हैं केश ॥

सीन नं. ६.

(श्रीरामचन्द्रजी महाराजका लक्ष्मणजीसहित पर्णकुटीमें विराजमान होना, श्रीजानकीजीका फुलवाडीमें टहलना, मृगरूप मारीचका आना.)

जानकीजी—मृग यह कैसा सुन्दर आज आया, सुन्दरी जिसकी है महाराज काया, चर्म इसकी मुझे अब लाके दीजे, अर्ज महाराज मेरी मान लीजे.

रामचंद्रजी—ऐ भाई तुम यहांपर रहना हुशियार, मैं लाता हूं अभी इस मृगको मार.

(श्रीरामचन्द्रजीका मृगरूप मारीचके पीछे चलना, मृगका गंभीर बनमें दूर जाकर महाराजका बाण खाकर पृथ्वीपर गिरना और घोर शब्द करके महाराजकी बोलीमें लक्ष्मणजीको बुलाना.)

रागनी.

(तर्ज—न जी लगे भवनमें री न वनकी छब सुहावे.)

मारीच—हाय प्यारी सीता मुझे घेर अब लिया। इन जालमोंने मुझको तो जखमी बना दिया॥ मैं क्या करूं कैसे बचूं लछमन तू जल्द आ। बेवश हूं हाथ पैर बन्धे मुझको अब छुडा॥ तर्कश तो छिन गया मेरा खंजरभी न रहा। मुंहमें अजलके मैं हूं हा भाई मुझे बचा॥ प्यासा मेरे खूंका यह आहसफाक है खडा। आ दौड जल्द भाई मेरे देर ना लगा॥

सीन नं. ७.

(श्रीजानकीजीका लक्ष्मणजीसहित पर्णकुटीमें विराजमान होना.)

दोहरा—त ल थाप.

जानकीजी—हाय मुसीबतमें फँसे, मेरे प्राण आधार।
जाओ लछमन तुम जल्द अब, बुरी करी करतार॥

(रावणका जटाकी फांसी गलेमें डालना. श्रीजानकीका दौड़कर बाहर आना.)

पद धुन मांड ताल दादरा.

(तर्ज-प्यारी बात हमारी मानो.)

रावण—ईश्वर अजब है तेरी माया तेरा भेद न काहू पाया।
चंद लजावनहार सुन्दर कैसी छैल छबीली ॥
मन है चकित देखके मोरा नैना परम रसीली ।
सुंदर मोहनी रूप दिखाया, ईश्वर अजब है तेरी माया ॥

जानकीजी—
जोगी ईश्वर ध्यान लगावो, परत्रिया देख न पाप चढावो
जप तप संयम नेम करो, और ईश्वरके गुण गावो ॥
परनारीको निरखके स्वामी, काहे धर्म घटावो ।
सिरपै पापकी पोट बँधावो, जोगी ईश्वर ध्यान लगावो ॥

रावण—नहीं साधू प्यारी मैं रावण हूं तेरे कारण आया।
छोडके रजधानी लंकामें जोगी वेश बनाया ॥
तेरा रूप मेरे मन भाया, तज सब राजपाट मैं आया ॥

जानकीजी—
आवन चहत हैं अब रघुराई, निज आश्रमको जावो ।
नहीं मानो जो वचन हमारा, तो पाछे पछतावो ॥
अपने घरको तुम फिर जावो, काहे नाहक जी ललचावो॥

(रावणका श्रीजानकीजीको बरबस रथमें बिठा लेना, जानकीजीका विलाप करना.)

आज द्वारे सुन्दरी तेरे निकला आन ।
भोजन ना मैंने किया निकले जावे प्रान ॥

जानकीजी—फूल रहा उपवन सुभग सुनो गुसांई नाथ ।
खावो फल अब जायके तुम्हें निवाऊं माथ ॥

रावण—मैं साधू हूं सुन्दरी तेरा भला करे भगवान ।
नहीं फल तोडूं हाथसे चाहे निकल जां प्रान ॥

(श्रीजानकिजीका भिक्षा देना.)

रावण—भिक्षा दे तो सुन्दरी। बाहर आकर दे, बन्धी हुई इस भिखको यह जोगी नहीं ले.

जानकीजी—बाहर आनेका नहीं हुकम मोहे ऐ नाथ, लेलीजे फल फूल यह कहूं जोडके हाथ.

(रावणका आसन मारकर पृथ्वीपर बैठ जाना.)

रागिणी.

(तर्ज–मैं कबकी वनमें डोलूं जाये बोल बोल बोल.)

रावण—मेरे भूखसे निकले जावें सुंदर प्रान प्रान प्रान ।
मोहे क्षुधा लगी है नारी, भिर्मत है काया सारी ॥
भिक्षा दे मोको नारी, अर्ज यह मान मान मान ।
दिन तीनसे अन्न न खाया, नहीं तर्स किसीको आया ॥
तेरी जानी न जावे माया, अजब तेरी शान शान शान ।
मैं चंदन अब कहां जाऊं, किसके घर अलख जगाऊं ॥
मैं फांसी जटाकी खाऊं, खोदे जान जान जान ॥

जटायू—ऐ दुष्ट तू इस नारको दे छोड जल्द अब।
वरना मैं तेरे सीस भुजा तोड दूंगा सब॥
रावण—तुझसे परिन्दोंका करूं हररोज मैं शिकार।
उड जा बचाके जान अब डालूंगा वरना मार॥
जटायू—मरनेका डर मुझे नहीं जालिम ऐ नाबकार।
पर छोड दे इस बामको यह रामकी है नार॥

(जटायूका रावणसे घोर संग्राम करना, रावणका जटायूको घायल करके पृथ्वीपर गिरा देना और श्रीजानकीजीको विमानमें बिठाकर आकाशमार्गमेंसे चला जाना.)

सीन नं० ८.

(लक्ष्मणजीका श्रीरामचन्द्रजीका वनमें मिलना.)

रामचन्द्रजी—ऐ भाई तुमने क्या दिलमें विचारी।
दई क्यों छोड तनहा प्राण प्यारी॥
फिरे हैं दुष्ट वनमें देव खूंखार।
सतावेगा कोई प्यारीको बदकार॥
लक्ष्मणजी—कर्मरेखा नहीं मिटती मिटाई।
न बिगडी बात बनती है बनाई॥
मैं आया हूं यहां मजबूर लाचार।
खता मुझसे हुई बेशक ऐ खरआर॥

(लक्ष्मणजीका महाराजके चरणोंमें गिरना.)

रामचन्द्रजी—क्यों होते हो इतने गमगीं बिरादर।
चलो गोदावरीपर ढूंढें चलकर॥

गजल धुन विहाग ताल दादरा.

(तर्ज-दुनियाको मैं गारत करूं एक अदना तीरसे)

जानकीजी-मुझसे फिरा है चर्ख सितम्गार हाय हा ।
देखूं दिखावे क्या क्या अब आजार हाय हा ॥
किसमत तबहीसे फूटी थी जब केकईने आह ।
छुडाया था हमसे सभी घरबार हाय हा ॥
क्या पर्दा अकलपर पडा अफसोस सद अफसोस ।
लछमनकीभी मानी न मैं गुफतार हाय हा ॥
क्या अब गिला चंदन करे महरूमिये किसमत ।
गुलकी एवज मिला है मुझे खार हाय हा ॥

(गृध्रराजजटायूका श्रीजानकीजीका विलाप सुनकर पर्वतकी खोहसे निकलना.)

मसनवी धुन जोगिया आसावरी ताल पश्तो.

(तर्ज-ऐ गुलबदन चमन तो है लेकिन.)

जटायू-हालत तुम्हारी देख मुझे रंज है कमाल ।
तुम कौन हो क्यों रो रही हो इस कदर बेहाल ॥
जानकीजी-ऐ पक्षी मेरे स्वामी हैं रघुकुलपति महाराज ।
तुझसे अगर जो हो सके बचा तू मुझको आज ॥
जटायू-इस दुष्ट मूढ पापीसे बेशक लडूंगा मैं ।
मर जाऊं चाहे रनमें न पीछे हटूंगा मैं ॥
जानकीजी-गुजरे है एक पलभी आज जैसे सौ बरस ।
क्यों अब लगावो देर तुम मुझपर करो तरस ॥

गजल धुन बिहाग.

(तर्ज-बेकली है आज दिल किनके लिये)

लक्ष्मणजी—जानकी मिल जायगी धीर्ज धरो ।
उठके बैठो नाथ क्यों करुणा करो ॥
ध्यान कीजे वनमें आये किसलिये ।
तुम जगत आधार जनके दुख हरो ॥
ढूंढकर लावें अभी माताको हम ।
खोजें सागर कन्दरा भाई चलो ॥

सीन नं. ९.

(रावणका श्रीजानकीको अशोकवाटिकामें ले जाना.)

ठुमरी धुन जिला ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज-एक चतुर नार.)

रावण—मेरी देख शान और आन बान ।
मुझसा जवान नहीं मिले जान ॥
मेरी तर्फ जरा कर प्यारी ध्यान ।
मेरी देख शान० ॥

जानकीजी—मूर्ख नदान छोड अब यह ध्यान ।
तेरी देखी शान सब आन बान ॥
लाया है चोर मुझको शैतान ।
मूर्ख नदान० ॥

रावण—दिलप्यारी जान चितवनके बान ।
तूने मारे तान जावें निकले प्रान ॥

(श्रीरघुनाथजीका लक्ष्मणजीसहित गोदावरीनदीपर आना और पर्णकुटीमें श्रीजानकीजीको न पाना.)

रागिणी धुन देस ताल सोरठ.

(तर्ज-ऊधो दुनिया रैन बसेरा)

रामचन्द्रजी-

प्यारी सिता प्रान हमारी, अब देश कौनसे सिधारी ।
फूल रही अब वनमें सरसों, खिल रही केसरक्यारी ॥
मोहे सुहावत नेक न भाई, बिन देखे प्रियप्यारी ।
देख अकेली आके कोई, ले गया प्राण पियारी ॥
कैसे अब जीऊं मैं भाई, यह दुख है अति भारी ।
थी आई वन संग हमारे, प्यारी राजदुलारी ॥
मोहे भय्या अब दृष्ट आवत, सो सुन्दर सुकुमारी ॥

(महाराजका व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरना.)

ठुमरी.

(तर्ज-पुत्री नादान बीयाबानमें तू कैसे आई.)

लक्ष्मणजी-

जागो महाराज हाय, आज कैसी विपता आई ।
खोई वन सीता माई, व्याकुल हैं अब रघुराई ॥
चेहरे जर्दाई छाई, हाये क्या करूं उपाई ।
कहां अब जाऊं, किसे बुलाऊं, विपत सुनाऊं ॥
क्या मैं बताऊं बोलो तो मुखसे भाई ॥

(श्रीरामचन्द्रजी महाराजका उठकर बैठना.)

जानकीजी—हट पापी परे हट पापी परे ।
सूरतको देख मेरा जिवरा जरे ॥
पिताने मेरे रचा स्वयंवर आये थे सब शाह ।
तूभी तो मौजूद था उनमें लाया क्यों ना ब्याह ॥
हट पापी परे० ॥

रावण—रावण मेरा नाम है प्यारी दुनियामें मशहूर ।
दहशतसे डरते हैं मेरी जिन मलायक हूर ॥
प्यारी मानो मेरी० ॥

जानकीजी—बना रूप जोगीका मुझको लाया छलके आज ।
देखी तेरी शानो शौकत आती क्यों ना लाज ॥
हट पापी परे० ॥

रावण—मेरी ताकत बाज़को सब जाने है संसार ।
करले मुझे कबूल ऐ सुन्दर मत कर तू इस रार ॥
प्यारी मानो मेरी० ॥

जानकीजी—मत कर ऐसी बातें मुझसे होशमें आ नादान ।
मेरे स्वामी है ऐ पापी रामचन्द्र भगवान ॥
हट पापी परे० ॥

सीन नं. १०.

(श्रीरामचन्द्रजीका श्रीजानकीजीके वियोगमें पर्णकुटीके सामने लक्ष्मणजीसहित बैठना.)

रामचन्द्रजी—जरा मेरा धनुष तो उठाकर ला, तीक्ष्ण

मेरी अर्ज नार अब ले तू मान।
दिलप्यारी जान० ॥

जानकीजी—हट बेशहूर रहो मुझसे दूर।
कर दिलमें गौर जो था तो जोर ॥
क्यों बना मुनी मांगी भीख आन।
मूर्ख नदान० ॥

रावण—कर मुझसे वाम तू अब कलाम।
ऐ नेकनाम तेरा मैं गुलाम ॥
अब काहे करे प्यारी गुमान।
मेरी देख शान० ॥

जानकीजी—पति भर्ता नार मैं हूं विचार।
मत दे आजार मूर्ख गंवार ॥
तोसे न बोलूं चाहे खोदूं जान।
मूर्ख नदान० ॥

ठुमरी।

(तर्ज—शबो जानी मरी.)

रावण—प्यारी मानो मेरी प्यारी मानो मेरी।
मोहित हुवा देख सूरत तेरी ॥
तेरे कारण प्यारी मैंने सजा जोग सामान।
महल चलो आराम करो अब देखो मेरी शान ॥
प्यारी मानो मेरी० ॥

अब तो अंतसमय हो रहा है, प्राण कंठ आ रहा है, अपना दर्श दिखावो, भवसागरसे पार लंघावो, दुष्ट रावणने मेरी यह दशा करदी है, उसी मूढने जनकनन्दिनी हर लई है.

रामचन्द्रजी—घबराओ मत मैं तुम्हारा सम्पूर्ण दुख हर लूंगा, तुमको अमर कर दूंगा.

जटायू—महाराज ! जिसका नाम लेनेसे मोक्ष प्राप्त होता है, भवसागरमें नय्या तिर जाती है, सोई प्रभु साक्षात् दृष्ट आ रहे हैं, पूर्ण चन्द्रमारूपी कंवलवदन दिखा रहे हैं, इस कारण मैं अब इस नाशवान् शरीरको नहीं चाहता हूं, चरणारविंदमें सिर झुकाता हूं.

छंद ।

रामचन्द्रजी—

परहित बसे जिन तात मन तिनको जग दुर्लभ कहा ।
परहितके कारज कारने तुम तात दारुण दुख सहा ॥
तन त्याग अब मम धाम गवनहु जाय जहां जोगी मुनी ।
इहते अधिक नाहीं कछु का देऊं मैं तोको गुनी ॥

दोहा ।

सीताहरण सुतात जनि, कहो पितासन जाय ।
जो मैं राम तो कुलसहित, कहै दशानन आय ॥

(जटायूका प्राणोंको त्यागन कर देना.)

बाणोंका तर्कश मेरी कमरमें सजा, मैं अभी इस पंचवटीको बाणोंसे पूरित कर दूंगा, ब्रह्माकी सृष्टिको मारकर मरूंगा.

लक्ष्मणजी—महाराज ! क्षमा करो. जानकीजी मिल जायगी.

रामचन्द्रजी—हाय चन्द्रवदनी, मृगनैनी, गजगामिनी, पिकबैनी, जनकनन्दिनी ! तेरे वियोगमें संपूर्ण ब्रह्मांड विपरीत हो रहा है. चन्द्रमा अग्नि बरसा रहा है, कदली विपिन कुन्तवन दृष्ट आ रहा है, शीतल पवन उरगश्वासके समान चलती है, पंचवटीको देखकर हृदयमें विरहकी अग्नि उत्पन्न होती है, यह वही पर्णकुटी है जिसमें मेरी प्राणपियारी किलोल करती थी, अपने पूर्णचन्द्रमारूपी मुखारविंदसे रतिकी छबिको हरती थी.

(महाराजका लक्ष्मणसहित वनमें विचारना.)

रामचन्द्रजी—लक्ष्मण ! देखो यह रुधिर कैसा बह रहा है?

लक्ष्मणजी—महाराज ! किसीका संग्राम हुआ है.

रामचन्द्रजी—देखो तो यह सामने कौन पडा है, इसीके शरीरसे तो शोणित बह रहा है.

लक्ष्मणजी—महाराज ! यह तो गृद्धराजजटायू है.

रामचन्द्रजी—हाय मेरे पिताके मित्र ! यह तुझपर कैसी विपता आई किसने तेरी यह गति बनाई ?

जटायू—हे प्रभु, दीनबंधु, रक्षक भगवान् कृपानिधान !

गजल.

(तर्ज–कोई ऐसी सखी चातर न मिली.)

जानकीजी–

अरे पापी तू बातें बनाता है क्या,
तेरी चालोंमें मूर्ख न आऊंगी मैं।
चाहे कितनाही करले तू जौरो सितम,
अपना धर्म न हरगीज घटाऊंगी मैं॥
तूने समझा है क्या जरा होशमें आ,
किसी औरको जाके यह धमकी दिखा।
मैं तो सब कुछ सहूंगी यह रंज अलम,
अपने कुलके न दाग लगाऊंगी मैं॥
मुझे नादां क्या दहशत दिखाता है तू,
किसे मरनेके डरसे डराता है तू।
अभी आयाही चाहें है रघुकुलपती,
पापी तुझको मजा अब चखाऊंगी मैं॥
तूने जालिम सताया है संसारको,
प्रभु अब तोरेंगे भूमिके भारको।
मैं तो आई हूं वनमें इसी कारण,
तेरे कुलकाभी नाश अब कराऊंगी मैं॥

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

तृतीय भाग समाप्त.

सीन नं. ११.

(रावणका अशोकवाटिकामें श्रीजानकीजीसे मोहबतभरी बातें करना.)

रागनी ।

(तर्ज–होवे जैजैकार ।)

जानकीजी–

पापी मूढ जा पापी मूढ जा पापी मूढ जा मोहे ना सता ।
सुन ऐ नादां खोबूं अब जां ऐसी बातें ना मोको सुनावो ॥
तूभी तो था स्वयंवरमें आया तोडा धनुष ना उठा ।
पापी मूढ जा पापी मूढ जा पापी मूढ जा० ॥
लाया छलके जोगी बनके शानो शौकत ना अपनी जता तू ।
क्यों था जोगीका वेश बनाया रनमें ना काहे लडा ॥
पापी मूढ जा० ॥
लाज न आवे मुंहभी दिखावे हट ऐ मूर्ख ना मोको ।
जला तू करता फिरता है नारोंकी चोरी नादां न बातें बना ॥
पापी मूढ जा पापी मूढ जा० ॥

ठुमरी ।

(तर्ज–दहीवालीका तौर दिखाना.)

रावण–

दिलमें बसी बसी मेरे भोली भोली सूरत तेरी प्यारी ।
सुन्दर चितवन मनको भावन तेरी तिर्छी जूं बर्छी ॥
देखी देखी अनोखी तू नारी ॥ दिलमें बसी० ॥
गोरी मारी बय्यां निबुवा छतियां, मुखचन्दा मोहे दिखला ।
मेटो मेटो मेरी आहो जारी ॥ दिलमें बसी मेरे० ॥

प्रभुताई ॥ धनुषबाण दोनों चढाये हुये हैं, क्रोधित हैं नैनोंमें है अरुनाई। मेरे वधका वालिने भेजे न हों यह, कहो भाई क्या मैं करूं अब उपाई ॥

हनुमान्जी—महाराज ! चिन्तासागरमें न पडो, धैर्य धरो, मैं अभी जाता हूं, सम्पूर्ण भेद लेकर आता हूं.

सुग्रीव—भाई ! विलम्ब न करो, शीघ्रही मेरी दुचिताई हरो.

सीन नं. २.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबन्धुसहित उपवनकी शोभाको देख-कर दुःखित होना.)

गजल धुन जिला विहाग.

(तर्ज—गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी.)

रामचन्द्रजी—

देखो भाई लछमन, कुसुमित विटप मनोहर ॥
प्यारी वसंत शोभा, फूले फले हैं तरुवर।
विकसे हैं कुंज नाना, शोभित परम सरोवर ॥
मृगी मृगनके वृन्दा, मेरी करें है निन्दा।
दे हैं मोहे सिखावन, ले सङ्ग करनी करिवर ॥

(हनुमान्जीका विप्रवेशमें आकर दंडवत् करना.)

हनुमान्जी—महाराज ! आप कौन हैं, आपके तो चक्र-वर्तीके चिह्न हैं, यह तो बडा गम्भीर वन है, भूमि अति कठिन है, किस कारण पर्वतोंपर विचरते हैं. मार्गमें अनेक प्रकारके कष्ट सहते हैं.

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र ।

किष्किंधाकाण्ड चतुर्थ भाग ।

अंक नं. ४.

सीन नं. १

(सुग्रीवका ऋष्यमूकपर्वतपर हनुमान्जी आदिक वानरोंसहित ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

भजन.

(तर्ज-आत्मामें गंग बहे क्यों न मन न्हावे.)

सुग्रीव-दीनबंधु दीनानाथ नाम तो कहावे हैं ॥
जीव जंतुका आधार, बेडा करे सबका पार ।
मोकोभी ले अब उभार, बार क्यों लगावे है ॥
निरासको तू आस दे, मुनिजनक्लेशको हरे ।
एक छिनमें कासे का करे, को पार तेरा पावे है ॥
धरणी गगन जल थल बसे, सबमयही तेरा रूप है ।
चंदन कहे सगुन स्वरूप, मोको नाथ भावे है ॥

(सुग्रीवका पूर्वदिशाकी ओर देखकर भयभीत होना.)

गजल धुन देसकार ताल चाचर.

(तर्ज-जवानीमें क्या होगा जोबन किसीका.)

यह आते हैं दो कौन देखो ऐ भाई । कोई सूर्मा हैं दिखै

सीन नं. ३.

(सुग्रीवका ऋष्यमूक पर्वतपर विराजमान होना.)

भजन धुन मांड.

(तर्ज–बादिला बेगी आयो जी)

सुग्रीव–मेरी दहनी भुजा फर्कत है ईश्वर काज बनावेगा ।
अब शगुन तो यह है कहता सब मिटेगी मन की चिन्ता॥
कोई बने सहायक मेरा नय्या पार लंघावेगा ॥
हनुमान अंजनीजाया, नहीं मुडके अबतक आया ।
है चौदा विध्यानिधान, मित्रता उनसे करावेगा ॥

(हनुमान्जीका श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजीसहित आना.)

हनुमान्जी–(रामचन्द्रजीसे) महाराज ! यह मेरे स्वामी सुग्रीवनामी, किष्किंधापुरीके नायक हैं, जो इस आपत्तिकालमें आपके सहायक हैं. (सुग्रीवसे) राजन् ! यह बलनिधान श्रीमान् महाराजा राजादशरथनृपति अयोध्यापुरीके कुमार, मुनिजनके रखवार भूमिका भार उतारने और आपजैसे प्रेमीजनोंको उभारनेके कारण इस महावनमें विचरते हैं, गोद्विजके निमित्त संकट सहते हैं सो आप इनके मित्र बनें, यथाशक्ति सहायता करें.

(हनुमान्जीका अग्नि प्रगट करना और सुग्रीवका पावक साखी देकर रामचन्द्रजीसे मित्रता करना.)

दोहरा ताल थाप.

सुग्रीव–अहो भाग्य रघुराज मम, धन्य घडी है आज ।
जा मोपर किरपा करी, दीनबंधु महाराज ॥

रामचन्द्रजी—रेखा कर्मकी आह न मिटती है मिटाई, कौशलपुरीके भूपके हैं पुत्र हम भाई, इस वनमें पिताजीके वचनोंका पालन करनेके कारण आये थे और अपने संग अपनी सुन्दर रूपवती स्त्रीभी लाये थे, सो उसको कोई दुष्ट चुराके ले गया, खोजा पहाड कंदरा पर खोज न चला.

हनुमान्जी—यह सामने पर्वत जो दृष्ट नाथ आता है, स्वामी मेरा सुग्रीवनामी इसपर रहता है, उससे मिलो वह वह काममें महाराज आवेगा, भेजेगा दूत सब जगह वह सुधि मंगावेगा।

रामचन्द्रजी—भाई! मैं किस प्रकार उससे मिलूं? सहायता लूं, वह क्यों मेरा सहायक बनेगा, संकट सहेगा?

हनुमान्जी—महाराज! कुछ संदेह न करो, अवश्य उससे मिलो, क्योंकि वहभी एक दुष्टका सताया हुआ है, उसीके भयसे अपने आपको उसने पर्वतपर छुपाया हुआ है, सो महाराज! उसको अभय करें, वहभी तन मन धनसे आपका चरणसेवक बनेगा, निश्चय आपकी प्राणप्रियाका खोज करेगा.

(हनुमान्जीका अपना असलरूप प्रगट करके दंडवत् करना.)

हनुमान्जी—महाराज! मुझको अपना सेवक बनाओ, मेरी कांधपर विराजमान हो जाओ, मैं आपको अपने स्वामीके पास ले चलूंगा, उससे आपकी मित्रताई कराऊंगा.

(हनुमान्जीका महाराज रामचंद्रजीको लक्ष्मणजीसहित अपनी कांधपर विराजमान कर लेना.

लक्ष्मण–श्रवणकुंडल नाथ ना पहचानूं मैं ।
यह अवश्य नूपुर सियाकी मानूं मैं ॥
मुख नहीं देखा प्रभु माताका मैं ।
कुंडलें शोभित रहे थी कानोंमें ॥
चरणोंमें दंडवत् निशिदिन मैं करूं ।
इसलिये नूपुर वही यह मानूं मैं ॥

(रामचन्द्रजीका श्रीजानकीजीके आभूषण हृदयसे लगाना.)

आसावरी ।

(तर्ज–मृगाने खेत उजाडा जुतन विन.)

रामचन्द्रजी–
सिया प्यारी केहि विध पाऊं हाय सीता कैसे तोको पाऊं।
कित खोजूं किस देशमें जाऊं कौन उपाय बनाऊं ॥
ढूंढ चुका वन खोह कंदरा कैसे भेद लगाऊं ॥

आह प्यारी जनकदुलारी ! तू किस दुष्टका त्रास सहती होगी निशिदिन चिन्तामें रहता होगी ?

(महाराजका विकल होकर भूमिपर गिरना, सुग्रीवका उठाना.)

सुग्रीव–महाराज ! धीरज धरो, करुणा त्यागन करो, मैं शीघ्रही कोई उपाय बनाऊंगा, आपकी प्राणप्रियाका खोज लगाऊंगा.

रामचन्द्रजी–अच्छा प्रिय मित्र ! प्रथम तो यह बताओ, मेरा संदेह मिटावो, कि तुम किस कारण इस पर्वतपर बसते हो, अनेक प्रकारके क्लेश सहते हो, चिन्तामें रहते हो ?

सेवक हूं महाराज मैं, जोरूं दोनों हाथ।
दया करी मो दीनपे, दर्श दिया जो नाथ॥
वन है प्रभु गम्भीर यह, कैसे आये यहां।
समझावो महाराज तुम, अब जावोगे कहां॥

रामचंद्रजी—मेरी प्यारी नारको, ले गया कोई चोर।
खोज मोहे पाया नहीं, ढूंढा चारों ओर॥
विधुवदनी मृगनैनी है जनकसुता सुकुमार।
अधर अरुण दामिनद्युति, सुखमा अंग अपार॥

(सुग्रीवका पर्वतकी कंदरासे श्री जानकीजीके आभूषण लाना.)

सुग्रीव—महाराज! मैं एक दिवस इस पर्वतपर बैठा कुछ विचार कर रहा था, बडा दुःखित हो रहा था, क्या देखता हूं कि कोई दुष्ट एक रूपवती स्त्रीको आकाशमार्गसे ले जा रहा है, नाना प्रकारसे उस पतिव्रताको सता रहा है, वह बिचारी कुररीकी नाई विलाप कर रही थी, उसके कमल-नैनोंसे जलधारा बह रही थी हा राम! हा लक्ष्मण! बार बार कह रही थी, मुझको देखकर उसने अपने आभूषण गिरा दिये थे, सो रघुराज! मैंने इस खोहमें यत्नपूर्वक रखवा दिये थे, अवश्य वोह आपकी भार्या जनकनन्दिनी थी, जो सम्पूर्ण जीवजन्तुओंसे सहायता मांग रही थी.

रामचन्द्र—लक्ष्मण! देखो क्या यह आभूषण मेरी प्यारी जनकदुलारीके हैं?

(लक्ष्मणजीका आभूषण लेकर देखना.)

सुग्रीव—महाराज आपका तो सत्यवचन हैं, परन्तु वालीका वध अतिकठिन है, वालि बडा शूरवीर है, संग्राममें अतिरणधीर है, आजतक किसीमेंभी यह सामर्थ नहीं हुई है कि उससे युद्ध करे, उसके प्रहारको सह सके.

रामचन्द्र—सखा मेरा वचन मृषा न होगा, मैं अवश्य वालिका वध करूंगा, जो कदापि संदेह हो तो परीक्षा ले लो, जिस प्रकार तुमको विश्वास हो सो कर लो.

सुग्रीव—देखो महाराज ! वह जो सात ताडके वृक्ष चन्द्र-मंडलाकार दृष्ट आ रहे हैं, जिनमें नवीन पत्ते लहलहा रहे हैं, जो उनको एकही बाणसे गिरा दोगे तो मेरा सन्देह मिटा दोगे.

(श्रीरामचंद्रजीका सातों वृक्षोंको एकही बाणसे गिरा देना.)

सुग्रीव—महाराज ! आप अवश्य वालीपर जय पावोगे, उसको रणभूमिमें सुलावोगे.

रामचंद्र—सखा ! विलम्ब न करो शीघ्रही चलो.

(सुग्रीवका श्रीरामचंद्रजी और लक्ष्मणसहित चलना.)

सीन नं. ४.

(वालीका राजमंदिरमें अपनी स्त्री ताराके संग प्यार करना.)

सुग्रीव—दुष्ट वाली ! तू कहा छुप रहा है, क्या कर रहा है, सन्मुख तो आ, सुग्रीवसे हाथ मिला, आज तुझको रणभूमिमें सुलाऊंगा, छोटे भाईकी स्त्रीसे प्यार करनेका मजा चखाऊंगा, तेरे रुधिरसे अपनी क्रोधरूपी अग्निको शान्त बनाऊंगा.

(वालीका क्रोध करके चलना, ताराका भुजा पकड लेना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज-सुन रे काले देव रे.)

सुग्रीव-सुनो श्रीमहाराजजी, दीनबंधु भगवान ।
मेरा भाई वालि एक, शूर वीर बलवान ॥
उसने है मुझको दिया, घरसे नाथ निकाल ।
छीन लिया मेरा सभी, राजपाट धन माल ॥
इस पर्वतपर शापवश, नहिं आवत महाराज ।
तदपि रहूं भयभीत मैं, निशिदिन श्रीरघुराज ॥

रामचन्द्रजी-सोच सखा त्यागन करो, सकल सँवारो काज ।
एक बाणसे मार हूं, मैं वालीको आज ॥
जे न मित्र दुखतें सखा, हो हैं जीह दुखार ।
तिनहिं विलोकत हानि अति, होय है पातकभार ॥
आपन दुख गिरिसम जिहीं, जानहिं धूरसमान ।
मित्रका दुख रज मेरु सम, कहैं श्रुति वेद पुरान ॥
गुण प्रगटे निज मित्रकर, अवगुण करहि दुराव ।
देत लेत मन शंक नहीं, यह सतमित्र स्वभाव ॥
आगे कहँ मृदु वचन प्रिय, पाछे अनहित हान ।
असको मित्र संग त्यागहु, जो चाहो कल्यान ॥

सुग्रीव-प्रभु स्वामी मैं दास हूं, चरण निवाऊं माथ ।
महाघोर रणधीर है, वाली सुनो मम नाथ ॥

रामचन्द्रजी-चिन्ता त्यागहु हे सखा, देखा बान कराल ।
प्राणघात करहूं अवशि, मैं वालीका काल ॥

है मेरा है यह काल. नहीं जाऊंगा लडने मैं तो अब नाथ, करो मुझपर कृपा जोडूं मैं यह हाथ.

रामचन्द्र—सखा एक रूप हो तुम दोनों भाई, नहीं पहचान तुममें कुछभी पाई, इसी कारण नहीं मैं मारा उसको, यह माला पुष्पकी पहराऊं तुझको. (रामचन्द्रजीका अपनी कण्ठकी पुष्पमाला सुग्रीवके कण्ठपर शोभित करके अपने करकमलसे सुग्रीवके अंगको स्पर्श करना.) अभय होकर करो तुम युद्ध प्यारे, बनाऊंगा मैं सब कारज तुम्हारे.

सीन नं. ६.

(बालिका रणभूमिमें गर्जना.)

बालि—मेरा पराक्रम सम्पूर्ण ब्रह्मांड जानता है, सुग्रीव मेरा क्या कर सकता है, दशकंधर रावणभी मुझसे डरता है.

सुग्रीव—नहीं नहीं, सुग्रीव नहीं डरेगा, अभी तुझसे युद्ध करेगा, तेरे प्राण हरेगा.

(सुग्रीवका बालिसे मल्लयुद्ध करना, महाराज रामचन्द्रका बालीके हृदयमें बाण मारना, बालीका व्याकुल होकर भूमिपर गिर रामचन्द्रजीके दर्शन करना.)

बालि—महाराज! आप तो मर्यादापुरुषोत्तम पूर्ण ब्रह्मअवतार मुनिजनोंके हितकार हो, मुझको व्याधकी नाईं किस कारण वध किया, कौनसे अपराधका दण्ड किया?

रामचन्द्रजी—देखो मूर्ख! मैं समझाता हूं, तेरा अपराध बताता हूं, जो पुत्र और छोटे भाइका स्त्री, भगिनी और

लावनी धुन विहाग ताल कवाली.

(तर्ज–मुख चन्द्रकासा नैना तेरे कटारी.)

तारा–मेरे प्राणप्यारे कंथ चरण सिर नाऊं ।
सुन गुप्त भेद एक तोहे कंथ समझाऊं ॥
है राजा दशरथ एक अवध बलकारी ।
और उसके हैं दो पुत्र महाबलधारी ॥
सुग्रीव करी है उनसे मित्रता भारी ।
प्रभु युद्ध करनसे हानि होगी भारी ॥
यह मानो मेरी विनय चरण सिर नाऊं ।
सुन गुप्त भेद एक तोहे पति समझाऊं ॥

वालि–मेरा वालि प्यारी नाम भुजाबल जाने ।
प्रिय तारा सुन्दरी काहे वृथा भय माने ॥
मैं विन ईश्वर नहीं किसीसे प्यारी हारूं ॥
वैरीको जाके अबही रणमें मारूं ॥
में जाके अबही युद्ध बीच ललकारूं ।
और तोड सीस शत्रुको भूमिपर डारूं ॥
मेरा नाम जगत विख्यात प्रिया तू जाने ।
मेरी प्यारी तारा काहे भय माने ॥

सीन नं. ५.

(सुग्रीवका पर्वतपर रामचन्द्रजीको दण्डवत करना.)

सुग्रीव–मैं तुमसे था कहा रघुवीर कृपाल, नहीं यह भाई

सोचूं क्या जाऊं कहां सूना लगे सारा जहां ।
जीके हाये क्या करूं मरूं मैंभी सिरको फोडके ॥
पुत्र अंगद लाडला रोवे पति तेरा खडा ।
हाय तुम तो चल बसे सब नेह नाता तोडके ॥

रामचन्द्रजी–तारा ! क्यों विलाप करती है, मोहमें पडती है, देख मैं तुझे समझाता हूं, तेरा संदेह मिटाता हूं, ध्यान धर मेरी वाणीको श्रवण कर.

दोहा ।

क्षिति जल पावक औ गगन, एक मिलाप समीर ।
पञ्चतत्वसे है रचा, यह सुन अधम शरीर ॥
सो तन तो आगे पडा, वृथा रही तू रोय ।
जीव नित्य सुन न मिर्तो, तासु नाश नहिं होय ॥
दाह देह पतिकर करो, त्यागहु चिंता नार ।
सदा न थिर कोई रहे, नाशमान संसार ॥

(सुग्रीवका वालिके मृतक शरीरको दाह देना.)

सीन नं. ७.

(अंगदका राजसभामें विलाप करना.)

अंगद–हाय ! इस दुनियाकाभी अजब रंग है, निरालाही ढंग है, कहीं मातम होता है, कहीं शादीका डंका बजता है, कोई शोकवश आंसू बहाता है, कोई हर्षयुक्त आनन्द मनाता है, एक जानसे जाता है, एक राजपदवी पाता है, कभी हमभी

कुँवारी कन्याको कुदृष्टिसे विलोकता है उसके मारनेका पातक नहीं होता है. मूढ ! तूने अपनी स्त्रीका कहा न माना, यह नहीं जाना कि सुग्रीव मेरी भुजाओंके आश्रयपर युद्ध करने आया है, उसको मैंनेही पठाया है.

वालि— दोहा ।

सुनो राम स्वामी प्रभु, दीनबन्धु खरारि।
हरि अजहूं मैं पातकी, अन्त शरण हूं तिहारि ॥

(रामचन्द्रजीका वालिके सीसको अपने करकमलसे स्पर्श करना.)

रामचंद्रजी—अचल करूं तोहे वालि मैं, राखूं तेरे प्रान ।
वचन मृषा नाहिं होय मम, देहुँ जीव तोहे दान ॥

वालि—जिसके नामके स्मरण करनेसे जीव मोक्ष पाते हैं, संसारसागरसे विना प्रयास पार उतर जाते हैं सोई प्रभु इस अन्तसमय मुझको साक्षात् दृष्ट आते हैं, अपने मुखारविंदसे कोमल वचन सुनाते हैं, हे प्रभु ! इस कारण अब मुझको इस शरीरमें प्राण नहीं चाहते हैं.

गजल सोहनी.

(तर्ज—मरहबा ऐ आशिक सादिक हमारे मरहबा.)

तारा—चल दिये हाये पति मुझको तडपती छोडके ।
स्वर्गका मारग लिया दुनियासे मुँहको मोडके ॥
हा पिया व्याकुल जिया फटता नहीं मेरा हिया ।
आंख खोलो देखो पीतम मैं कहूं कर जोडके ॥

तारा–हे महाराज ! यह राज्य तो सुग्रीवकोही उचित है, मेरा हृदय तो केवल इस भयसे कंपित है, कि राज्यमद सुग्रीवको मतवारा न बनादे, मेरे पुत्रका शत्रु करा दे.

लक्ष्मणजी–नहीं तारा ! यह कदापि नहीं होगा, राज्यमद सुग्रीवको कभी मतवारा नहीं करेगा, आवो सुग्रीवको किष्किंधापुरीका राजतिलक करावो और अंगदको युवराज बनावो.

(लक्ष्मणजीका सुग्रीवके राजतिलक करना.)

ठुमरी.

(तर्ज–मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघरवाले.)

बामा–सुख सम्पति नित नो हो तेरी प्रजाके बसानेवाले ।
सोहे शिरपर सुंदर ताज सुखछाया जगतमें आज ॥
हो दूना तुम्हारा राज्य सबका कष्ट मिटानेवाले ।
कहो राम राम सिया राम भजो निशि दिन आठों याम ॥
ईश्वर सिद्ध करे सब काम हमको सुख दिखानेवाले ॥

सीन नं. ८.

(श्रीरामचंद्रमहाराजका लक्ष्मणसाहित पर्वतपर विराजमान होना.)

रागिनी.

(तर्ज–यह जग है गोरख धंदा.)

रामचन्द्रजी–वर्षाऋतु सुंदर आई देखो प्रिय लछमन भाई ।
नभ उमड घुमड गरजत है मेहा रिमझिम बरसत है ॥
चहुँ ओर घटा है छाई वर्षाऋतु सुंदर आई ॥

युवराज कहाते थे, प्रजावासी सिर झुकाते थे, आज कोई यहभी नहीं पूछता है, कि तू क्या करता है, जीता है या मरता है.

तारा—आह मेरे लाल ! क्यो बिलक बिलककर रोता है, जान खोता है, सब्र कर, जो ईश्वरको मंजूर है वही होता है, सोचेसे क्या बनता है.

अंगद—हाय माताजी ! मैं क्योंकर न रोऊं, आंखोंसे आंसू न बहाऊं, जालिम ! तूने क्या किया, वाली जैसे शूर-वीरको खपा दिया, छल करके मरवा दिया, आह जराभी न तर्स आया, भाईकेही रुधिरसे क्रोधरूपी अग्निको शांत बनाया, बस अब मेरा सिरभी तलवारसे उडा दे, उस हमेशा सोनेवाले-की गोदमें सुला दे, अस्मान ! तू क्यों नहीं फट जाता है, हा यह तखता जमीन किसवास्ते नहीं उलट जाता है ?

(अंगदका भूमिमें गिरना लक्ष्मणजीका उठाना.)

लक्ष्मणजी—हे अंगद ! क्या करता है, क्यों घबराता है, इस दुनियामें अमर कोई नहीं रहा है, सबको कालने खाया है, एक दिन हमकोभी चलना है, सदा स्थिर नहीं रहना है, तेरा चचा सुग्रीव निर्दोष है, इसकोभी बडा क्लेश है, पर क्या करें ? कर्मगति बडी बलवान् है, तेरा किधर ध्यान है, बस बस कर, ठंडी ठंडी आह न भर, मैं अभी तुझको राजतिलक देता हूं, महाराजसे आज्ञा लाता हूं.

मुँहसे चन्दा शर्मावे नाजो अदा निराली ॥
जुल्फें काली नाग हैं भवें तरी शमशीर ।
चितवन तेरी तीर हैं जांय कलेजा चीर ॥
आहाहा सुन्दर प्यारी ओहोहो जोबनवारी ।
सूरत है भोलीभाली कैसी चञ्चल चलती चाल ॥

(मयंदका भयभीत आकर दण्डवत् करना.)

मयंद—हाय ! अब क्या होगा, किस प्रकार हमारा प्राण बचेगा ?

सुग्रीव—क्यों क्यों शीघ्र बता क्या हुआ विलम्ब न लगा.

मयंद—महाराज ! लक्ष्मणजी बड क्रोध भरे आ रहे हैं, बाण धनुषमें चढा रहे हैं, ललकारके सुना रहे हैं कि क्षणभरमें किष्किंधाका नाश करूंगा, सबके प्राण हरूंगा.

सुग्रीव—हाय क्या करूं, कहां जाऊं, किस प्रकार प्राणोंको बचाऊं.

तारा—महाराज ! धीर्य धरो, चिंता न करो, मैं लक्ष्मणजीका क्रोध निवारण कर दूंगी, विनती करके मना लूंगी.

सुग्रीव—हनुमान् ! तुमभी ताराके संग जावो, जिस प्रकार बने लक्ष्मणजीके क्रोधकी अग्निको शांत करावो.

(हनुमान्जीका तारासहित चलना.)

सीन नं. १०.

(लक्ष्मणजीका सुग्रीवके द्वारपर क्रोधवन्त आना.)

लक्ष्मणजी—मैं इस किष्किंधापुरीको अग्निबाणसे भस्म

दामिनि करकत है घनमें दादुर कूकत है वनमें ।
जल पूरित नदी तलाई वर्षाऋतु सुंदर आई ॥
नव पल्लव विटप अनेका शोभित तडाग सर सरिता ।
बहे त्रिविध समीर सुहाई वर्षाऋतु सुंदर आई ॥
कुसुमित वन शोहे उपवन मोहे नेक न भावे लछमन ।
हाये सुधि सीता नहीं पाई वर्षाऋतु सुन्दर आई ॥
सुग्रीवने मोहे बिसरा नृपमदमें हुवा मतवारा ।
नहीं खोज प्रिया करवाई वर्षाऋतु सुंदर आई ॥

लक्ष्मणजी—प्रभु मैं किष्किंधा जाऊं जो आयसु तुम्हरी पाऊं ।
सुग्रीवने छल किया भारी मिला राज कोष पुर नारी॥
हुवा लोभ मोहमें अंधा मूर्खको मैं समझाऊं ॥
जो कपट मित्रसे करेगा सो संकट विपत भरेगा ।
है धनुषबान कर मेरे मैं रघुपति भ्रात कहाऊं ॥

रामचंद्रजी—प्रिय भ्रात नगरमें जावो केवल भयही दिखलावो।
सुग्रीव सखा है मेरा बन गया कामका चेरा ॥
अवगुण चितमें नाहिं लावो प्रिय भ्रात नगरमें जावो ॥

सीन नं. ९.

(सुग्रीवका राजभवनमें तारा आदि स्त्रियोंसे प्यार करना.)

ठुमरी.

(तर्ज—चलती चपला चंचल चाल सुन्दर बाल अलबेली ।)

सुग्रीव—कैसी चंचल चलती चाल सुंदर तू मतवाली ॥
जोबनरस मदकी माती फिरती कैसी इतराती ।

सीन नं. ११.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रिय जानकीके वियोगमें पर्वतपर
दुःखित विराजमान होना.

गजल धुन बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज-गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी.)

रामचंद्रजी-दुखमें न कोई संगी मतलबका सब जमाना।
जाको बनावो अपना वहही बने बेगाना ॥
सुखयाके सबही साथी बन जावें लाखों नाती।
दुखियाको या जगतमें मिलता नहीं ठिकाना ॥
ईश्वर काहूपे विपता करके कृपा न डारें।
सब यार मित्र प्यारे करते फिरें बहाना ॥

(सुग्रीवका लक्ष्मणजीसहित आकर दंडवत् करना.)

सुग्रीव-महाराज ! तेरी मायाका अमित विस्तार है, कि जिसके वशमें सब संसार है, तेरी लीला अपार है.

दोहरा।

श्रीमद वक्र न जेहिं करे, प्रभुता बधिर न जाह।
मृगनयनीके नयन शर, लगे न धन्य है ताह ॥

(रामचन्द्रजीका सुग्रीवको कंठ लगाना.)

गजल धुन जिला कल्यान ताल पेश्ता.

(तर्ज-घरसे यहां कौन खुदाके लिये लाया मुझको.)

रामचंद्रजी-तूने तो मित्र मोहे दिलसे भुलाया हाय।
कैसी विपतामें मोहे ईश्वरने फँसाया हाय ॥

बनाऊंगा, सबको यमलोकका पंथ दिखाऊंगा, सुग्रीवको मित्रद्रोहीका दण्ड दूंगा, मूर्खके प्राण हरूंगा.

(ताराका राजभवनसे निकलकर लक्ष्मणजीको दण्डवत् करना.)

तारा–महाराज! क्रोध निवारो, हम दीनोंकी ओर निहारो, अपराध क्षमा करो, इस अबलापर कृपा करो, सुग्रीव महाराजका सखा है, इस समय बडा भयभीत हो रहा है, हम पामर जीव अतिकामी हैं, प्रभु कृपासागर स्वामी हैं, दासोंके अवगुण चित्तमें न लावो, चरणकमल फेरकर इस स्थानको पवित्र बनावो.

(लक्ष्मणजीका तारासहित भवनमें प्रवेश करना, हनुमान्जीका चरण धोकर लक्ष्मणजीको कोमल शय्यापर विराजमान करना, सुग्रीवका सीस निवाना.)

सुग्रीव–महाराज! विषयरूप मदिराने मुझको मतवारा बना दिया, सत्यव्रतसे विमुख करा दिया, हे दीनबन्धु नाथ! क्षमा करो, मेरी बुद्धिकी मलिनताई हरो.

(लक्ष्मणजीका सुग्रीवको कंठ लगाकर प्यार करना.)

लक्ष्मणजी–भाई! विलम्ब न करो, ऋष्यमूकपर्वतपर चलो, श्रीरघुराजसे मिलो.

(सबका चलना.)

सीन नं. १२.

(वानरोंका श्रीजानकीजीको खोजते हुए महावनमें आना और तृषासे व्याकुल होना.)

गजल धुन जिला ताल कवाली.

(तर्ज-भवे तानी हैं खंजर हाथमें है तनके बैठे हों.)

वानरगण—तृषासे प्राण ऐ भाई रहे अब कण्ठमें आई।
अधर सूखे जिया व्याकुल अंधेरी आंखोंमें छाई ॥
नहीं कोई कूप दृष्ट आवे सरोवर तो कहां पावे।
चला अब तो नहीं जावे हृदयमें पीर अधिकाई ॥
मरे बिन मौत इस वनमें लगी है आग अब तनमें।
तपै धरणी गगन सारा मृतु हमको यहां लाई ॥

(वानरोंका विकल होकर भूमिपर गिरना, हनुमान्जीका एक पर्वतकी शिखरपर चढकर चारों दिशाओंमें दृष्टि करना.)

हनुमान्जी—भाइयो! सामने जो एक पर्वतकी खोह दृष्ट आती है वह यह बतलाती है कि उसमें अवश्य कोई जलका आश्रम है, क्योंकि उसके पार चक्रवाक आदिक जलजन्तु उडते हैं, किलोल करते हैं, सो धीर्ज धरो, चलो उस खोहमें प्रवेश करो, भगवान् सम्पूर्ण क्लेश हरेंगे, हमारी सहायता करेंगे.

(सबका पर्वतकी कंदरामें प्रवेश करना.)

सोचूं क्या जाऊ कहां तडपूं हूं व्याकुल निशिदिन ।
खूब विपतामें मेरे काम तू आया हाय ॥
जीव भर्मे हे यूंही करता हे सो सो तदवीर ।
लेख कर्मोंका नहीं मिटता मिटाया हाय ॥

गजल धुन देसकार ताल चावर.
(तर्ज-अब समर्गका गम है जिदा बशरको ।)

सुग्रीव-चहूं दिश विदिशको मैं वानर पठाऊं ।
मैं जल्दी सियाजीकी सुधि अब मंगाऊं ॥
सकल खोह सरिता नदी कन्दरा गिर ।
वन और देश परदेश खोज अब कराऊं ॥
तजो स्वामि चिन्ता धरो धीर रामा ।
बुलाऊं मैं योधा न वार अब लगाऊं ॥

प्रिय हनुमान ! योधागण बुलावो, माताजीकी सुध लगावो, चारों दिशाओंमें जावो.

(वानरगणका आकर सुग्रीवको दण्डवत् करना.)

सुग्रीव-देखो मन कर्म और वचनसे जतन विचारो, जिस प्रकार बने जानकीजीका खोज लगावो, मास दिवसमें मुडकर आवो, जो कदापि जनकनन्दिनीका खोज नहीं करोगे. अवधीको यूंही बितावोगे तो सम्पूर्ण मेरे हाथसे मारे जावोगे,

(हनुमान्‌जीका रामचन्द्रजीको दण्डवत् करना.)

रामचन्द्रजी-मेरी यह मुद्रिका सीताको देना, प्रिय लक्ष्मण कुशलसे है यह कहना.

(सबका दण्डवत् करके चलना.)

हनुमान्जी—माता ! हम श्रीजनकनन्दिनी श्रीरघुराजकी भार्याके खोजमें फिरते हैं, अनेक प्रकारके क्लेश सहते हैं जो आपको कुछ सुधि हो तो बतावो, हमारी चिंता मिटावो.

देवांगना— दोहा ।

मूंदहु नैन अब तात तुम, त्यागहु सोच विचार ।
अवश तुम्हें मिल जांयगी, जनकसुता सुकुमार ॥
मैं अब जावत हूं तहां, बसत जहां रघुराज ।
जाय कमलपद राममें, हर्ष निवाऊं माथ ॥

(वानरोंका नयन मूंदना, देवांगनाका ईश्वरका ध्यान करना.)

सीन नं. १४.

(हनुमान् आदिकका समुद्रके समीप चिंता करना.)

ठुमरी धुन जिला पीलू ताल कहरवा.

(तर्ज—ऊधो दुनिया रैन बसेरा ।)

नलनील—सुधि सीताकी नहीं पाई अब कीजे कौन उपाई ।
बीतत हैं दो मास सखा अब कित खोजें हम जाई ॥
ढूंढ चुके सब ग्राम देश पुर का अब करें उपाई ।
उत्तर कौन देंह हम जाके जब पूछें रघुराई ॥
हा विधना जीवें हम केहि विध मरे मौत बिन आई ॥

अंगद—प्रिय बंधु ! अब तो सागरके तटपर आवो, कुशाके आसन बिछावो, ईश्वरसे ध्यान लगावो, निराधार बैठकर प्राण गँवावो.

सीन नं. १३.

(देवांगनाका अनेक वाटिकामें ईश्वरका भजन करना.)

अंग्रेजी वजन धुन त्रिधुग ताल कवाली.

(तर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू कर कर देख.)

देवांगना—

हे दुखभंजन जनमनरंजन दीनबंधु स्वामी खरार ।
कृपा करहु हरि मो दासीपे नाथ नहीं अब लावहु बार ॥
मैं तुम्हरी शरणागतमें हूं तुम हो दासोंके रखवार ।
पूरहु मन अभिलाष मेरी हरि जीव जंतुके तुम आधार ॥
प्रभु दीनबंधु राम तुमको मेरी प्रणाम ।
मैं मंदमति वाम रटती हूं तेरा नाम ॥
अब तो करो कृपा मोहे आसरा तेरा ।
अपना दर्श दिखा दासीकी यह पुकार ॥

(अंगद हनुमान् आदिक वानरगणका आकर दंडवत् करना.)

देवांगना—तुम कौन हो, किस कारण इस वाटिकामें आये हो, किसने पठाये हो ?

हनुमान्जी—भामिनी ! हम श्रीरघुनाथजी महाराजके दूत हैं, इस समय तृषासे अत्यन्त दुखित हैं, आज्ञा दो तो इस सरोवरमें स्नान करें, जल पान करें.

देवांगना—हां हां आनन्दसे मज्जन करो, मधुर फल भोजन करो.

(वानरोंका आनंद होकर स्नान करके वाटिकाके फलोंको भोजन करना और सबका देवांगनाके निकट आना.)

सम्पाति–यह देखो सिंधु जो खारी बहे है, उसीके मध्यमें लंका बसे है, तहांका भूप है एक दुष्ट रावण, है दस सिर वीस बाहु खल अपावन, सोई पापी सियाको ले गया है, बस अब जावो पता मैं दे दिया है, मैं तो जाता हूं अब महाराजके पास, बहुत मुदतमें अब पूरी हुई आस.

(सम्पातीका पक्षयुत होकर ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

छन्द।

रघुकुलकमल दशरथसुवन दीनोंके तुम्हही आधार हो।
तव नाम जो एक बार ले भवसिंधुसे सो पार हो॥
धरणी गगन जल थल बसो चेतन चराचर नाथ तुम।
खलदलनिकंदन जगतपति दीनोंको करहु सनाथ तुम॥
तेरी माया अपरम्पार है छिनमें विपत संकट हरे।
मतिमंद चंदन मोहवश संसारमें भरमत फरे॥

(सम्पातीका आनन्द होकर आकाशमें उड जाना.)

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

चतुर्थ भाग समाप्त.

सम्पाती–ईश्वर! तेरी लीला अपार है, तू सम्पूर्ण जीवोंका रखवार है, मैं क्षुधासे अत्यन्त व्याकुल हो रहा था, प्राण कंठ आ रहा था, परमात्मा! तोको धन्य है, मेरी चिन्ताको मिटाया, वानरोंको समुद्रका तटपर लाया, अब वह सब प्राण त्यागन करेंगे मेरा भोजन बनेंगे.

अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कवाली.

(तर्ज–जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

वानरगण–देखो देखो तुम ऐ भाई गीध यह सबको खावेगा।
हम तो सब अब प्राण तजेंगे यह भक्षण कर जावेगा॥
अंगद–कहि सोच करो तुम भाई ध्यान धरो अब श्रीभगवान।
देखो जटायूने तो त्यागे राजकाज लग अपने प्रान॥
सम्पाति–
क्यों मन चिन्ता करो ऐ वानर निकट मेरे अब तुम आवो।
था वह जटायू मेरा भाई कैसा मरा यह समझावो॥

(वानरोंका सम्पातिके निकट आना.)

अंगद–श्रीसरयूनदीके तीर भाई अयोध्यानामी एक बसती सुहाई, तहांके राजाके दो पुत्र सुन्दर, रहे मुनिवेष दंडकवनमें आकर, सो उनकी स्त्रीको कोई पापी, लिये जाता था छलकरके प्रतापी, तुम्हारा बंधुभी उससे लडा था, उसीके हाथसे रनमें मरा था, सो उसको खोजते हम खूब फिरे हैं, विनय तुमसेभी अब एक यह करे हैं, जो तुमको खोज हो तो कुछ बतावो, हमारी चिन्ता यह भाई मिटावो.

रात दिन रहती हूं बेदार, चोरोंको जहन्नुममें पहुँचाती हूं और उनके खूनसे पेटकी आग बुझाती हूं, अभी तुझको मुल्के अदमका रास्ता दिखाती हूं, चारीका मजा चखाती हूं.

(हनुमान्जीका लंकनीके मुष्टिक मारना और उसका रुधिरसे पूरित होकर पृथ्वीमें गिरना, हनुमान्जीका लंकामें प्रवेश करना.)

सीन नं. २.

(हनुमान्जीका बिभीषणके भवनके समीप मलीन मन बैठना.)

ठुमरी धुन जिला पीलू ताल कहरवा.

(तर्ज–ऊधो दुनिया रैन बसेरा.)

हनुमान्जी–

हाय सोचूं क्या कहां जाऊं कैसे दर्शन सीता पाऊं।
निश्चर घोर वसें लंकामें किसको हाल सुनाऊं॥
नहीं कोई सज्जन सन्त न ग्यानी कैसे भेद लगाऊं।
मंदिर मंदिर ढूंढ चुका हूं कौन उपाय बनाऊं॥
बिन देखे सीता रघुपतिको कैसे मुख दिखलाऊं॥

(बिभीषणका अपने भवनमें सन्ध्या करना.)

दोहरा ताल थाप.

बिभीषण–हे प्रभु दीनदयाल हरि, कृपासिंधु खरार।
भूमिदुखित मुनिजन त्रासित, बेग उतारो भार॥

(हनुमान्जीका विप्ररूपमें बिभीषणके भवनमें प्रवेश करना. बिभीषणका हनुमान्जीको दण्डवत् करना.)

बिभीषण–महाराज! आप कौन हो, कहांसे आये हो,

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र।

सुन्दरकाण्ड पांचवां भाग.

ॲक्ट नं. ५.

सीन नं. १.

(श्रीअंजनीकुमारका सागरके तीर एक पर्वतकी शिखरपर चढ़कर श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करना.)

प्रार्थना.

(तर्ज—आत्मामें गंग बहे क्यों न मन न्हावे.)

हनुमान्जी—दीनबन्धु नाथ स्वामी जगत्के आधार हो।
भीर जब संतन परी, सहाय नाथ तुम करी।
दयालु हो मोपे हरी सागरमें पार तार हो॥
ग्राह पकड गज लिया ध्यान तब करिवर किया।
आके तुर्त बचा लिया ऐसे प्रभू खरारि हो॥
प्रहलादको संकट पडा नरसिंहरूप तो धरा।
दुष्टसे लिया बचा चन्दनको अब निहारहो॥

(हनुमान्जीका पर्वतसे समुद्रमें कूदना, एक राक्षसका सागरमें प्रगट होना, हनुमान्जीका उसको मारकर सागरके पार जाना और रावणकी राजधानीमें प्रवेश करना, लंकनीका रोकना.)

लंकिनी—ओ नाहंजार मक्कार कैसा बेखौफ किलेमें आनेको हो रहा है तैय्यार, जानता नहीं मैं हरवक्त हूं होश्यार

सो आप कृपा करके यह बतावो, मेरा संदेह मिटावो, आप श्रीरघुनाथजी महाराजके दूत तो नहीं हो, जिनकी प्रिया जनकनन्दिनीको दुष्ट रावण हर लाया है, अशोकवाटिकामें छुपाया है.

हनुमान्जी—हा मैं श्रीजानकीजीकोही खोजता हूं, इस कारण तुम्हारे पास आया हूं कि कुछ सहायता करो, मेरा क्लेश हरो, कोई ऐसा उपाय करो कि जिस प्रकार मैं जगज्जननीके दर्शन पाऊं, महाराजको जाकर सुध सुनाऊं.

बिभीषण—महाराज ! मैं यह तो नहीं कर सकता हूं कि आपको साथ ले जाऊं, जगज्जननीसे मिलाऊं, हां सब भेद सुना सकता हूं, वह स्थान बता सक्ता हूं, जहां श्रीजानकीजी रहती हैं, पतिवियोगका संकट सहती हैं.

हनुमान्जी—प्रियमित्र ! मैं तुमसे यह भेद लेना चाहता हूं कि वह कौनसा स्थान है, जहां श्रीजानकीजी विराजमान हैं.

बिभीषण—इस लंकामें एक अशोकवाटिकानामी बड़ा रमणीक स्थान है, जिसकी यह पहचान है कि उस उपवनमें जितने वृक्ष लगे हैं, सब फल और पुष्प आदिक लताओंसे लदे हैं, सुगंधीसे सम्पूर्ण वन महक रहा है, राक्षसोंका पहरा लग रहा है, उसके मध्यमें गुफाके द्वारे एक सुंदर स्थान बना है, जो सब प्रकारकी सम्पदासे भरा है, जहां अनेक राक्षसी खड्ग लिये फिरती हैं, रातदिन उपवनकी रक्षा करती हैं, जो

क्या किसी दुष्टके सताये हो, क्योंकि आपका मन मलीन हो रहा है इस कारण विदित होता है कि आपपर अवश्य कोई विपता आई है जो चेहरेपर उदासी छाई है.

हनुमान्जी—हां मैं अत्यंत चिन्तामें डूबा हूं, इसी कारण तुम्हारे पास आया हूं, कि अपनी विपता सुनाऊं और तुमको सहायक बनाऊं, क्योंकि आप जैसे सज्जनोंसे कभी कार्यमें बाधा नहीं पडती है, अवश्य कुछ न कुछ लाभ होता है. मुनिजनने कहा है.

दोहरा—तरुवर सरवर संतजन, चौथे बादल मेंह ।
परस्वारथके कारणे, चारों धारें देह ॥

विभीषण—महाराज ! मैं तो अति दुष्ट पापी हूं, क्योंकि निशिचरपुरीका निवासी हूं, परन्तु इस समय मेरे पूर्व जन्मका कोई पुण्य उदय हो गया है, जो आप जैसे महापुरुषने दर्शन दिया है, निस्संदेह मैं तन मन धनसे चरणसेवा करूंगा, आपका टहलवा बनूंगा.

हनुमान्जी—प्रियमित्र ! नीतिशास्त्रमें लिखा है कि जो सज्जनोंसे दुराव करेगा वह पुरुष नरकका भागी बनेगा.

विभीषण—हां महाराज ! यहभी कहा है.

दोहरा—संतसमागम हरिकथा, जगमें दुर्लभ होय ।
सुत दारा और लछमी, पापिनकेभी होय ॥

सहूंगी जो पडे विपता नहीं मानूं तेरा कहना ।
पतिव्रतधर्म ना त्यागूं न कुलकीरत नसाऊंगी ॥
मेरे स्वामी हैं रघुराई दयालु नाथ सुखदाई ।
मेरा संकट मिटावेंगे उन्हींसे लौ लगाऊंगी ॥

ठुमरी ।

(तर्ज–अत्मामें गंग बहे क्यों नहीं मन न्हाये.)

रावण–मान प्यारी जान मेरी क्यों करे गुमान तू ।
कहता हूं मै हाथ जोड बैठ ना तू मुहको मोड ॥
देख जरा मेरी ओर कर तो इधर ध्यान तू ।
देख मेरी आनबान देख राजपाट शान ।
छोड दे तपस्वीका ध्यान मुझको पती जान तू ॥

अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कहरवा.

(तर्ज–जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

जानकीजी–
हट जा मूर्ख पापी नादां मत कर अब मुझसे तकरार ।
जोगी बनके लाया छलके शर्म नहीं आती बदकार ॥
देखी तेरी शानो शौकत छलिया जालिम तू मक्कार ।
यहां न तेरी दाल गलेगी कहती हूं तुझसे हरबार ॥
पापी यहासे जा मुझको न तू सता ।
बातें न अब बना सूरत न तू दिखा ॥

कोई आता है, उसको भक्षण कर जाती हैं, आनन्द होकर रावणकी जयजयकार सुनाती हैं, उसी स्थानमें श्रीजानकीजी रहती हैं, दुष्ट रावणका त्रास सहती हैं, सो महाराज कोई यत्न बनावो, जिस प्रकार यत्न उस वाटिकाके मध्यमें जावो, श्रीजानकीजीका दर्शन पावो.

(हनुमान्जीका विभीषणसे मिलकर चलना.)

सीन नं. १.

(श्रीजानकीजीका अशोकवाटिकामें उदास बैठना, रावणका मंदोदरी आदिक खवास लेकर आना.)

गजल धुन तिटा ताल कवाली.

(तर्ज–बहार आई है गुलशनमें अजब रंगत निराली है.)

रावण–प्रिय भामिन कहो कारण यह कैसी बेकरारी है।
दुखित है क्यों तेरा तन मन दृगनसे नीर जारी है॥
अलौकिक शोभा मृगनयनी हरणद्युतिचंद्र पिकबयनी।
अनोखी रूपकी राशी विधाताने सँवारी है॥
पियारी माधुरी मूरत बनी क्यों गमकी अब सूरत।
उठ ऐ प्रिय त्याग मन चिंता मोहे प्राणोंसे प्यारी है॥
यह लंका मेरी रजधानी बनो निश्चरपतीरानी।
मेरी मंदोदरी प्यारीभी अब चेरी तुम्हारी है॥

जानकीजी–तेरी चालोंमें ऐ पापी नहीं हरगिज मैं आऊंगी।
सता ले जितना जी चाहे धर्म्म नहीं मैं घटाऊंगी॥

किधर ख्याल है, मुझको तेरा खुद यह जिंदगी वबाल है, हाय देर न लगा अपनी तलवारकी मेरे खूनसे प्यास बुझा.

रावण—बस दो महीनेकी मोहलत देता हूं, अगर मान जावेगी तो आराम पावेगी, पटरानी कहावेगी, वरना पछतावेगी, आंखोंसे आंसू बहावेगी, अपने सरको मेरी तलवारसे जुदा करावेगी.

(रावणका रनवाससहित चला जाना.)

गजल.

(तर्ज—बेकली है आज दिल किनके लिये.)

जानकी—इस विपतमें कोई अब साथी नहीं ।
मौतभी तो संगई आती नहीं ॥
हाय जालिम मार दे तलवारसे ।
वज्रसम बानी सुनी जाती नहीं ॥
क्या करूं कैसे मैं खोऊं जान अब ।
जो जरूं तो अग्नीभी पाती नहीं ॥
भूमि माता गोदीमें तूही सुला ।
जिंदगी अब मुझको यह भाती नहीं ॥

(श्रीजानकीजीका विकल होकर पृथ्वीपर गिरना.)

गजल धुन सोहनी ताल पश्तो.

(तर्ज—मरहबा ऐ आशिके सादिक हमारे मरहबा.)

जानकीजी—

हाय स्वामी तुम विना लख्ते जिगर खाती हूं मैं।

लाया मुझे चुरा जब स्वयम्वर रचा।
सूझी तो उसमें था दिलमें जरा विचार ॥

रावण–चुप अय्यारा! छटी हुई मक्कारा मैं! तेरा अभी फैसला करता हूं, तल्वारकी तेरे खूनसे प्यास बुझता हूं.

(रावणका तल्वार सुनकर जानकीजीपर तल्वार उठाना, मंदोदरीका रावणका हाथ पकड लेना.)

मंदोदरी–महाराज! क्षमा करो. त्रियाके खूनमें हाथ न भरो.

रावण–खैर तुम्हारे कहनेसे इस वक्त छोड देता हूं. मगर मैं खूब जानता हूं कि जबतक यह अच्छा तरह सजा न पावेगी, अपनी शरारतसे बाज न आवेगी.

जानकीजी–ओ नाबकार तू मुझको क्या धमकाता है, डर दिखाता है, मैं खुद जिंदगीसे बेजार हूं, मरनेको तैय्यार हूं, डरती नहीं सफाकमें तेरे इताबसे, ले आके मार डाल तो छूटूं अजाबसे.

रावण–क्या तू मेरे क्रोधको काल नहीं मानती है जो ऐसी बेखौफ होकर बातें करती है, यह नहीं जानती है कि अब तू मेरे फंदेसे छुटकारा नहीं पा सकती है, मेरी रजधानीसे बाहिर नहीं जा सकती है.

जानकीजी–यह तो मैंभी मानती हूं कि तू मेरा काल है, मगर यहां मरनेका किसको मलाल है, जालिम तेरा

कर, मेरा क्लेश हर, तेरी नवीन कोपलेंभी अग्निके समान दृष्ट आती हैं, यह मुझको क्यों नहीं जलाती हैं, हाय मौतभी तो पास नहीं आती है, मेरे नामसे कोसोंही भाग जाती है.

(जानकीजीका व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरना हनुमानजीका वृक्षपरसे श्रीरामचंद्रजीकी अंगूठी फेंकना.

जानकीजी–अशोकवाटिका ! धन्य है, जो मेरी चिन्ता मिटाई, मेरे पास अग्नि पहुँचाई. (जानकीजीका अंगूठीको देख कर चकित होना.) हाय यह तो अंगूठी मेरे भर्तार प्राणोंके आधार रामचंद्रजी महाराजकी है, इस लंकामें किस प्रकार आई है ?

ठुमरी धुन खम्माच ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज–राम बिना आराम नहीं ।)

जानकीजी–

जानी न जावे आह विधाता अद्भुत तेरी माया है ।
यह अंगूठी प्रीतमकी है कौन यहांपर लाया है ॥
हा ईश्वर क्या और एक तूने गुल यह नया खिलाया है।
हैं अजीत प्रभु पीतम मेरे मोहे छलने कोई आया है ॥
यह किसी छलियाने आकरके जादूका जाल बिछाया है॥

हनुमान्‌जी– (वृक्षपरसे)

रामचंद्र महाराज प्रभू हैं भक्तन हित नरतनु धारा ।
मुनिकी यज्ञकी रक्षा कीनी दुष्ट सुबाहू संहारा ॥

यासो हसरतके सिवा अब कुछ नहीं पाती हूं मैं ॥
एक दिन वोह था कि खिदमतगार थे लाखों खडे ।
कौन पूछे आज हा तनहाही चिल्लाती हूं मैं ॥
क्या करूं जाऊं कहां किससे कहूं दरदे जिगर ।
आके रघस्वामी देखलो अब जानसे जाती हूं मैं ॥

(श्रीजानकीजीका पृथ्वीसे सिर मारना त्रिजटाका पकडना.)

त्रिजटा—सुन्दरी धीर्य धरो, करुणा त्यागन करो, भगवान् तुमपर कृपा करेंगे, तुम्हारे सम्पूर्ण क्लेश हरेंगे.

जानकीजी—हाय माता ! पतिवियोग नहीं सहा जाता, कहींसे अग्नि ला दे, चितामें लगा दे, मेरी यह योनी छुडा दे.

त्रिजटा—क्या तुम रघुनाथजी महाराजके प्रतापको नहीं जानती हो, जो इतनी घबराती हो, मरनेकी जीमें ठहराती हो.

जानकीजी—(हाथ जोडकर) हे माता ! थोडीसी अग्नि लादे, मेरा संकट मिटा दे.

त्रिजटा—अब तो रात्रि बहुत व्यतीत हो गई है, कहीं अग्नि नहीं मिल सकती है.

(त्रिजटाका चला जाना.)

जानकीजी—आह आकाशमें अंगारे चमकते हैं, पृथ्वीपर क्यों नहीं गिरते हैं, मुझको भस्म क्यों नहीं बनाते हैं, हाय यहभी तरसाते हैं, अशोकवाटिका ! तूही अपना नाम सत्य

जानकीजी–कहो आनन्दमें हैं प्राणआधार, मोहे भूले हैं क्यों दीननके रखवार.

हनुमान्जी–महाराज प्रियबन्धुसहित सब प्रकारसे आनन्दित हैं, परन्तु तुम्हारे विरहमें अत्यन्त दुःखित हैं, निशिदिन वियोगका संकट सहते हैं, चिन्तामें रहते हैं, जो कदापि सुधि पा जाते तो छिनमात्रभी विलम्ब न लगाते, लंकामें आकर दुष्टोंको यमलोक पहुँचाते, सो माता ! कुछ दिन धीर्य धरो, सोच त्यागन करो, महाराज शीघ्रही वानरीसेना-सहित आवेंगे, पापियोंको रणभूमिमें सुलावेंगे, तुम्हारा सम्पूर्ण कष्ट मिटावेंगे.

जानकीजी–भाई ! मुझको यह संदेह है कि तुम्हारी तो बहुत छोटीसी देह है. क्या सब वानर तुम्हारेही समान हैं ? यातुधान तो बडे बलवान् हैं.

(हनुमान्जीका अपना असली रूप प्रगट करके श्रीजानकीजीको दिखाना और फिर लघु स्वरूप धारण करके चरणोंमें सिर निवाना.

हनुमान्जी–हे माता ! हम वानरोंमें तो कुछ पराक्रम नहीं है, परन्तु महाराजके अग्निबाण छिनमात्रमें सम्पूर्ण राक्षसीसेनाको भस्म बना देवेंगे. यमपुरीका पंथ दिखा देवेंगे, मैं इस समय क्षुधासे अत्यंत व्याकुल हूं, जो आज्ञा पाऊं तो इस वाटिकाके कुछ फल फूल खाऊं.

धनुष तोड दिया बीच सभाके राजनके मदको मारा ।
मात पिताकी आज्ञा मानी देवनका कारज सारा ॥
चन्दन दो कर जोर कहे तेरी लीला है अपरम्पारा ॥

जानकीजी—श्रवणअमृत कथा जिसने सुनाई, नहीं वह सामने आता क्यों भाई.

(हनुमान्जीका वृक्षसे उतरकर जानकीजीके सन्मुख हाथ जोड- कर खडा होना, जानकीका मुँह फेर लेना.)

हनुमान्जी—मैं हूं सेवक श्रीरघुनाथजीका, मैं ही लाया हूं अंगूठी यह माता.

जानकीजी—मैं किस प्रकार तुमको महाराजका सेवक जानूं, कोई भेद बतावो तो मैं मानूं.

हनुमान्जी—देखो माताजी! जिस समय दुष्ट रावण तुमको आकाशमार्गसे ले जा रहा था, तो तुमने उस समय ऋष्यमूक पर्वतपर अपना आभूषण गिराया था, जिनको हमारे राजा सुग्रीवने उठाया था, जब श्रीरघुनाथजी महाराज तुम्हारे वियोगमें प्रियबंधुसहित ऋष्यमूकपर्वतपर आये तो सुग्रीवने वह आभूषण दिखाये और श्रीअयोध्यानाथ अपने मित्र बनाये, महाराजने उसके सम्पूर्ण क्लेश मिटाये, फिर सुग्रीवने चारों दिशामें वानर तुम्हारे खोजमें पठाये, सो माताजी उन- मेंसे एक मैं हूं, खोजता हुआ इस लंकामें आया हूं. निशा- नीकी यह मुद्रिका लाया हूं.

निशि दिन छतियां लगा मत प्यारे जला तू ॥ दिल-
बर आ मत मोको सता तू । पल छिन मोको कल
ना परत है दर्श दिखा पिया अब न रुला तू ॥ दिल-
बर आ मत मोको सता तू ॥

गजल धुन जिला ताल कव्वाली.

(तर्ज-भवें तानी हैं खंजर हाथमें है तनके बैठे हैं.)

शामप्यारी-

बहार आई है गुलशनमें सब फिरती है इतराती ।
किसीकी जुल्फ नागन खाके बल मुखडेपे लहराती ॥
हजारों दिल कुचल जावेंगे तडफेंगे पडे लाखों ।
जरा तो रहम कर मत शोख चल तू चाल इठलाती ॥
तेरी यह मांगही दिल मांगे लेती है मेरा जालिम ।
बला शोखी गजब तिरछी निगाह खंजरको शरमाती ॥
नजाकत देख तू चन्दन मेरे महबूब दिलबरकी ।
पडा जो बार गेसूका कमर लचकी तो बल खाती ॥

(वाटिकाके राक्षसोंका रोते पीटते आना.)

राक्षस-हाय मर गये, हाय मर गये, दुहाई है महाराज हाय गजब हो गया.

रावण-क्यों रोते हो सबब जल्दी बतावो, हुवा है क्या तुम्हें क्यों गुल मचावो.

राक्षस-महाराज ! एक बन्दरने अशोकवाटिकामें कोह

जानकीजी—यहां राक्षस बहुत रहते हैं योधा, करे हैं रातदिन उपवनकी रक्षा.

हनुमान्जी—नहीं उनसे तो डरता हूं मैं माता। मैं तो एक आपकी चाहता हूं आज्ञा.

जानकीजी—श्रीरघुराजका ध्यान धरके जावो, मधुर फल वृक्षपर पावो सो खावो.

(हनुमान्जीका जानकीजीको दंडवत करके चलना और वाटिकामें फलोंको खाना और वृक्षोंको तोडकर भूमिपर गिराना, राक्षसोंका चिल्लाना.)

अनी—कौन है जो इस तरह बेखौफ फिरता है, खाता है फलोंको नहीं कुछ दिलमें डरता है. बतला तू अपना नाम तो आया है क्यों यहां, शायद तुझे अजीज नहीं लगती अपनी जां.

अकंपन—नादां ! उसी तरहसे मुंह चलाये जाता है, दहशत नहीं जरासी तू हमारी खाता है.

(हनुमान्जीका राक्षसोंको पकड पकडकर पृथ्वीपर गिराना.

सीन नं. ४.

रावणका राजभवनमें बैठना अप्सराओंका नाच करना.)

ठुमरी.

(तर्ज—शाम रे मोरी बय्यां गहो ना.)

कामकंदला—

दिलबर आ मत मोको सता तू । तेरी यादमें तडफूं

सिय खोजन लंका आया रघुनायक मोहे पठाया।
लगी भूख मधुर फल खाऊं मैं रघुपतिदास कहाऊं ॥
जो मारे मोहे मैं मारूं नहीं तोहे खलसे हारूं।
मैं रामनाम गुण गाऊं सुन मूर्ख तोहे समझाऊं ॥
फल गूलरसम लंका कपि चंचल जीव अशंका।
अभी तोडके भूमि गिराऊं सुन मूर्ख तोहे समझाऊं ॥

(मेघनादका आकर हनुमान्‌जीसे युद्ध करना और ब्रह्मबाण मारकर हनुमान्‌जीको नागफांसमें बांध लेना.)

सीन नं. ६.

(रावणका दरबारमें बैठना, मेघनादका हनुमान्‌जीको नागफांसमें बांध लाना.)

मेघनाद्—महाराज ! इस मरदूदने तमाम बागको उजार दिया है, सब दरख्तोंको जडसे उखार दिया है, वाटिकाकी सब पटडयोंको गिरा दिया है, एक कोहराम मचा दिया है, मैंने बहुत चाहा कि नरमीसे पेश आऊं, आहिसतगीसे समझाकर दरबारमें ले आऊं, मगर यह ताबकार अपनी शरारतसे बाज न आया, दौडकर मुझकोभी एक मुक्का मार जमीनपर गिराया, नहीं मालूम यह कौन सौदाई है, शायद इसकी शामत यहां खैंच लाई है.

रावण—ओ बेवकूफ ! तू कौन है, कहांसे आया है किसवास्ते अशोकवाटिकाके दरख्तोंको गिराया है ?

राप मचा रखा है, सारा उपवन उजाड दिया है, मनोहर वृक्ष सब जडसे उखाडे, बहुत योधा पकडकर उसने मारे.

रावण—(अक्षयकुमारसे) प्यारे पुत्र! तुम उपवनमें जावो, अभी जिंदा पकडकर उसको लावो.

(अक्षकुमारका राक्षसी सेनासहित चलना.)

सीन नं. ५.

(हनुमानजीका अशोकवाटिकाके फलोंको खाना. अक्षकुमारका राक्षसीसेनासहित आना.)

ठुमरी धुन खम्माच ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज—राम बिना आराम नहीं.)

अक्षकुमार—

उपवन सुंदर सुभग हमारा, क्यों ऐ मूढ उजारा है।
बिटप मनोहर लता सुगंधित सबको भूमि डारा है॥
तू कौन कहांसे आया है क्यों रखवारनको मारा है।
यह लंका रावणरजधानी जाने सब संसारा है॥
इंद्रादिक यहां नीर भरत हैं तू तो कौन विचारा है॥

(हनुमानजीका अक्षकुमारको भूमिमें पछाडकर छातीपर चढ जाना. राक्षसीसेनाका भयभीत होकर भागजाना.)

भजन.

(तर्ज—यह जग है गोरख धंदा.)

[redacted]मान्‌जी—

सुन मूर्ख तोहे समझाऊं मैं रघुपतिदास कहाऊं॥

मारनेसे धर्म घटता है, अधर्म बढता है, बहादुरोंके नामको धब्बा लगता है, बेहतर है कि इसको दण्ड देकर निकाल दिया जावे ताकि यह जाकर अपने मालिकको सब हाल सुनावे, उसको यहां ले आवे और वह खुद इस गुसताखीकी सजा पावे, मेरे खयालमें यह बेकसूर है, आइंदा मर्जी हजूर है, क्योंकि कासिदका फर्ज है कि मालिकका हुकम बजा लावे, उसका फर्मान दुशमनको सुनावे.

रावण–अच्छा इसकी दुममें रूई लिपटा दो और तेलमें भिगोकर आग लगा दो, शहरपनाहका चक्कर देकर निकाल दो, मुश्कें खोल दो

(राक्षसोंका हनुमान्‌जीकी दुममें रूई लपेटकर तेलमें भिगोकर अग्नि लगा देना और बाजे बजाना. हनुमान्‌जीका कूदकर राजमंदिरपर चढ जाना और सम्पूर्ण राजधानीको भस्म करके सागरमें कूदकर शरीरसे अग्निको बुझाना, नल नीलआदिक बंदरोंसे सागरके तीरपर मिलना और सबका चलकर किष्किधापुरीमें मधुवनके वृक्षोंके फलोंको भोजन करना.)

सीन नं. ७.

(श्रीरामचंद्रजी महाराजका लक्ष्मणजीसहित ऋष्यमूक पर्वतपर श्रीजानकीके वियोगमें दुःखित बैठना.)

ठुमरी धुन जिला पीलू ताल कहरवा.

(तर्ज–ऊधो दुनिया रैन बसेरा.)

रामचंद्रजी–

प्रिय सीता प्राणपियारी तो बिन देह व्याकुल है सारी
उठत हृदेमें आग विरहकी बिन तेरे सुकुमारी ॥

हनुमान्‌जी—मैं उनही श्रीरामचन्द्रजी महाराजका सेवक हूं, कि जिनकी प्राणपियारी स्त्रीको तू चोर लाया है. अशोकवाटिकामें छुपाया है.

रावण—मालूम होता है कि तू जिन्दगीसे बेजार है, मरनेकी तैयार है, जनून तेरे सरपर सवार है.

हनुमान्‌जी—नहीं मालूम कौन जिन्दगीसे बेजार हो रहा है, किसके सरपर जनून सवार हो रहा है. मेरे खयालमें तो इस मजलिसकोही यह आजार हो रहा है.

रावण—ओ नाबकार नाहंजार, खबरदार खामोश हो जा. गुसताखींसे पेश न आ, वगरन अभी शम्शेरसे गर्दन उडा दूंगा. जहन्नुममें पहुँचा दूंगा.

हनुमान्‌जी—क्यों तैशमें आता है, पहाडको फूंकसे उडाना चाहता है, जो ऐसाही जोर था तो क्यों फकीरका भेष बनाया, पराई औरतको मक्कारीसे चुरा लाया, मैदान जंगमें क्यों न कदम बढाया, चोरीही करके घर चला आया, अभी होशयार हो, खाबगफलतसे बेदार हो, महारानी महाराजको सौंप आ, नादिम होकर सर झुका, वगरन याद रख पछतावेगा, जाहोहशमत खाकमें मिलावेगा, जानसे जावेगा.

रावण—मेरे दलेरो उठो, देर न लगावो, अभी इसको गुस्ताखीका मजा चखावो, मर्दूदका सिर जमीनपर गिरावो.

(राक्षसोंका उठना बिभीषणका रावणको दण्डवत करना.)

बिभीषण—महाराज! नीतिशास्त्रमें लिखा है कि दूतके

ठुमरी धुन रेखता ताल कवाली.

(तर्ज–बुता मैं क्या किया तेरा तू दुश्मन बन गया मेरा.)

हनुमान्जी–सुनो तुम जगत सुखदाई दयालू नाथ रघुराई ॥
प्रभु एक टापू है लंका कि जिसका कोट हैं बंका ।
वहांका राजा है रावण असुर एक मूढ दुखदाई ॥
भुजा हैं बीस दस सिर हैं निशाचर उससे सब कांपें ।
वह छलके ले गया सीता छुपाई लंकमें जाई ॥
न प्रभु अब तो करो देरी विनय यह मान लो मेरी ।
संहारो दुष्ट मूर्खको दुखित है जानकी माई ॥

(रामचंद्रजीका आनन्द होकर हनुमान्जीको कंठ लगाना.)

रामचंद्रजी–मेरी प्यारीकी सुध मुझको सुनाई, नहीं भूलूं तेरा अहसान भाई.

हनुमान्जी–तुम्हारीही कृपा मुझपर है स्वामी, मैं तो हूं एक बंदर नाथ कामी.

(वानरीसेनाका आकर पर्वतको घेर लेना टिबियांका एक लकडीका डंडा लेकर आना और दूरसे दंडवत करना.)

टिबियां–अजी श्रीरघुनाथजी महाराज ! दासकीभी दंडवत् मंजूर हो ताके यह मुर्दारभी मुल्कोंमें मशहूर हो, सरकार तो मुझको नहीं पहचानते हैं, मेरे बलको नहीं जानते हैं, इस वास्ते मैं खुदही सुना देता हूं, सबको बता देता हूं, मैं वह हूं जब अफीम घोलकर पी लेता हूं, चुस्की लगा लेता हूं, तो दीन दुनियासे बेखबर हो जाता हूं, पीनकमें सोता

स्वास समीर चलत है भारी फूंके तनको क्यारी।
निशिदिन मोको कल न पडत है सुधबुध सकल बिसारी॥
कित खोजूं कहं विध तोहे पाऊं देश कौनसे सिधारी॥

दोहरा ताल थाप.

देखो यह उपवन सुभग, फूल रहा ऐ भात।
बिना पियारी दर्शके, मोको नाहिं सुहात॥
खोज कहूं पाया नहीं, करहूं कौन उपाय।
विरहअग्नि तनमें उठत, जीव रहा घबराय॥
आई ऋतु सुंदर सुभग, फूला केसर क्यार।
बहुत वसंत सुहावना, मन है दुखित हमार॥

गजल धुन जिला बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज–गमसे जिगर है जलता नैनोंसे नीर जारी.)

हाये वसंत तूने मुझे खाकमें मिलाया।
बरबाद करके मुझको क्या हाथ तेरे आया॥
एवज यह कबका तूने मुझसे लिया अज़ालिम।
इतना हंसा न था मैं जितना कि अब रुलाया॥
क्या था हुआ है क्या अब कुछभी रहा न बाकी।
एक पलमें मिट गया सब नकशा जमा जमाया॥

(हनुमान्‌जीका सुग्रीव और जांबवंत आदिक सेनापतियों साहित आकर महाराजको दंडवत् करना.)

रामचंद्रजी–सुना देखी कहीं मेरी प्यारी, विरहमें जिसके है अब नीर जारी.

मजाल है जो मेरे पाससे निकलें और जान बचाकर चलें, बडे बडे खटमलोंका मार देना तो मेरे बायें हाथका खेल है, देखते जावो आगे आगे कैसा कडियल जवान बनूंगा अभी तो मेरी उम्रभी अलील है.

नल—शाबाश, शाबाश.

टिबियां—हां महाराज ! अभी तो मेरे दूधके दांतभी नहीं टूटे हैं. देखो तो सही मसूढे कैसे मोटे हैं. महाराज। मैं लंकामें तो अवश्य जाऊंगा, रावणपर जयभी पाऊंगा, परन्तु मुडकर नहीं आऊंगा, क्यों महाराज भाषा तो ठीक है ?

नील—हां हां सुनावो.

टिबियां—महाराज ! सुना है कि लंकामें स्त्री बडी मोहनी मूर्त है और मर्द काले भुजंगेदेवके सूरत हैं, ऐसा न हो कि कोई मेरी शोभापर रीझ जावे और सोतेको उठा ले जा.

नल—(तमांचा मारकर) चुप.

टिबियां—(खुजाकर) खैर सर्कारही थे जो मैं चुप हो गया, क्रोधरूपी अग्निको शर्बत जानकर पी गया, जो और कोई होता तो मजा चखा देता, पैर पकडके वृक्षमें लटका देता.

नल—अच्छा यह तो बतावो तुम्हारा नाम क्या है ?

टय्यां—बस महाराज ! मैं तो सुना चुका, कहींकाभी नहीं रहा, हाय मर गया, मैं तो यह सुनकर आया था, कि महाराजकी सेनामें लाडू बटते हैं, यह नहीं खबर थी कि सिरमें चांटे लगते हैं.

हूं, तो मुर्दोंसे शर्त लगा लेता हूं, लेकिन महाराज ! मात नहीं होता हूं, जब लडाईके मैदानमें चलता हूं, तो इतना अकडता हूं कि बाजेकी आवाजसेभी दम कदम पीछे रहता हूं, जब लडाई खतम हो जाती है, अपनी फौज फतह पाकर आती है तो अकेलाही आगे बढता हूं, सिसकते घायलोंपर तल्वार चलाता हूं, महाराज ! मैं फारसी खूब जानता हूं, हां असल बात तो भूल गया, मुर्दोंपर तल्वार चलाता हूं. चितामें मुर्दोंका खून बहाता हूं, सरोही और चाकूके हाथ दिखाता हूं. क्यों महाराज ! अब तो मान गये होंगे, कि मैं लडाईके सब करतव्य जानता हूं, बुलंद आवाजसे ललकारकर सुनाता हूं कि खबर्दार जागते रहो, नहीं नहीं खबर्दार हो जावो, किसीमें ताकत है तो सामने आवो, हमसे जवांमर्दसे आंख मिलावो, कुछ फन सिपाहगरी दिखावो, मगर अगर उनमेंसे कोई अधमुवा करवटभी बदल लेता है तो मेरे बदनमें इतना जोश आ जाता है कि उसी दम चक्कर खाकर धरणीपर गिर पडता हूं, फिर महाराज किसीके उठायेसेभी नहीं उठता हूं.

नल—बडे सूरवीर हो.

सिबिया—सूरवीरताईका कुछ न पूछो. जो रात्रीकी समय बिल्लीभी किवाड खडका देती है तो मेरी जान निकल जाती है, चुपकेसे चक्की तले दबक जाता हूं. परोलेसे मुंह छुपा लेता हूं; और बलका यह हाल है कि मक्खियोंकी क्या

महोदर—सुनो निशाचरकुलपति काहे करत विचार ।
नर और भालू कपि सब नाथ हमार अहार ॥

विभीषण—
सचिव सकल कहें नाथ अब जो मन ठकुरसुहात ।
मोरा विनय मानो प्रभू होय न भल इह भात ॥
एक वानरने आकर उपवन दिया उजाड ।
मारा अक्षकुमारको लंका दी सब जार ॥
क्षुधा न तब काहू रही अब कहें गाल फुलाय ।
नगर जारते ताहिको किसनेही लीन्हा खाय ॥

रावण—सुन भाई प्यारे मेरे देख तो धरके ध्यान ।
मोसम को है जगतमें शूर वीर बलवान ॥
इंद्रादिकसे तात मैं भरवावतहूं नीर ।
भुजबल जग विख्यात है कुम्भकरणसे बीर ॥

विभीषण—
तात चरण सिर नावहूं और कहूं कर जोर ।
सीता दो महाराजको विनय मानिये मोर ॥
कालरात्रि कुलनिश्चरन यह सीता सुन भ्रात ।
चौथचंद्रसम त्यागहू तासु वदन सुनतात ॥
रामचन्द्र महाराज है ब्रह्मरूप भगवान ।
वैरभाव त्यागन करो जो चाहो कल्याण ॥

रावण—मूर्ख ! कैसी बातें करता है क्या मेरा पराक्रम

नील—अच्छा कोई गाना सुनावो.

टप्यां—तो महाराज! बाजा बजवावो.

अंग्रेजी बजन.

(तर्ज—मन मैल मिटे तन तेज बढे दे रंग भंगका लोटा.)

मैं रावण मारूं सीता लाऊं तब पाऊं आराम ।
मैं तोपको छोडूं किलेको तोडूं सुनो श्रीघनश्याम ॥
अब अफीम खालूं नशा जमालूं तो होगा यह काम ।
दुख दूर गम दूर है दुनियामें नेको नाम ॥
मेरी चुनिया बेगम प्यारी तेरी सुरतपर बलिहारी ।
हर एक अदा तेरी न्यारी मेरी अकल गई है मारी ॥
ऐ जान पियारी हूर दिखा दे नूर आवे सरूर चकनाचूर ।
फिरूं मैं मस्त सुबह और शाम ॥

(महाराजका वानरीसेनासहित लंकापर चढाई करना.)

सीन नं. ८.

(रावणका दरबारमें बैठना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज—सुन रे काले देव रे.)

अनी—हाथ जोड विनती करूं सुनो निशाचर ईश ।
सिंधु पार सेना पडी अमित भालु और कीश ॥
रावण—कहो सचिव प्यारे मेरे अब का करूं उपाय ।
सिंधुतीर नृपसेन अब देखो पहुंची आय ॥

सीन नं. ९.

(विभीषणका महाराज रामचन्द्रजीके दर्शनोंकी अभिलाषामें चलना.)

विभीषण—अहो भाग्य हैं, जो मैं श्रीरघुनाथजी महाराजके दर्शन पाऊंगा, करोडों जन्मके पातक मिटाऊंगा, अयोध्यानाथका सेवक कहाऊंगा, उन चरणोंमें सिर निवाऊंगा, जो शिवजीमहाराजके हृदयरूपी कमलमें वास करते हैं, जिन्होंके सम्पूर्ण क्लेश हरते हैं, ब्रह्मादिक जिनका ध्यान धरते हैं.

दोहा—जिन पायन कहिं परसके, तरी अहल्या नार।
ते पद आज विलोकहूं, दीनबन्धु खरआर॥

सीन नं. १०.

(विभीषणका सागरपार महाराजकी सेनामें आना और वानरोंका विभीषणको शत्रुका दूत जानकर पकडकर सुग्रीवके पास लाना.)

सुग्रीव—तू कौन है, क्यों आया है, मतलब है तेरा क्या, अहवाल सुना जल्द, अब देर ना लगा.

विभीषण—रावणका छोटा भाई हूं मैं वानरोंके नाथ, आया हूं शरण आपकी मैं जोडूं दोनों हाथ.

सुग्रीव—रावणकी खैरख्वाहीसे क्यों मुह लिया है मोड, आया हमारे पास क्यों कुटुम्बको अपने छोड.

विभीषण—जौरो सितम वहां तो महाराज हो रहा, सुनता नहीं है मेरी कोई मैं बहुत कहा. अब तो हूं शरण

नहीं जानता है, मैंने अपनी भुजाओंके बलसे सम्पूर्ण ब्रह्मांडको वशमें कर लिया है, बडे बडे शूरमाओंको पृथ्वीमें मिला दिया है, बस भलाई इसमें है कि मेरी सभासे निकल जा, दुष्ट अपना मुँह न दिखा.

(रावणका लात मारना, विभीषणका हाथ जोडना.)

विभीषण—एक तो आप पिताके समान हो, दूसरे निशाचरपति बलवान् हो, इस कारण मैं आपके चरण दबाता हूं, दण्डवत् करता हूं, महाराज ! मान जावो जानकी रघुनाथजी महाराजको सौंप आवो, नहीं तो पछतावोगे, इस निशाचरकुलको रामकी क्रोधरूपी अग्निसे भस्म करावोगे.

रावण—चुप मुर्दार खबरदार, जबान न बढा, उठकर चला जा, फिर कभी मेरी सभामें न आ, जो और कोई ऐसी बातें करता तो अभी खड्गसे सिर उतार देता.

विभीषण—अब इस कुलके नाशका समय आ गया है, काल तेरे सिरपर मंडला गया है, इस कारण तू मित्रको द्रोही जानता है, शत्रुको हितकारी मानता है, अच्छा मैं तो श्रीरघुनाथजी महाराजकी शरण जाता हूं, मूर्ख ! फिरभी तुझको समझाता हूं.

अबभी अगर समझोगे तो आराम पावोगे ।
वरन कुटुम्ब परिवारको रणमें खपावोगे ॥

(विभीषणका चला जाना.)

दोहा ताल थाप.

विभीषण—मूढ मन्द खल कुमति मैं, प्रभु परिपूरणकाम ।
त्राहि त्राहि आरतहरण, जनसुखदायक राम ॥
मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर ।
करुणासागर नाथ हरि, हरहु विषम भवभीर ॥

(महाराजका विभीषणको कण्ठ लगाना.)

राम०—लक्ष्मणतेंभी अधिक हो, सखा प्रिय तुम मोह ।
त्यागहु चिन्ता लंककर, राज देहुँ मैं तोह ॥

(महाराज रामचन्द्रजीका विभीषणको लंकाका राजतिलक करना.)

राम०—देखो सिंधु गम्भीर यह, दुस्तर अगम अपार ।
कौन भांति लंकेश मैं, उतरूं सागर पार ॥

विभीषण—महाराज ! यद्यपि आपका अग्निबाण सम्पूर्ण ब्रह्मांडका जल सुखा दे, रावणकी रजधानीकी भस्म बना दे, तदपि नीति तो यह है कि सागरके तटपर जावो, उससे ध्यान लगावो, क्योंकि जलधिभी आपका कुलगुरू है, अवश्य कोई सुगम उपाय बता देगा, आपको सेनासमेत विना प्रयास पार लंघावेगा.

रामचन्द्रजी—सखा ! सत्य कहा है राजनीतिमें ऐसाही लिखा है.

(श्रीरामचन्द्रजीका सागरके तीर कुशाका आसन बिछाकर समुद्रसे सहायता मांगना.)

आपकी यह मान लीजिये, अपनी गुलामीमें मुझे मंजूर कीजिये.

सुग्रीव–ठहरो जरा महाराजके मैं पास जाता हूं. अहवाल सब तुम्हारा मैं प्रभुको सुनाता हूं.

(सुग्रीवका श्रीरामचन्द्रजीके समीप आना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज–सुन रे काले देव रे.)

सुग्रीव–रावणका एक भ्रात है जासु बिभीषण नाम।
शरण हमारी आया है करे दण्डप्रणाम ॥

रामचंद्र–शरणागतमें आवे जो उचित तासु सतकार।
कारण समझावो सखा का मन सोच विचार ॥

सुग्रीव–रावणका वह भ्रात है दुष्ट कपटकी खान।
भेद लेन हित आया हो कौन सके छल जान ॥

रामचन्द्रजी–
भेद लेन जो आया हो, तोभी नहीं कुछ हान।
छिनभरमें खलदल हतें मम भ्राताके बान ॥
शरणागतको जे तजहि हित अनहित अनुमान।
ते नर पामर पापमय कहं श्रुति वेद पुरान ॥

हनुमान्जी–
जय जय प्रभु कृपानिधाना। शरणागत रक्षक भगवाना ॥

(अंगद और हनुमान्जीका बिभीषणको आदरपूर्वक रामचन्द्रजीके समीप लाना, बिभीषणका दण्डवत् करना.)

सीन नं. ११.

(रावणका राजमंदिरमें बैठकर श्रीजानकीजीकी शोभा वर्णन करना.)

गजल.

(तर्ज—नजर लड गई, ख्वाबमें सोते सोते.)

रावण—किसी शोखसे दिल लगाये हुये हैं।
मेरी नजरोंमें वह समाये हुये हैं॥
नुकीले जहरीले खदंगे मिजाको।
कमां अब्रुमें वह चढाये हुये हैं॥
निगाहे कहर आलूदासे ताकते हैं।
निशाना मेरा दिल बनाये हुये हैं॥
कोई जुल्फपेचामें फंसकर न निकले।
गजबके यह फंदे बनाये हुये हैं॥
न चन्दन बचे मार गेसूका काटा।
यहां तंग आमिलभी आये हुये हैं॥

(शुक सारनका आना.)

शुक—महाराज! बडी अपार सेना आई है, टिड्डीदलके समान सब पृथ्वीपर छाई है, जिधर देखो सब वानरही वानर आते हैं, महाराज! हम तो उनकी भयानक सूरतसेभी भय खाते हैं, बडे बडे पर्वत आकार शरीरवाले योधा गरजते हैं और सब यह कहते हैं अभी हम रावणको पकड लावेंगे, मारकर समंदरमें बहा देंगे, बिभीषणको रामचन्द्रने अपना मंत्री बनाया है और उसने सागरपार उतरनेका यह उपाय बताया है कि प्रथम तो जाकर जलधिसे पंथ मांगो, उसका

(शुक और सारनका वानरीरूप धारण करके वानरीसेनामें विचरना, नलका उनको पकडकर सुग्रीवके समीप लाना.)

नल–महाराज ! यह दोनों रावणके दूत हैं जो कपटरूप धारण करके वानरी सेनामें विचरते हैं.

सुग्रीव–प्रथम तो उनको सम्पूर्ण सेना दिखावो, फिर कोई अंगभंग बनावो.

(वानरोंका शुक सारनको सम्पूर्ण कपिदल दिखाना और नाक कान काटनेपर तय्यार होना.)

शुक सारन–हाय मर गये, कृपा करो, छोड दो, अब भूलकरभी इस सेनामें नहीं आवेंगे, कपटरूप नहीं बनावेंगे, सीधे लंकामें चले जावेंगे, दुष्ट रावणको समझावेंगे, जिस प्रकार बनेगी, श्रीजानकीजी लादेंगे, देखो जो कोई हमारा नाक कान काटेगा वह श्रीरघुनाथजीका सेवक न कहावेगा, अधर्मीकी पदवी पावेगा.

लक्ष्मणजी–इनको अंगभंग न बनावो, हमारे समीप लावो.

(शुक सारनका लक्ष्मणजीको दण्डवत् करना.)

लक्ष्मणजी–यह मेरी पत्रिका दुष्ट रावणको देना, यह कहना कि श्रीरघुराजके प्रियबन्धुने यह पत्रिका दी है और यह कही है कि या तो श्रीजानकीजीको लेकर महाराजकी शरण आवो, अपना अपराध क्षमा करावो, नहीं तो रामकी कोपरूपी अग्निमें तेरा पतंगरूपी कुल भस्म हो जावेगा.

(शुक सारनका पत्रिका लेकर दण्डवत् करके चलना.)

छन्द.

(तर्ज-भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी.)

समुद्र-

जय जय सुखसागर सबगुणआगर प्रणतपाल रघुराई ।
खलदुष्टनिकंदन भवभयभंजन दीननके सुखदाई ॥
तेरा नाम न रूपा अकथ अनूपा भेद न काहू पाया ।
मैं जड मतिहीना तव आधीना मायामें भर्माया ॥
अब क्रोध निवारो मोह उभारो नाथ बन्धावो सेता ।
वंदन सिर नावे विनय सुनावे उतरहु सेनसमेता ॥

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

पञ्चम भाग समाप्त.



निरादर न करो, जो नहीं मानेगा तो अग्निबाणसे भस्म हो जावेगा, सो उसका मंत्र मानकर रघुनाथजी सागरके तटपर गये हैं; उससे पंथ मांग रहे हैं.

रावण–बस बस मैं सब कुछ समझगया, जियादा न सुना. जिसके बिभीषण जैसे वजीर हैं तो वह बडेही रणधीर हैं. बडे पूरे मक्कार हैं, देखो तो कैसे अय्यार हैं, समुद्रको धमकाते हैं, जडवस्तुपरभी सिक्का जमाते हैं, रस्ता मांगते हैं, मेरी लंकामें आना चाहते हैं, यह नहीं जानते हैं कि मौत यहां उठा लाई है, कहांकी मक्कारी फरमाई है.

सारन–लीजे महाराज! रामचन्द्रजीके भाईने यह पत्रिका दी है और जबानी यह कहा है कि समझ जावो नहीं तो पछतावोगे, रजधानीका नाश करावोगे.

(रावणका पत्रिका पढना और क्रोधमें आकर फाड देना.)

रावण–अभी इस गुस्ताखीकी मजा चखाऊंगा. इस तल्वारकी उनके खूनसे प्यास बुझाऊंगा.

सीन नं. १२.

(रामचन्द्रजीका सागरके तीर बिराजना.)

रामचन्द्रजी–लक्ष्मण! मेरा धनुष बाण लावो, विलम्ब न लगावो, मैं अभी अग्निबाणसे सम्पूर्ण जल सुखाऊंगा, सेनासहित पार जाऊंगा.

(श्रीरामचन्द्रजीका अग्निबाण संधाना समुद्रका विप्ररूप धारण करके प्रकट होना.)

आरती.

रामचन्द्रजी–जय भोले शिव शंकर जग संकटहर्ता ।
गणनायक वरदेवा त्रिभुवन सुख कर्ता ॥
नीलकंठ तन सुन्दर शशि मस्तक सोहै ।
शीश जटामें राजै पावन सुरसरिता ॥
जीवजन्तु हितकारी तुम त्रियलोकपती ।
कामआरि खलमर्दन दुष्टन संहरता ॥

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रियबन्धु और सुग्रीवसहित शिवजीको प्रणाम करके सेनासहित सेतुबन्धके द्वारा सागरसे पार उतरकर सुवेलपर्वतपर विराजमान होना.)

सीन नं. २.

(मंदोदरीका राजभवनमें सहेलियों सहित उदास बैठना.)

ठुमरी.

(तर्ज–यह जग है गोरख धन्दा.)

मंदोदरी–
मेरा जीव सखी घबरावे । कोई विपता हमपे आवे ॥
क्यों दहन अंग फरकत है । मेरा आह जिया धरकत है ॥
काहे आज उदासी छाई । ईश्वर अब क्या दिखलावे ॥
मोहे खोट स्वपन निशि आया । व्याकुल है मेरी काया ॥
होहैं अशगुन भयकारी । रोनाही मोको भावे ॥

निश्चरी–
महाराजने हठ जिय ठानी । नहीं बात विभीषण मानी ॥

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र ।

युद्धकाण्ड षष्ठ भाग.

ॲक्ट नं. ६.

सीन नं. १.

(श्रीरामचन्द्रजी महाराजका प्रियबन्धु और वानरीसेनासहित सागरके तीर विराजमान होना, सुरसमूहका आकर, स्तुति करना.)

ठुमरी धुन सारंग.

(तर्ज–धन्य तिहारो ब्योहार ऊधोजी.)

देवतागण–

रावणने संसार सारा सताया । देवसुता गन्धर्व
किन्नरा । सबकोहीं पापीने लंका पहुँचाया ॥ गो
द्विज धेनु देव मुनिवृन्दा । व्याकुल हैं जालिमने
सबको रुलाया ॥ शुभ कारज कहुँ होन न पावे ।
भूमिपै मूर्खने दुंद एक मचाया ॥ भार उतारो
असुर संहारो । चन्दन तुम्हारी शरण स्वामी आया ॥

(देवतागणका दण्डवत् करके चला जाना, श्रीरामचन्द्रजीका सेतुबन्धके निकट शिवमंदिरमें पूजन करना.)

रावण–तू सुन ऐ प्यारी क्यों मन भय है खाई।
जगतमें विदित है मेरी प्रभुताई॥

मंदोदरी–यह छांडो गर्व दिलमें सोचो विचारो।
नहीं चाहिये करनी उनसे लडाई॥

रावण–चलूं तो मेरे बोझसे डोले धरनी।
कहो काह कारण तू का मन डरानी॥

लावनी धुन बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज–मुख चंदा केसा नयना तेरे कटारी.)

मंदोदरी–तुम देवो प्यारे कंथ रामकी नारी।
मत करो युद्ध यह मानो बात हमारी॥
एक वानरने पिया आके सब बाग उजारा।
रण बीच तुम्हारा अक्ष पुत्र संहारा॥
एक छिनमें उसने सब लंकाको जारा।
जो था तो जोर तब उसको क्यों नहीं मारा॥
क्या लडोगे उनसे कहां है ताव तुम्हारी।
अब देवो प्यारे कंथ रामकी नारी॥

रावण–क्यों खाती दहशत सुन तू प्राणपियारी।
है जोधा कौनसा मेरे सम बलधारी॥
तू जाने मेरा जोर भुजा बल रानी।
मैं अगणित डाले मार भूप अभिमानी॥
सब दिगपालनसे भरवावत हूं पानी।

हित मंत्र कहत धमकाया । कायर उसको ठहराया ॥
फिर राजसभासे निकाला । सुन निश्वर कुलपति रानी ॥

मंदोदरी—

प्यारी वेग सभामें जावो । महाराजको यह समझावो ॥
मयसुता विकल है भारी । तन मनकी सुरत बिसारी ॥
चलो राजभवन सुरआरी । दर्शन अपना दिखलावो ॥

(वनचरीका दंडवत् करके चलना.)

योगिनी—महारानी ! हमारे शत्रुओंने तो अब समुद्रपर सेतु बांध लिया है, सुवेलपर्वतपर डेरा कर लिया है, सम्पूर्ण रजधानीको घेर लिया है.

(रावणका राजभवनमें आना, मंदोदरीका दंडवत् करना.)

चौबोला धुन किदारा ताल पंजाबी ठेका.

(तर्ज–सुन रे काले देव रे ।

मंदोदरी—सागर बांधा सेतु है सुनो निशाचर ईश ।
सिंधुपार सेना भई सकल भालु और कीश ॥

रावण—कुम्भकर्णसे बंधु मम सुत प्रसिद्ध शक्कार ।
मम भुजबल जाने प्रिय का मन सोच विचार ॥

गजल धुन देसकार ताल चाचर.

(तर्ज–जवानीमें क्या होगा जोबन किसीका.)

मंदोदरी—सुनो प्यारे पीतम जो चाहो भलाई ।
तो मानो पिया उनसे कर लो मिताई ॥

सीन नं. ४.

(रावणका राजसभामें आनन्द मनाना.)

गजल धुन जिला ताल कव्वाली.

(तर्ज–भवें तानी हैं खंजर हाथमें है तनके बैठे हो.)

कामकन्दला–

पिला दे अब कोई मुझको मये गुलनार ऐसा की।
तरंग हो चौगनी पर होवे कम मिकदार ऐसा की॥
सबा करती है अटखेली सनम पहलू बपहलू है।
चखादे चाशनी तूभी न कर तकरार ऐसा की॥
मजा है जिंदगीका यह कि मिल बैठें हँसें बोलें।
हो दौरे बाद ये गुलगूं बिलाइसरार ऐसा की॥
रहे ताके अबद आबाद चन्दन मैकदा तेरा।
समनके साथ मैं पीया करूँ हरबार ऐसा की॥

(अंगदका आना.)

ठुमरी।

रावण–तू कौन तू कौन कपी है रहे कहां है क्या है तेरा नाम।
अंगद–मैं वाली मैं वालीका हूं बेटा रावण अंगद मेरा नाम॥
रावण–तू आया तू आया क्यों है बता सभामें क्या है तेरा काम।
अंगद–मैं हूं कासिद उन्हीं रघुनाथजीका। कि। जिनकी प्यारी तू हर लाया सीता॥ न कुछभी शर्म दिलमें तुझको आई। कि होके शाह एक औरत चुराई॥ नहीं अबतकभी कुछ बिगडा है तेरा। तू जल्दी मान ले

प्यारी जान वृथा तू काहेको भय मानी ॥
मैं निश्चरपति लंकेश विदित सुरआरी ।
हैं जोधा कौनसा मेरे सम बलधारी ॥

(रावणका मन्दोदरीको कण्ठ लगाकर प्यार करना.)

सीन नं. ३.

(श्रीरामचन्द्रजीमहाराजका वानरीसेनामें विराजमान होना.)

अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कवाली.

(तर्ज–लपको लपको मारो इसको पावे जिनहार.)

वानरगण–

सृष्टी रचता पालनकर्ता संकटहर्ता सुखराशी ।
निर्गुण निराकार सर्व व्यापक चिदानन्द घटघटवासी ॥
मुनिजन सज्जन ध्यान धरत हैं रटैं उमापति कैलासी ।
सगुणरूप सचराचरनायक अजर अमर प्रभु अविनाशी ॥

रामचन्द्रजी–सखा सुग्रीव! अब कौन उपाय करूं? किस प्रकार रावणसे लडूं?

सुग्रीव–महाराज! वालिकुँवरको दूत बनावो, रावणकी सभामें पठावो, जो सब प्रकार उसको समझावे, राजनीति सिखावे.

रामचन्द्रजी–प्रिय अंगद! तुम बलबुद्धिके निधान, वालिके समान बलवान् हो, रावणकी सभामें जावो, ऐसा उपाय बनावो, जिसमें मेरा काज और उसका कल्याण हो.

(अंगदका दण्डवत् करके चलना.)

जमींप डालो इसको जल्दी बल दिखलावो ललकारो॥
पडे है जितने बंदर बाहर जल्दी सबको संहारो।
हनुमान सुग्रीव बिभीषण पकड बंदीखाने डारो॥
क्यों देर तुम करो सब मिलके चल पडो।
दिलमें न कुछ डरो जल्दी अभी लडो॥
खावो सभीको जाकर फिर सिर झुकावे आकर।
तपस्वीको यहां लाकर सिर उसका तुम उतारो॥

(राक्षसोंका अंगदका पाव उठाना, परन्तु किसीसे पांव न उठना और सबका बैठ जाना.)

अंगद-

देखा तूने मूर्ख नादां मेरे ताकत बलको अब।
नहीं किसीसे पांव उठा है हार चुके यह जोधा सब॥
बुला कोई अब और सूरमा फिर वह काम आवेगा कब।
लानत मूर्ख नादां तुझको शर्म नहीं आती है अब॥

(रावणका अंगदका पर उठाने झुकना, अंगदका पैर उठाकर ललकारना.)

अंगद-मूर्ख! मेरे पांवमें क्यों पडता है, महाराजके चरणोंमें सिर क्यों नहीं निवाता है, कि जिससे तेरा कल्याण हो, तेरे जीवका दान हो.

(रावणका सिंहासनपर विराज जाना.)

मेघनाद-महाराज! चिंता न करो, मुझको आज्ञा दो, अभी जाकर सम्पूर्ण वानरी सेनाका नाश कर दूंगा, सबके प्राण हर लूंगा.

कहना यह मेरा ॥ अभी महाराजजीसे मिल तू जाकर। दे सीता और कहो यह सिर झुकाकर ॥ हुई है मुझसे गलती बख्श दीजे । मेरी जानिबसे दिल अब साफ कीजे ॥

रावण–कहां है अकल ऐ नादान तेरी । अभी देखूंगा मैं उनकी दलेरी ॥ मेरा है नाम रावण सुन तू नादां। लडेगा मुझसे क्या नाचीज इंसां ॥ कजा उसको उठा लाई यहांपर । नहीं हो सकता है हरगिज वह जांबर ॥

अंगद–तेरी ताकत सभी मैं जानता हूं । तू है रावण मैं सब पहचानता हूं ॥ सहस्रबाहूसे लडने गया था। बगलमें तूही वालीके रहा था ॥

रावण–चुप ऐ शैतान क्यों बातें बनावे । सिफत वालीकी क्या मुझको सुनावे ॥ अभी दोनों फकीरोंको मैं जाकर। पकडकर कैद कर दूंगा यहांपर ॥

अंगद–जमाता हूं कदम मैं देख नादां। उठावेगा कोई गर सको इसआं ॥ तो सीता हारकर मैं उलटा जाऊं। हीं फिर लडने तुमसे हरगिज आऊं ॥

अंग्रेजी बजन धुन सिंधुरा ताल कहरवा.

(तर्ज–जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

रावण–उठो उठो ऐ मरदानो पकडकर इसको दे मारो।

सीन नं. ६.

(मेघनादका लंकाके कोटके द्वारपर खडा होकर ललकारना.)

मेघनाद–मैं उस प्रतापी रावणका पुत्र हूं कि जिसने कैलासपर्वतको हाथपर उठा लिया, कबीर आदिक देवताग णको कैदी बना लिया, बडे बडे बहादुरोंको खाकमें मिल दिया, अपनी प्रभुताईका जहानमें सिक्का बिठा दिया, आज यह मेघनादभी घोर संग्राम मचावेगा, अपनी उन भुजाओंका पराक्रम दिखावेगा कि जिनके बलसे इंद्रका मान मारा है, ऐरावत हस्तीका दांत उखाडा है, वह रामचंद्र कौन है जिसने यह कोहराम मचाया है, लंकापर धावा करने आया है, वह नाबकार विभीषण कहां छुप गया है, जो राक्षसी कुलसे विमुख हो रहा है. होश्यार हो जाओ, सामने आवो, मैं अभी तल्वारसे सबका सिर उडा दूंगा, मुल्कें अदमका रास्ता दिखा दूंगा.

लक्ष्मणजी–दुष्ट कैसी बात बनाता है, पहाडको फूंकसे उडाना चाहता है, देख मैं आता हूं, अभी तुझको यमलोक पहुंचाता हूं, श्रीरघुनाथजी महाराजका प्रताप दिखाता हूं मैंभी रघुराजका प्रियबंधु कहाता हूं.

(लक्ष्मणजी और मेघनादका युद्ध, मेघनादका घोर संग्राम करके लक्ष्मणजीके हृदयमें ब्रह्माकी दी हुई शक्ति मारना, लक्ष्मणजीका बेसुध होकर पृथ्वीमें गिरना.)

मेघनाद–वह मारा वह मारा सरे मैदान पछाडा, कौन है जो मेरे मुकाबलेमें आ सके, रणभूमिमें कदम जमा सके

रावण—अच्छा प्राणप्यारे! जावो, शत्रुओंको मारकर जल्द आवो.

सीन नं. ५.

(श्रीरामचन्द्रजीका पर्वतपर विराजमान होना, अंगदका आकर दण्डवत् करना.)

अंगद—महाराज! रावणको बहुत समझाया परन्तु मूर्खकी समझमें कुछ नहीं आया.

रामचन्द्रजी—लक्ष्मण! धनुष बाण उठावो, अंगद हनुमान् आदिक योधाओंके साथ जावो, रणभूमिमें सूर्यवंशी कुलकी प्रभुताई दिखावो.

(लक्ष्मणजीका महाराजको दण्डवत् करके रणभूमिमें चलना.)

अंग्रेजी वजन.

(तर्ज—तोरी छलबल है न्यारी तोरी कलबल है न्यारी.)

लक्ष्मणजी—आवो आवो ऐ भाई कदो लंकाकी खाई।
करो जल्दी चढाई न लावो वार॥
देखो किला कठिन रहा सोरनसे बन।
जापै सूरजकिरन देवें कैसी बहार॥
दौडो दौडो आवो पर्वत उठावो।
करो जल्दी अब चलकरके रावणपे वार॥
खञ्जर नेजा उठावो तीर कमां चढावो।
कुवत बाजू दिखावो प्यारे वाह वाह वाह॥
वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह॥

मिटता नहीं मिटाये कर्मोंमें जो लिखा है ।
सोरनका मृग बनके लक्ष्मणका काल आया ॥
माताजी जब सुनेंगी तो मुझको क्या कहेंगी ।
एक स्त्रीके कारण प्रियबन्धुको गँवाया ॥

(हनुमान्‌जीका सुषेण वैद्यको लंकासे उठाकर लाना और वैद्यका लक्ष्मणजीकी नाडी देखना.)

सुषेण–महाराज ! लक्ष्मणजी अच्छे हो जावेंगे, शत्रुपर फतह पावेंगे. क्योंकि कलेजा बदस्तूर गर्म जल रहा है, गोसांस रुकरुककर चल रहा है, नबज अगर्चे सुनाई नहीं देती है, मगर दिलकी हरकत बता रही है, कि अभीतक कोई बात नहीं बिगडी है, अलबत्ता एक दिक्कत पडी है वह यह है, कि कोई द्रोणाचलपर जावे, सूर्य निकलने न पावे, रातही रातमें सजीवनमोर ले आवे, घोटकर पिलावे, थोडी कूटकर घावपर लगावे तो लक्ष्मणजीका कष्ट दूर हो जावे, मगर यहभी ध्यान रहे जो सूरजनारायण उदय हो जावेंगे तो फिर लक्ष्मणके प्राण न रहने पावेंगे.

पद धुन मांड.

(तर्ज–बादला वेगी आयो रे.)

रामचंद्रजी–
कोई गिरि द्रोणाचलपर जा सजीवनमोर पिलावे ला ।
भरत अयोध्यामें बसे व्याकुल मेरा शरीर ॥

अभी उसको उठाकर लंकामें ले जाता हूं, महाराज रावणको दिखाता हूं, बडा जवांमर्द बनके आया था, मुझसे शेर दिलसे लडनेका खब्त समाया था, नहीं जानता था कि मेरा बाण कालके समान है, देख लिया न। आखिरको मेरेही हाथ मैदान है.

(मेघनादका लक्ष्मणको उठाना, हनुमान्‌जीका दूरसे ललकारना.)

हनुमान्‌जी—ओ जालिम ठर, क्या करता है, कहांकी बहादुरीमें पैर धरता है, दुष्ट मैं आता हूं, अभी तुझको यम-लोकका पंथ दिखाता हूं, देखूं तू किस प्रकार जान बचाकर जावेगा, क्योंकर मेरे हाथसे छुटकारा पावेगा.

(मेघनादका भयभीत होकर भाग जाना, हनुमान्‌जीका लक्ष्मणको उठा लेना.)

सीन नं. ७.

(रामचन्द्रजीका मूर्छित लक्ष्मणजीको हृदयसे लगाकर विलाप करना.)

गजल धुन जिला ताल कवाली.

रामचन्द्रजी—

अफसोस हाय किसमत यह गुल नया खिलाया।
जाऊं कहां क्या सोचूं कैसा यह दिन दिखाया॥
सीताको संग न लाता वनमें अकेला आता।
लछमनको क्यों खपाता तकदीरने रुलाया॥

बार बार बार मोरे प्यारे ॥ दशरथका बेटा कर्मोंका
हेटा रोरो करे पुकार पुकार पुकार मोरे प्यारे ।
राजभी खोया भाई खपाया खो बैठा प्यारी वह नार
नार नार मेरे प्यारे ॥

मेघनाद—महाराज ! एकको तो मैदान जंगमें सुला दिया है, इस मेघनादने तल्वारकी आगको लक्ष्मणके खूनसे बुझा दिया है, रामको अकेला बना दिया है, उसका प्रियबन्धु खपा दिया है, राक्षसीकुलकी प्रभुताईको रणमें प्रगट करके दिखा दिया है, वैरीको खाकमें मिला दिया है, अपनी शूरवीरताईका सिक्का दुश्मनके दिलपर बिठा दिया है.

(रावणका मेघनादको कण्ठ लगाना.)

महोदर—महाराज ! हनुमान् सजीवनमोर लेने द्रोणाच ऊपर गया है, सो कोई ऐसा उपाय करो कि सूरज उदय हो जावे और सजीवन मोर न आने पावे.

रावण—मैं अभी कालनेमिके पास जाता हूं और उसको समझाता हूं.

(रावणका उठकर चलना.)

सीन नं. ९.

(कालनेमिका अपने भवनमें उदास बैठना.)

कालनेमि—आज मेरा कलेजा क्यों उछलता है, दि

तुम विन हनुमत अब मेरी कौन बंधावे धीर।
मेरे बंधुके प्राण बचा अभी गिरिद्रोणाचलपर जा॥

हनुमान्जी—महाराज! मैं जाता हूं, अभी सजीवनमोर लाता हूं, चरणोंमें सिर निवाता हूं, आपके प्रतापसे जो हुक्म हो तो रातभरमें सम्पूर्ण ब्रह्मांडके समुद्रोंको सुखा दूं, पर्वतोंकी जगह दरिया बहा दूं, रावणकी राजधानीका नाश बना दूं, मगर यह बता दीजिये, मेरा संदेह मिटा दीजिये, कि सजीवनमोर कैसी होती है, किस रंगकी उसकी पत्ती होती है, पर्वतपर किस तर्फ उगती है.

सुषेण—द्रोणाचलकी जो सबसे ऊंची चोटी है उसीपर सजीवनमोर लगती है और उसकी यह पहचान होती है, कि उसके पास निशिदिन दीपकके समान रोशनी रहती है, जिस औषधीके पास प्रकाश पावो जान जावो कि सजीवनमोर है, उसीको उपाडकर ले आवो, अच्छा देर न लगाओ.

(हनुमान्जीका दंडवत् करके चलना.)

सीन नं. ८.

(रावणका राजसभामें बैठना, राक्षसीसेनाका आनंदित आना.)

ठुमरी.

(तर्ज-गुलशनमें आई बहार बहार बहार मोरे प्यारे.)

राक्षसीसेना—

लछमनने खाया कटार कटार कटार मोरे प्यारे।
खून हुवा जारी गश हुवा तारी त्योराके गिरा एक

सीन नं. १०.

(श्रीजानकीजीका अशोकवाटिकामें मलीनमन बैठना.)

गजल धुन बिहाग.

(तर्ज—बेकली है आज दिल, किनके लिये)

जानकीजी—खुदबखुद उमडा कलेजा आता है ।
दिल मेरा हाये क्यों बैठा जाता है ॥
आह ईश्वर क्या है कारण आज यह ।
किसलिये रोनाही मुझको भाता है ॥
निशि लगे अंधेर खिल रहा चन्द्रमा ।
कर्म यह उत्पात विधि दिखलाता है ॥

(त्रिजटाका आना.)

ठुमरी.

(तर्ज—होवे जयजयकार.)

जानकीजी—मोरी प्यारी आ मोरी प्यारी आ मोरी प्यारी आ मोहे अब सुना । रणका हाल अब मोहे सुना सब किस किसका संग्राम हुवा है ॥ मैं तो तकती थी राह अब तुम्हारी प्यारी न देर अब लगा । मोरी प्यारी आ मोरी प्यारी आ मोरी प्यारी आ ॥ क्यों न बोले लब नहीं खोले क्या कारण है बेग सुनावो ॥ तेरे चेहरे क्यों छाई उदासी जल्दी मोहे तू सुना ॥

फड़कता है, मालूम होता है कि जरूर कोई विपता आवेगी, बाईं आंखभी फडक रही है, देखो क्या दिखावेगी.

(रावणका आना, कालनेमिका दण्डवत् करना.)

रावण—देखो रामचन्द्रके भाई लक्ष्मणके सीनेमें बहादुर मेघनादने शक्ति मारी है, जिसने उसपर आलिमबेखुदी तारी है, जो सुबहतक सजीवनमोर न आवेगी तो उसकी जान निकल जावेगी. सुना है कि हनुमान् द्रोणाचलपर जावेगा, वहीं रातमें सजीवनमोर लावेगा, इस वास्ते तुम जावो, कोई जादूका जाल बिछावो, ऐसी तस्वीर बनावो, कि सूरज उदय हो जावे और सजीवनमोर न आने पावे.

कालनेमि—देखो महाराज ! जिस दिलावरने आकर अक्षकुमारको मार दिया है, अशोकवाटिकाको उजाड दिया है, शहरको खाकस्तर बना दिया है, हैरान हूं कि क्या करूं, किस प्रकार उसको रोकूं, क्या तदबीर सोचूं.

रावण—अव्वल तो द्रोणाचलपर जावो, सम्पूर्ण पर्वतपर दीपक जलावो ताकि वह आदमी न पहचानने पावे, हैरानीमें पड जावे, फिर मुनिका भेष बनावो, उसको अपने पास बिठावो, देर लगावो.

कालनेमि—अच्छा महाराज ! मैं जाता हूं, चरणोंमें सिर निवाता हूं.

हनुमानजी—हैं हैं यह प्यारी प्यारी। आवाज कहांसे आ रही है, कानोंमें अमृतरस पहुँचा रही है, कौन है जो इस बियाबानमें रहता है, महाराजके गुणानुवाद गाता है, जरूर यहभी बिभीषणकी तरह रावणका सताया हुआ है, उसी दुष्टके भयसे उसने अपने आपको पर्वतमें छुपाया हुआ है. मुझको उसके पास चलना चाहिये और उससे मिलना चाहिये.

(हनुमानजीका कपटी मुनिके समीप आना.)

कालनेमि—महाराज आइये, विराज आइये, जल पान कीजिये, विश्राम लीजिये.

हनुमानजी— दोहरा.

हाथ जोड चरणन गहूं, नाथ करूं परणाम।
रामकाज कीन्हे बिना, मोहे कहां विश्राम ॥

कालनेमि—महाराज! यह तो मैंभी जानता हूं, कि लक्ष्मणजीको मूर्छा आई है, दुष्ट मेघनादके हाथसे शक्ति खाई है सुषेण वैद्यने सजीवनमोर द्रोणाचलपर बताई है, सूर्यभगवान्के उदय होनेसे पहिले लेकर जावोगे, लक्ष्मणजीको पिलावोगे, महाराजका कष्ट मिटावोगे, परन्तु अभी तो कुछभी रात्रि नहीं गई है, सिर्फ चार घडी व्यतीत हुई है, मैं ज्ञानदृष्टिसे सब कुछ देखता हूं और जानता हूं कि अंतमें मूर्ख रावण प्राण गँवावेगा, कुटुंबसहित यमलोकको जावेगा.

हनुमानजी—महाराज! यह तो बतावो, मेरा संदेह मिटावो सजीवनमोर कैसी होती है, किस दशामें उगती है?

फडकता है, मालूम होता है कि जरूर कोई विपता आवेगी, बाईं आंखभी फडक रही है, देखो क्या दिखावेगी.

(रावणका आना, कालनेमिका दण्डवत् करना.)

रावण–देखो रामचन्द्रके भाई लक्ष्मणके सीनेमें बहादुर घननादने शक्ति मारी है, जिससे उसपर आलिमबेखुदीतारी है, जो सुबहतक सञ्जीवनमोर न आवेगी तो उसकी जान निकल जावेगी. सुना है कि हनुमान् द्रोणाचलपर जावेगा, रातही रातमें सञ्जीवनमोर लावेगा, इस वास्ते तुम जावो, कोई जादूका जाल बिछावो, ऐसी तदबीर बनावो, कि सूरज उदय हो जावे और सञ्जीवनमोर न आने पावे.

कालनेमि–देखो महाराज ! जिस दिलावरने आकर अक्षकुमारको मार दिया है, अशोकवाटिकाको उजाड दिया है, शहरको खाकस्तर बना दिया है, हैरान हूं कि क्या करूं, किस प्रकार उसको रोकूं, क्या तदबीर सोचूं.

रावण–अव्वल तो द्रोणाचलपर जावो, सम्पूर्ण पर्वतपर दीपक जलावो ताकि वह औषधी न पहचानने पावे, हैरानीमें पड जावे, फिर मुनिका भेष बनावो, उसको अपने पास बिठावो, देर लगावो.

कालनेमि–अच्छा महाराज ! मैं जाता हूं, चरणोंमें सिर निवाता हूं.

सीन नं. १२.

(हनुमान्‌जीका सम्पूर्ण द्रोणाचलपर्वतपर दीपक प्रकाशित देख-
कर अचम्भित होकर विचार करना.)

अमाबियात तइतुलल्फज.

हनुमान्‌जी–है कौनसी बूंटी यह न पहचानता हूं मैं ।
उसकी निशानी कुछ न आह जानता हूं मैं ॥
अफसोस सदअफसोस हुवा हाय यह गजब ।
हैरतमें हूं के क्या करूं तदबीर आह अब ॥
सुनसान बियाबान है आदमका ना निशां ।
वह कौनसी बूंटी है हा ढूंढू उसे कहां ॥
बेहतर ह इस तमाम कितेकोही ले चलूं ।
नाहककी शशोपंजमें क्यों देर अब करूं ॥

(हनुमान्‌जीका सम्पूर्ण प्रकाशित गिरिको उपाडकर उठाना.)

सीन नं. १३.

(भरतजीका अयोध्यापुरीकी नन्दीग्रामनामी वाटिकामें मुनिवेषमें श्रीरामचन्द्रजी महाराजका स्मरण करना. हनुमान्‌जीका आकाशमार्गमेंसे प्रकाशित गिरिको लेकर आना, भरतजीका उनको राक्षस समझकर बाण मारना, हनुमान्‌जीका विकल होकर पृथ्वीपर गिरना.)

गजल सोहनी.

(तर्ज–मरहबा ऐ आशिके सादिक हमारे मरहबा.)

हनुमान्–आह गजब अफसोस मेरे तीर यह कारी लगा ।
क्या करूं तदबीर हाये अब तो न चाले पता ॥

ठुमरी.

(तर्ज—यह क्या है गोरखधंदा.)

त्रिजटा—सुन प्यारी राजदुलारी । पडी आज मुसीबत भारी ॥
घननादने करी लडाई । रणभूमिमें धूम मचाई ॥
लक्ष्मणके शक्ति मारी । हुआ खून बदनसे जारी ॥
हनुमान संजीवन लावे । अभी गिरि द्रोणाचल जावे ॥
तज संशय अब सुकुमारी । प्रिय मानो बात हमारी ॥

(श्रीजानकीजीका विकल होकर पृथ्वीपर गिर पडना त्रिजटाका आना.)

गजल धुन सोहनी.

(तर्ज—कोई ऐसी सखी चातराम मिली मोहे पीके द्वार पहुँचा देती.)

जानकीजी—मैं कैसे सहूं यह रंज अलम मरने दे मुझको ऐ प्यारी । ईश्वरने किया है मुझपे सितम कैसी हाय विपत मोपे डारी ॥ लछमन मोहे अपने पास बुला मुखचन्द्र किरण अब मोहे दिखा । प्यारी बतियां सुना और बेग बता पापीने कहां बर्छी मारी ॥ मैंने तोहे लषन कटु वचन कहा तूने हाथ जोड परनाम किया । आह निकले ना पापी मेरा जिया करूं कौन जतन कर्मों हारी ॥

सीन नं. ११.

(कालनेमिका मुनिरूप धारण करके ईश्वरका भजन करना.)

कालनेमि— लहरा खमाच.

सीतारामां रामां रामां रामां सिया रामां ।
रामां रामां रामां रामां सीता रामां ॥

औषधीको नहीं पहँचानता हूं, इस कारण यह पर्वतही लिये जाता हूं.

भरतजी–हाय! जब दिन बुरे आते हैं तो मित्र वैरी बन जाते हैं, मैंने तुमको राक्षस जानकर बाण मारा था, मुझे क्या मालूम थी कि मेरे प्राणप्यारेका प्यारा था.

हनुमान्जी–महाराज! आज्ञा दो विलम्ब न करो, जो सूर्य निकल आवेगा तो सब बना बनाया खेल बिगड जावेगा.

भरतजी–तुमने मेरा बाण खाया है, बडा कष्ट उठाया है, आवो मेरे बाणपर बैठ जावो, अभी तुमको लंकामें पहुँचाऊंगा, सब चिंता मिटाऊंगा.

हनुमान्जी–नहीं महाराज! मेरी मूर्छा जाती रही है, सुधि आ गई है, महाराजके प्रतापसे बाणकेही समान जाऊंगा. अभी रणभूमिमें पहुँचाऊंगा.

(हनुमान्जीका दण्डवत् करके चलना.)

सीन नं. १४.

(रामचन्द्रजीका वानरी सेनामें दुःखित विराजमान होना.)

गजल धुन विहाग.

(तर्ज–बेकली है आज दिल किनके लिये.)

रामचन्द्रजी–जाग भाई बोल मैं हूं बेकरार गिर रहे हैं
अशक जूं अबरे बहार। हाय सीता मानी ना मेरा
कहा मैंने समझाया था तुमको बारबार॥ वीर लछ-

कालनेमि—संजीवनबूटी तो इस पर्वतमें बहुत उग रही थी. इस मंदिरके पीछेभी उग रही थी परन्तु थोडी देर हुई कि दुष्ट रावणने सब औषधी इस पर्वतसे उखाडली है, लंकामें पहुँचा दी है.

हनुमान्‌जी—हाय अब क्या करूं ? कहां जाऊं ?

कालनेमि—महाराज ! घबरावो नहीं, मैं तुमको एक मंत्र सिखाऊंगा, सब विधि बताऊंगा, जाकर श्रीलक्ष्मण-जीके कानमें कह देना, परमात्माकी प्रभुताईको देखना.

हनुमान्‌जी—अच्छा महाराज ! मैं जरा स्नान कर आता हूं, अभी आकर चरणोंमें शीस निवाता हूं.

(हनुमान्‌जीका सरोवरमें स्नान करना और एक मकडीनामी ग्राहकी स्त्रीका हनुमान्‌जीके चरणोंको पकडना और मछलीकी योनी त्यागन करके सुंदर अप्सरा बनकर आकाशमार्गमें उड जाना)

अप्सरा— दोहरा.

मुनि न हो महाराज यह, है यह निश्चर घोर ।
निशि बीतत करना चहत, विनय मानिये मोर ॥

(हनुमान्‌जीका क्रोधयुत होकर कपटी मुनिके समीप आना.)

हनुमान्‌जी—महाराज ! प्रथम अपनी गुरुदक्षिणा पावो, पीछे मंत्र सिखावो.

(हनुमान्‌जीका कालनेमिको पकडकर पृथ्वीमें दे मारना और उसका प्राण त्यागन करके सुरलोकको प्राप्त होना.)

गजल धुन देसकार ताल चाचर.

(तर्ज—जवानीमें क्या होगा जोबन किसीका.)

रावण—कहूं क्या मैं भाई सताया हुवा हूं ।
बहुत सदमये गम उठाया हुवा हूं ॥
किया एक जालिमने बरबाद मुझको ।
मैं लख्ते जिगर गमसे खाया हुवा हूं ॥
खपी है सभी फौज मैदांमें भाई ।
तुम्हें अब जगानेको आया हुवा हूं ॥

कुम्भकर्ण—तुम अब अहवाल मुझको सब सुनावो, सबब क्या जंगका भाई बतावो.

रावण—बशकले पारसाई दो बिरादर, रहे सहराय दंडकबनमें आकर, उन्होंने एक वहां महशर मचाया, सभी सहराको बस सिरपर उठाया, पकडली एक दिन हमशीरा भाई, और उसकी नाक नश्तरसे उडाई, वह रोती दूषन त्रिशरापे आई, उन्होंने जाके की उनसे लडाई, दिया जालिमने सबको मार रनमें, लगाई आग मेरे तनबदनमें, तब आखिरमें उसी सहरामें जाकर, ले आया स्त्री उनकी चुराकर, वह अब सेनाको लेकर दोनों आये, बहादुर मेरे सब रनमें खपाये.

कुम्भकर्ण—गजब तूने किया अफसोस भाई, नहीं मुझको खबर पहले सुनाई. हाय तूने क्या किया, जगतमाताको चुरा लिया, देख मैं तुझे समझाता हूं, एक गुप्त भेद बताता हूं.

करते होंगे इन्तजारी सीतापति रघुनाथजी।
मैं करूं अफसोस क्या उठनेके नहीं काबिल रहा॥
कौन ले जावे सजीवनमोर रस्तेमें रही।
कैसे अच्छे होवें लछमन हाये हाये हाये हा॥

(हनुमानजीका मूर्छित हो जाना, भरतजीका व्याकुल होकर हनुमानजीको जगाना.)

भरतजी–मुझसा नहीं है कोईभी जालिम वजफाकार।
जल्लाद हूं बेरहम हूं मशहूर हूं खूंख्वार॥
मैं वह हूं जिसने रामको जलावतन किया।
उसपरभी न की इकजफा दी और यह आजार॥
बदनामभी मैं हो चुका सब कुछ सहा पर आह।
अब तो न सता और तू ऐ चर्ख कजरफतार॥

हनुमान्जी–सीतापति रामचन्द्र रघुपति रघुराई.

भरतजी–भाई! तुम कौन हो, अपना नाम बतावो, सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनावो, हाय यह तुमने क्या कहा था, प्राणप्यारे लछमनका क्या हुवा?

हनुमान्जी–महाराज! दुष्ट रावण माता जानकीजीको चुराकर ले गया है, अपनी राजधानीमें छुपाया है, श्रीरामचन्द्रजी महाराज लंकाके किलेपर युद्ध कर रहे हैं, दुष्टोंको संहार रहे हैं, आज लक्ष्मणजीने मेघनादके हाथसे शक्ति खाई है, मूर्छा आई है, सुषेणवैद्यने सजीवनमोर मंगाई है, मैं उस

कि पंचवटीमें एक कालरूपी स्त्री आवेगी, यह हमारे कुलका नाश करावेगी, उसपर रावणने मुझको धमकाया और मारकर निकाल दिया, सभामें निरादर किया.

कुम्भकर्ण—बिभीषण! तुझको धन्य है, जो तूने मेरे वचनोंका पालन किया, पुलस्त्यमुनिको निर्वंश न होने दिया, बस अब मेरे सामनेसे चला जा, रघुनाथजी महाराजके चरणोंमें ध्यान लगा, मैं अब कालके वश हो गया हूं, अपने परायेको भूल गया हूं.

(बिभीषणका रुखसत् करके चला जाना.)

सीन नं. १७.

(कुम्भकर्णका कपिदलपर धावा करना.)

कुम्भकर्ण—मैं आज इस वानरी सेनाका नाश बनाऊंगा, यमलोक पहुँचाऊंगा, छिनमात्रमें सबको भक्षण कर जाऊंगा, रावणकी चिन्ता मिटाऊंगा, इन भुजाओंका पराक्रम दिखाऊंगा, कोई शूर्मा हो तो आवे, हाथ मिलावे.

(कुम्भकर्णके प्रहारसे वानरी सेनाका व्याकुल होकर भागना, महाराज रामचंद्रजीका कुम्भकर्णसे युद्ध करना और घोर संग्राम करके कुम्भकर्णको मारकर उसका शीश लंकामें फेंक देना.)

(देवतागणका पुष्प बरसाना.)

अंग्रेजी बजन.

(तर्ज—तेरी छलबल है न्यारी तोरी कलबल है न्यारी.)

देवतागण—दुष्ट पापीको मारा आज रणमें संहारा।

मतगी तो हा आय। नहीं कय। तुझेभी पहुँची है कोई अजार ॥

(हनुमान्जीका आना, सुषेणवैद्यका औषधी उपाडकर उपाय करना, लक्ष्मणजीका जाग उठना, रामचन्द्रजीका लक्ष्मणजीको कण्ठ लगाकर हनुमान्जीसे मिलना.)

धुन जिला ताल कवाली.

(तर्ज—हुवा है पुत्र दशरथके मकदर हो तो ऐसा हो.)

रामचंद्र—बचाये प्राण लछमनके सहय्या हो तो ऐसा हो।
उलांघा खारी सागरको तिरय्या हो तो ऐसा हो ॥
अकेलाही गया लंका न दिलमें की जरा शंका।
संहारा पुत्र रावणका लडय्या हो तो ऐसा हो ॥
लगाकर पूंछमें अग्नी जलादी सारीही लंका।
रहा एक घर बिभीषणका बचय्या हो तो ऐसा हो ॥
कहां गिरिद्रोणाचल चंदन कहां लंकाकी रणभूमी।
ले आया छिनमें सरजीवन चलय्या हो तो ऐसा हो॥

सीन नं. १५.

(रावणका कुम्भकर्णको जगाना.)

कुम्भकर्ण—यह कैसा शोर व गुल मचाया है, क्यों मुझको बेवक्त ख्वाबशीरींसे जगाया है, जल्द सुना क्या आफत आई है जो ऐसी गममीन सूरत बनाई है, चेहरेपर मुर्दनी छाई है, कैसी अब तरी फैलाई है ?

अंधेर हो गया मेरी आंखोंमें क्या करूं।
हा मरदिसे मरदने अब मुझको रुला दिया॥
कांपे थे तेरे रौबसे नर नाग किन्नरा।
इसांने तुझको आज आह रणमें सुला दिया॥
तकदीरका लिखा न मेटे क्या करे चन्दन।
तुझसे पियारे भ्रातको मैंने खपा दिया॥

ताल थाप.

दोहरा।

मेघनाद–क्यों व्याकुल मनमें होवे, देखो मेरा जोर।
अबही रणमें जायकर, युद्ध करूंगा घोर॥
रावण–दुमुख अकम्पन खप गये, मरा कुम्भकर्णसा बीर।
एक तुझहीपर लाल मैं, बांध रहा हूं धीर॥
मेघनाद–पैर तात लेहूं सकल, कहूं चरण सिर नाय।
आयसु दीजे अब मोहे, युद्ध करूं मैं आज॥

सीन नं. १९.

(श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजीका वानरी सेनामें विराजमान होना, मेघनादका यानलोपमें बैठकर आकाशमार्गसे बाणोंकी वर्षा करके सम्पूर्ण कपिदलको व्याकुल करके श्रीरघुनाथजीको नागफांसमें बांधकर प्रगट होना.)

मेघनाद–मेरी भुजाओंके बलको सम्पूर्ण ब्रह्मांड जानता है, इंद्र मेरे नामसे भय मानता है, कोई है जो इस मेघनादके सन्मुख आवे, हाथ मिलावे.

जिसको तू चुराकर लाया है, लंकामें छुपाया है, वह स्त्री नहीं है, भयानक काल है, तेरा किधर ख्याल है, नारदमुनिने मुझको बताया था, यह सुनाया था कि पृथ्वीसे एक मोहनी मूर्त उत्पन्न होगी, जो दण्डकारण्यमें आवेगी, वह सम्पूर्ण राक्षसी-कुलका नाश करावेगी, सो अब वोह समय आ गया है, काल सिरपर मंडला गया है मैं युद्धमें तो जाऊंगा, घोर संग्राम करके दिखाऊंगा, मगर मुडकर नहीं आऊंगा, इस कारण जी खोलकर मिल ले, कंठ लगाकर प्यार करले, फिर यह सूरत तुझको दृष्ट नहीं आवेगी, यमलोकमें चली जावेगी.

(रावणका मदिरा और मांस कुम्भकर्णको भक्षण कराना.)

कुम्भकर्ण—मैं अभी रणभूमिमें जाता हूं, शत्रुओंका नाश बनाता हूं, अपनी भुजाओंके बलसे कपिदलको गर्दमें मिलाता हूं, दुश्मनके खूनसे दरिया बहाता हूं, दोनों भाइयोंको रणभूमिमें सुलाता हूं, थोडीही देरमें क्यासे क्याकर दिखाता हूं, मैं अपनी भुजाओंपर सब कुछ भरोसा रखता हूं, सेनाभी नहीं ले जाता हूं.

सीन नं. १६.

(कुम्भकर्णका रणभूमिमें बिभीषणसे मिलना.)

बिभीषण—भाई! मैं बिभीषण हूं, श्रीरघुनाथजी महाराजकी शरणमें हूं, मैंने रावणको समझाया था, नारदजीका वह वचन सुनाया था, जो एक समय आपने मुझको बताया था

अंधेर हो गया मेरी आंखोंमें क्या करूं ।
हा मरादिशे मरदूने अब मुझको रुला दिया ॥
कांपे थे तेरे रौबसे नर नाग किन्नरा ।
इंसांने तुझको आज आह रणमें सुला दिया ॥
तकदीरका लिखा न मेटै क्या करे चन्दन ।
तुझसे पियारे भ्रातको मैंने खपा दिया ॥

ताल थाप.

दोहरा ।

मेघनाद–क्यों व्याकुल मनमें होवे, देखो मेरा जोर ।
अबही रणमें जायकर, युद्ध करूंगा घोर ॥
रावण–दुमुख अकम्पन खप गये, मरा कुम्भकर्णसा वीर ।
एक तुझहीपर लाल मैं, बांध रहा हूं धीर ॥
मेघनाद–वैर तात लेहूं सकल, कहूं चरण सिर नाय ।
आयसु दीजे अब मोहे, युद्ध करूं मैं जाय ॥

सीन नं. १९.

(श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजीका वानरी सेनामें विराजमान होना, मेघनादका यानलोपमें बैठकर आकाशमार्गसे बाणोंकी वर्षा करके सम्पूर्ण कपिदलको व्याकुल करके श्रीरघुनाथजीको नागफांसमें बांधकर प्रगट होना.)

मेघनाद–मेरी भुजाओंके बलको सम्पूर्ण ब्रह्मांड जानता है, इंद्र मेरे नामसे भय मानता है, कोई है जो इस मेघनादके सन्मुख आवे, हाथ मिलावे.

मुनिजनको उभारा त्रिलोकी नाथ ॥
प्रभु स्वामी खरारि तुमही जगके आधार।
तेरी लीला अपार नावें चरणन माथ ॥
सुनो सुनो रामा पूर्णकामा।
पापी रावणको मार करो अब सनाथ ॥
सिया संकट मिटावो देव निर्भय बनावो।
बंदीगणको छुडावो हे धन धन धन ॥
धन धन धन धन धन धन ॥

सीन नं. ४८.

(रावणका राजसभामें बैठना और कुम्भकर्णके शीसका सभामें महाराजका फेंका हुआ आकर पडना रावणका विलाप करना.)

ठुमरी धुन झिंझोटी पीलू.

(तर्ज—ऊधो दुनिया रैन बसेरा.)

रावण—हाये भाई प्राणपियारा कहां मोको छोड सिधारा।
तूही था एक विपतकालमें धीर बन्धावनहारा ॥
कहु भाई अब कैसे जीऊं डूबत हूं मझधारा ॥
नाव पडी रणसागरमांही सूझत वार न पारा।
तो विन अब भय्याजी मोको कौन लंघावनहारा ॥

गजल धुन बिहाग ताल दादरा.

(तर्ज—गैरत न तुझको आई कुछ ऐ बेशरम.)

यह आज फलकने अलम मुझको दिखा दिया।
भाई पियारा हाय हाय मुझसे छुडा दिया ॥

पडी यह देख आवो, मेरा प्रीतम गया है आज रणपें, उदासी छा रही है मेरे मनमें.

(चम्पाका भुजाको देखकर चकित होना.)

सुलोचना-प्रिय चम्पा ! क्या कारण है सुना तो, चकित क्यों हो रही है यह बता तो.

चम्पा-भुजा यह तेरे प्रीतमकी है रानी, विधाताकी नहीं गत जावे जानी.

(सुलोचनाका उठकर भुजाको पहचानना.)

सुलोचना-हाय केहिं विध मर गये मेरे प्राणआधार, लिख मेटो संदेहको हे प्यारे भर्तार.

(सुलोचनाका खडिया मृतकभुजाके हाथमें देना और उसका श्रीलक्ष्मणजीकी कीर्ति लिखकर युद्धका सम्पूर्ण वृत्तांत लिख देना, सुलोचनाका विकल होकर भूमिपर गिरना.)

अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कहरवा.

(तर्ज-जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

सुलोचना-

हा हा ईश्वर हा हा ईश्वर कैसा किया यह मुझपे सितम ।
क्यों मुझको दिखलाया है अब ऐसा सख्त पहर जो अलम ।
प्राणपियारा पीतम छुटा कैसे सहूं मैं हाय यह गम ।
किया कसूर क्या ईश्वर मैंने जो हो गया ऐसा बेरहम ॥
हाये मैं कहां जाऊं पीतमको कैसे पाऊं ।
अब जहर मैंभी खाऊं अपनी मैं जां गँवाऊं ॥

जांबवन्त–ऐ दुष्ट! बातें न बना, जरा ठैर जा, अभी तुझको श्रीरघुनाथजी महाराजका प्रताप दिखाता हूं, तुझको यमलोकका पन्थ बताता हूं.

(जांबवन्तका मेघनादसे युद्ध करके उसको भूमिपर पछाडकर लंकामें फेंक देना, गरुडका आकर सम्पूर्ण नागोंको भक्षण कर जाना, रघुनाथजीका बानरी सेनामें हर्षयुत विराजमान होना)

बिभीषण–महाराज! दुष्ट मेघनाद पर्वतकी कंदरामें अरावन यज्ञ करता है, भैंसे और रुधिरकी आहुती देता है, जो कदापि सिद्ध कर लेगा तो किसीका मारा न मरेगा, इस कारण योधाओंको पठावो, उसकी यज्ञको विध्वंस कराओ.

रामचन्द्रजी–प्रिय लक्ष्मण! अंगद हनुमान्‌के संग जावो, उसकी यज्ञको विध्वंस बनावो, दुष्टको मारकर आवो, मुनिजनके कष्ट मिटावो.

(लक्ष्मणजीका दंडवत् करके चलना.)

सीन नं. २०.

मेघनाद–ॐ नमो चाण्डिकायै नमः.

(लक्ष्मणजीका यज्ञको विध्वंस करना और घोर संग्राम करके उसके शीसको काट लेना और भुजाको लंकामें फेंक देना.)

सीन नं. २१.

(सुलोचनाका राजभवनमें बैठना, मेघनादकी भुजाका आंगनमें गिरना.)

सुलोचना–प्रिय चंपा सखी! तुम वेग जावो, भुजा कैसी

करूं आह मैं तदबीर क्या लावल्द मुझको कर गया ॥
भाई मुवा बेटा खपा सेनाभी सब मारी गई ।
किस किसको रोऊं क्या करूं गमसे कलेजा भर गया ॥
मतलबका सब संसार है गरदिशमें न कोई यार है ।
करूं औरका अरमान क्या भाईभी मुझसे फिर गया ॥

(सुलोचनाका आकर दण्डवत करना.)

सुलोचना—महाराज ! आज मेरे प्राणप्यारे भर्तारको श्रीलक्ष्मणजीने संग्रामशय्यापर सुला दिया है, मुझको विधवा बना दिया है, उनकी मृतकभुजाने सब कुछ लिखकर बता दिया है, यहभी जता दिया है कि उनका धड रणभूमिमें पडा है और शीश श्रीरघुनाथजीमहाराजके दर्शनोंको गया है, सो आप कृपा करके कोई उपाय कीजिये, जिस प्रकार बने पतिका सीस ला दीजिये.

रावण—आह पुत्री ! तू उस मृतक सीसका क्या बनावेगी, वह तो सब मिट्टी है, यूंही देख जी जलावेगी.

सुलोचना—नहीं महाराज ! जी नहीं जलाऊंगी, हर्षयुत सती हो जाऊंगी.

रावण—हाय कर्मोंका लिखा नहीं मिटता है, सोचेसे क्या बनता है, सदा कोईभी नहीं रहा है, सबको कालने खाया है, पुत्री ! चार घडी धीर्य धर, करुणा त्यागन कर, तू एक मेघनाथका सीस मांगती है, मैं अभी सम्पूर्ण कपिदलको संग्राममें

किया बडा गजब [illegible] मुझसे तूने रच ।
मैं क्या करूं हा [illegible] मैं सहूं यह गम ॥

[illegible]पा— दोहरा ।

[illegible] जे कुछ करैं लिख दीन्हा जगदीश ।
सोई पडे निज भोगना, [illegible] निज ऊं सीस ॥
सदा न [illegible] कोई रहा, देखो हृदय विचार ।
[illegible] भये काल सब, नाशमान संसार ॥
[illegible] कुछ ना बने, सुन ऐ राजकुमार ।
मनमें धीरज दीजिये, यही जगत ब्योहार ॥

[illegible] जैजैवन्ती.

(तर्ज—[illegible]मत सोवे री सुन्दर आजकी रैन चन्द्र गहोगो.)

कैसे धीर धरूं मोरी आली बिधि मोपै विपता है डारी ।
प्राणपियारा पीतम मोरा मोहे छोड अब आह चला री ॥
कौन उपाय करूं क्या सोचूं कहां जाऊं मैं कर्मो हारी ।
तो बिन पीतम सब जग सूना आंखियनमें छाई अंधियारी ।
जाऊं चितापै शीश मँगाऊं जरूं सङ्ग अब मैं दुखहारी ॥

सीन नं. २२.

(रावणका राजभवनमें दुःखित बैठना.)

गजल धुन सोहनी.

(तर्ज—तेरा कबका मुझसे वैर था तूने पेट पड बदला लिया.)

रावण—लख्ते जिगर घननाद प्यारा आज रणमें मर गया ।

असुर संहारो देव उभारो दुख टारो कारज सारो।
मैं तुम्हारी शरणागत आई राखो लज्जा रघुराई॥

बिभीषण—महाराज! यह नागसुता रावणकी पुत्रवधू मेघनादकी स्त्री है, जो पतिव्रतधर्मके आभूषणसे आभूषित हो रही है, दशकंधरके दुष्ट कर्मसे इसकी यह गति हुई है, जो आज वानरी सेनाके सन्मुख खडी है.

सुलोचना—महाराज! श्रीलक्ष्मणजी महाराजने मेरे पतिको रणभूमिमें संग्रामशय्यापर सुला दिया है, उनका तामसी शरीर छुडा दिया है, उनकी मृतक भुजाने सब कुछ लिखकर बता दिया है, मेरा संदेह मिटा दिया है, आप कृपा करके मेरे पतिका सीस मंगा दो, मेरी चिन्ता मिटा दो, मैं पतिके संग चितामें बैठकर जर जाऊंगी, संसारसमुद्रसे पार उतर जाऊंगी.

रामचन्द्रजी—प्रिय सुग्रीव! मेघनादका सीस लावो, इस पतिव्रताकी चिन्ता मिटावो.

(सुग्रीवका मेघनादका सीस लाकर देना, सुलोचनाका दंडवत् करना.)

सुलोचना—कृपाल नाथ आपको दंडौत मैं करूं।
दिलकी मुराद पा लई चरणोंमें शिर धरूं॥
दर्शनके लिये आपके जप तप मुनी करें।
सब छोड माल देशको जंगलमें वह फिरें॥
लेकिन न दृष्ट आता है उनकोभी यह स्वरूप।
नैनोंसे देख मैं लिया सोई अनूप रूप॥

अब नाथ मुझपे इतनी दया और कीजिये ।
सागरसमीप अब चिता बनवाय दीजिये ॥

(वानरोंका सागरके तीर चिता बनाना, सुलोचनाका पतिके सीसको लेकर चितामें बैठ जाना.)

गजल सोहनी.

(तर्ज–तेरा कवका मुझसे बैर था तूने पेट पड बदला लिया.)

सुलोचना–तज मोह बंदे राम भज झूठा यह सब संसार है ।
को मात है को तात है को भ्रात है को यार है ॥
कैसा प्रपंच बनाया है तूही जगत आधार है ।
एक रोरो जीको जलाता है एक हँसके बातें बनाता है ॥
एक पैदा एक मरता है तेरी माया अपरम्पार है ।
तूने आके चन्दन क्या किया कभी नाम नहीं हरका लिया॥
वृथाही जीवन खो दिया चलनेको अब तय्यार है ॥

(अग्निका प्रचंड होना और सुलोचनाका पतिधामको प्राप्त होना.)

सीन नं. २४.

(मंदोदरीका राजभवनमें दुःखित होना.)

गजल धुन देसकार ताल चाचर.

(तर्ज–जवानीमें क्या होगा जोबन किसीका.)

मंदोदरी–यह दुनिया नहीं जी लगानेकी जा है ।
जरा देखो सोचो यह मिसले सरा है ॥
रहा इसमें कोई न कोई रहेगा ।
चलाचलका सौदा यह यूंही लगा है ॥

मजे जो हैं दुनियाको सबही रहेंगे ।
कोई आया है और कोई चल दिया है ॥
न चन्दन यहां तेरा न तू किसीका ।
यूंही जीते जीका यह नाता बना है ॥

(मंदोदरीका भूमिमें गिरकर मूर्छित हो जाना.)

सीन नं. २५.

(रावणका राक्षसीसेनामें शोकयुत बैठना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज–एक तीर फेंकता जा बांकी कमानवाले.)

रावण–लख्ते जिगरको मैंने आह रणमें अब खपाया ।
अफसोस चर्ख जालिम क्या क्या तू रंग लाया ॥
जिन्नो परी फरिश्ते काबूमें सब थे मेरे ।
ना चीज एक इंसां जिसने मुझे रुलाया ॥
उठो मेरे दलेरो तीरो कमां संभालो ।
यातो मरूं या मारूं अब तो यही समाया ॥

(रावणका राक्षसीसेनासहित चलना.)

सीन नं. २६.

(श्रीराम और रावणका युद्ध.)

(अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कवाली.)

(तर्ज–लपको लपको मारो इसको नहीं जाने पावे जिन्हार.)

सेनाराक्षसी और कपिदल–
मारो मारो पकडो जावो मिलके करो अब भाई वार ।
कमां चढालो जल्द संभालो खंजर नेजा और तलवार ॥

देखो अब संग्राम जंग है करदो तीरोंकी बूछार।
या तो मरो या मारो दलेरो पीछे हटो नहीं अब जिन्हार॥

(रावणका अनेक प्रकारका घोर संग्राम करके श्रीरघुनाथजी महाराजके बाणोंसे प्राण त्यागन करके सुरलोकको प्राप्त होना, देवतागणका पुष्प बरसाना.)

अंग्रेजी वजन धुन सिंधुरा ताल कवाली.

(तर्ज-जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

देवतागण-

जय रघुनायक जगसुखदायक प्रणतपाल जनहितकारी।
मुनिजन सज्जन ध्यान धरत है जपत उमापति त्रिपुरारी॥
यह दुष्ट अपावन देव सतावन मूढ मंदमति हंकारी।
रणबीच संहारा पापी मारा कीर्ति पावन विस्तारी॥
प्रभू दीनबंधु नाथ चरणोंमें नावे माथ।
जोडे यह दोनों हाथ हुये आज हम सनाथ॥
रघुकुलपति महाराज चंदनकी राखी लाज।
पापीको मारा आज जय जय हरी खरारि॥

(सुरसमूहका दंडवत् करना.)

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

षष्ठ भाग समाप्त.

नाटकधर्मप्रकाश

अर्थात्

श्रीरामजानकीजीचरित्र।

राजकाण्ड सप्तम भाग.

ॲक्ट नं. ७.

श्रीरामराजलीला.

सीन नं. १.

(श्रीरामचन्द्रजीका प्रिय बंधु और वानरीसेनासहित रणभूमिमें विराजमान होना, देवतागणका पुष्प बरसाना, महाराजकी स्तुति करना.)

श्यामकल्याण.

(तर्ज-हेरी सखी आरती कीजे आज.)

देवतागण-प्रभु तुम जगरक्षक रघुराज।
माया अपरम्पार तुम्हारी, देवनके सिरताज ॥
बीस भुजा दस शीश अपावन, मारो रावण आज।
देव उभारे असुर संहारे, राखी जनकी लाज ॥
चन्दन मस्तक तिलक विराजे, शोभा अति महाराज ॥

(मन्दोदरीका सम्पूर्ण रनवाससहित आकर विलाप करना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कव्वाली.

(तर्ज-यह न थी हमारी किसमत के तू नेकरार होता.)

रावणरणवास-किस नींद सो रहे हो, जागो पती हमारे।
दासी हैं हम तुम्हारी, मुखसे तो बोलो प्यारे ॥

शोणित बहे है तनमें, कैसे पडे हो रनमें ।
छेदन हुयेहैं हाये, बाणोंसे अंग सारे ॥
यमराज काउ इंदर, कांपैं थे तुमसे निश्चर ।
जम्बुक सियार खावें, शिर बाहु अब तुम्हारे ॥

मन्दोदरी—हाय पति! तुमने मेरा कहा न माना, त्रिलोकीके नाथको मनुज माना, तिसी कारण इस दुर्गतिको प्राप्त हुए हो कि अनाथकी नाईं संग्राममें पडे हो, पति रघुनाथजीके द्रोहका यह फल पाया कि कोई कुलमें रोनेहाराभी न रहा.

(बिभीषणका रावणके मृतकशरीरके निकट जाना.)

बिभीषण—हाय प्रियबंधु! तेरे भयसे सम्पूर्ण ब्रह्मांड कांपता था, यमराजभी तेरी भुजाओंके पराक्रमसे भय खाता था, इंद्र पानी भरता था, चंद्रमा दीपककी नाईं भवनमें प्रकाश करता था, हाय प्रतापी आज इस दुर्दशाको प्राप्त हो रहा है, तेरे सम्पूर्ण अंगोंसे शोणित वह रहा है, सच कहा है, मिटता नहीं मिटायेसे तकदीरका लिखा, सोचे हजार लाख कोई बन सके है क्या.

रामचन्द्रजी—प्रिय बिभीषण! धैर्य धरो, करुणा त्यागन करो, सदा कोई नहीं रहा है, सबको कालने भक्षण किया है, जो पैदा हुआ है सो मुवा है, उठो चन्दन आदिक भार लावो, इस प्रतापीके मृतक शरीरको दाह बनाओ अंगद तुम लक्ष्मणके संग नगरमें जाओ, बिभीषणको राजगद्दीपर

बिठाओ, हनुमान्! तुम अशोकवाटिकामें जनकनंदिनीको मेरी कुशल सुनाओ, अच्छा विलम्ब न लगाओ.

(बिभीषणका चंदन आदिक भार लाकर सागरके तटपर रावणके शरीरको दाह देना और मंदोदरी आदिकका उसको तिलांजलि देकर लंकामें प्रवेश करना.)

सीन नं. २.

(श्रीजानकीका अशोकवाटिकामें दुःखित बैठना.)

मांड.

(तर्ज—ननदी धीरे बोलो जी.)

जानकीजी—मेरा जीव रहा घबरा पीतम नेक तो दर्श दिखा॥
पीतम तोर वियोगमें तडफत हूं दिन रैन।
उठत विरहको आग उर दर्श पियासे नैन॥
मेरा प्राण कंठ रहा आ पीतम नेक तो दर्श दिखा॥
तजन चहत तन प्राण अब नाहि जियनकी आश।
देश पराया ना कोई संगी साथी पास॥
मोको कौन जरावे हा पीतम नेक तो दर्श दिखा॥

(हनुमान्जीका आकर दंडवत् करना.)

हनुमान्जी—माताजी! काहेको दुःखित हो, किस कारण मलीन हो, आज श्रीरामचंद्रजी महाराजने दुष्ट रावणको संग्रामशय्यापर सुला दिया है, पापीको कुलसहित यमलोकका पंथ दिखा दिया है, मुनिजनका कष्ट मिटा दिया है, देवताओंको अभय बना दिया है, उसके मृतक शरीरको

वाहभी करा दिया है, श्रीलक्ष्मणजीको विभीषणके राजतिलकके निमित्त लंकामें पठा दिया है, माताजी ! अब तो आनन्द मनावो, ईश्वरके गुणानुवाद गावो.

(हनुमान्जीका दंडवत् करके चलना.)

ठुमरी.

(तर्ज—आज तो आनन्द मोरे श्यामजीका आवना.)

जानकीजी—धन्य धन्य भाग आज मुवो दुष्ट रावणा ॥
कौन जगत भाग्यवन्त मो समान आज है ।
देखहूं मैं नयनसे रूप मन भावना ॥
देहुँ का मैं पुत्र तोहे ना कुछ वाणी समां ।
रोग विपत कष्ट नाशै पूरी हुई कामना ॥

(श्रीजानकीजीका हनुमान्जीको कण्ठ लगाना.)

हनुमान्जी—माताजी ! आज मैं त्रैलोक्यका राज पा लिया है, जो आपने मुझको पुत्र मानकर कण्ठ लगा लिया है.

जानकीजी—प्रिय हनुमान् ! अब शीघ्रही कोई ऐसा यत्न करो कि श्याम सरोजरूपी मुखारविंदके दर्शन पाऊं, इन तृषावन्त नैनोंको दर्शरूपी अमृत पान कराऊं.

हनुमान्जी—माताजी ! मैं श्रीरघुनाथजी महाराजको आपकी कुशल सुनाता हूं, धीर्य धरो, शीघ्रही लिवा ले जाता हूं.

(हनुमान्जीका दण्डवत् करके चलना.)

सीन नं. ३.

(श्रीलक्ष्मणजीका राजसभामें बिभीषणके लंकाके राजका तिलक करना, देवतागणका बन्दीखानेसे छूटकर स्तुति करना.)

ठुमरी रेखता.

(तर्ज-बुरा मैं क्या किया तेरा.)

देवता-

मिटे दुष्ट आज भय भारी मुवा खल दुष्ट सुरआरी ॥
हुये हैं काज मन चीते विपत संकटके दिन बीते ।
करैं नित नौ कृपा तुमपर सियापति राम हितकारी ॥
बढे दूनो प्रभुताई दयालु जगत सुखदाई ।
करे आनन्द मन निशि दिन विधाता तेरी रखवारी ॥

(सबका बिभीषणको शीस निवाना.)

सीन नं. ४.

(त्रिजटाका अशोकवाटिकामें श्रीजानकीजीको स्नान कराकर दिव्य वसन और आभूषणसे आभूषित करना, सरमा और मंदोदरी आदिक रनवासका आके महारानीको दण्डवत् करना.)

गजल धुन जिला ताल कवाली.

(तर्ज-भवें तानी हैं खंजर हाथमें है तनके बैठे हो.)

मंदोदरी-

जगतजननी द्युतिदामिनहरण दुख शोक सुख करनी ।
पतिव्रतधर्मसे भूषित श्रीरघुकुलपतिघरनी ॥
सहे दुख त्रास अति भारी तजा नहीं धर्म सुकुमारी ।
जगतमें कौन अस नारी तोहे धन धन सुता धरनी ॥

मुनिजन देवहित कारण किया है रूप यह धरणी।
सही विपता रही कानन सकल संताप अघ हरनी ॥

(मंदोदरी, आदिक रनवासका श्रीजानकीजीको दंडवत् करके रत्न-जटित आभूषण महारानीके कंठमें शोभित करना.)

सरमा—महारानीजी! इस शिबिकामें विराज जावो, श्रीरघुनाथजी महाराजके दर्शन पावो.

(श्रीजानकीजीका आनन्दमन पालकीमें विराजमान होना, त्रिजटाका जानकीके चरण पकडना.)

त्रिजटा—माताजी! हमारे अपराध क्षमा करो, हम दीनोंको कृपादृष्टिसे निहारो, रावणके भयसे हमने आपको अतित्रास दिये हैं, अनेक प्रकारके दुष्ट कर्म किये हैं.

(जानकीजीका त्रिजटाको कंठ लगाना.)

जानकीजी—प्रिय त्रिजटा! तुम तो मुझे प्राणोंसेभी प्यारी हो, मेरी आपत्तिकालकी हितकारी हो.

(श्रीजानकीजीकी अपने कंठसे रत्नजडित आभूषण उतारके त्रिजटाको पहराना, राक्षसोंका पालकी उठाना.)

सीन नं. ९.

(श्रीरामचंद्रजीका लक्ष्मणजीसहित हर्षयुत वानरीसेनामें विराजमान होना, बिभीषणका श्रीजानकीजीको लेकर आना.)

ठुमरी.

(तर्ज-यह जग है गोरखधंधा.)

देवकन्या—

प्रभु जय जय जय खरआरी लीला है तेरी न्यारी ॥
खल दुष्ट असुर संहारे मूरख सब रणमें मारे।

मुनि सज्जन कीन्ह सुखारी प्रभु जय जय जय खरआरी॥
पापीने सिया सताई तो अपनी जान गँवाई ।
मिटे आज त्रास भय भारी प्रभु जय जय जय खरआरी ॥
सहे दुष्ट त्रास अति भारी तजा धर्म न सीता प्यारी।
धन धन तोहे जनकदुलारी प्रभु जय जय जय खरआरी॥

(जानकीजीका श्रीरामचंद्रजीको दंडवत् करना.)

रामचन्द्रजी—जनकनन्दिनी अब तुम इस योग नहीं हो कि मेरे अंगको स्पर्श करो. जो कुछ अपने धर्मकी परीक्षा देगी तो मेरे चरण गहोगी.

जानकीजी—लक्ष्मण आवो, चिता बनावो, विलम्ब न लगावो, अग्नि प्रचण्ड बनावो.

(लक्ष्मणजीका श्रीरामचन्द्रजीका रुख पाके चिता बनाकर अग्नि प्रचण्ड करना.)

गजल धुन विहाग.

(तर्ज–है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज.)

जानकीजी—देवी अग्नि तू जगत आधार है ।
ज्वाला तीक्षण ज्योति अपरम्पार है ॥
जीव जन्तुकी गती तूही करे ।
तेज तेरा जाने सब संसार है ॥
जो कलंकित हूं तो मुझको भस्म कर ।
ज्वालामाई तू जगत आधार है ॥

(जानकीजीका प्रदक्षिणा करके प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश करना, पावकका शीतल हो जाना. रामचन्द्रजीका श्रीजानकीजीको पाणिग्रहण करके वाम अंगमें विराजमान करना, देवतागणका पुष्प बरसाना.)

ठुमरी.

(तर्ज—गजरा बेचनवाली नादान यह तेरा नखरा.)

देवकन्या—पतिव्रता न तोसी है नार धन धन धन ।
रूपउजागर सब गुणनागर प्यारी धरणीसुता सुकुमार
धन धन धन ॥ पती मन लागा धर्म न त्यागा सहे संकट
बिपत है अपार धन धन धन । रामपियारी जनक-
दुलारी तेरी महिमा विदित संसार धन धन धन ॥

(देवकन्याओंका दण्डवत् करके चला जाना, बिभीषणका मणि और दिव्य वसन भूषणसे पुष्पकाविमान भरके महाराजके सन्मुख धरना.)

बिभीषण—महाराज ! यह वह पुष्पकविमान है जिसको रावण कुबेरसे युद्ध करके लाया था, इसीके प्रभावसे मूर्खने सम्पूर्ण ब्रह्मांडमें दुंद मचाया था हे प्रभु। यह आकाशमार्गमें पक्षीकी नाई चलता है, किसीको दृष्ट नहीं आता है, बडे बडे अपार समुद्रोंको छिनमात्रमें उल्लंघन कर जाता है, हे कृपालु ! इस दासकी ओरसे यह मणि आदिक तो श्रीजनक-नन्दिनीपर निछावर करें और यह वसन भूषण योधा वान-रगणको भेट दें.

(बिभीषणका आकाशमार्गसे वसन भूषणकी वर्षा करना. वानरोंका आनंद होकर उठाना, महाराजका श्रीजनकनंदिनीसहित वानरोंके संग विनोद करना.)

बिभीषण—महाराज। अब तो कृपा करके नगरमें पग धारो, सम्पूर्ण राजकोश निहारो.

रामचन्द्रजी—हे सखा ! तुम इस सम्पूर्ण राज-कोशसे लाभ उठावो, अभय होकर लंकामें आनन्द मनावो,

मैं तो अब अयोध्यापुरीको जाऊंगा, प्यारे भरतका कंठ लगाऊंगा, अपनी माताको शीश निवाऊंगा, गुरुजीके दर्शन पाऊंगा, जो कदापि दो दिवस चौदह वर्षमें बाकी हैं बीत जावेंगे, तो मेरे प्रियबंधुके प्राण तनमें नहीं रहने पावेंगे, प्रिय बानरगण मैंने तुम्हारी सहायता और पराक्रमसे रावणका नाश किया है, बिभीषणको राज दिया है, अब तुम अपने अपने स्थानको जावो, आनन्द मनावो.

(सम्पूर्ण सेनाको विदा करके रामचंद्रजीका प्रियबंधु और भार्या-सहित पुष्पकविमानमें विराजमान होना. बिभीषण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान् आदिक योधाओंका श्रीरामचन्द्रजीके चरण पकडना.)

सुग्रीव—महाराज ! हम तो आपके संग जावेंगे, माता-ओंको शीश निवावेंगे, करोडों जन्मके पातक कटावेंगे, कुछ दिन अयोध्याजीमें वास बनावेंगे.

रामचन्द्रजी—अच्छा प्रिय ! आवो विमानमें विराज जाओ.

(बिभीषण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान् आदिक सेनापतियोंका महा-राजके संग विराजना, विमानका आकाशमार्गमें उडना, सेनाका जय-

---

सीन नं. ६.

(भरतजीका नन्दीग्राममें श्रीरामचन्द्रजीके वियोगमें दुःखित विराजमान होना.)

ठुमरी.

(तर्ज—राम मिलनेको जाता माता.)

भरतजी—राम बिना मोहे कछु ना सुहावे ।
शीतल मंद सुगंध बयारी उरगश्वास सम जियरा जलावे ।

कमली निपिन कुंज बन मोको काळनिशा सम रैन सतावे ॥
नव तरुकिसलय मनहुं कृशानु चंद्रकिरण अब आग लगावे ।
मम विपरीता बिन प्रभु सीता चंदन तोर सुगंधी न भावे ॥

आह चौदह वर्षकी अवधीमें तो केवल दो दिवस रहे हैं और महाराज अबतक नहीं आये हैं.

रागनी देस.

(तर्ज—ऊधो सौत साल दुखदाई.)

को मोसम दुष्ट अभागी बन बसत राम जेहिं लागी ॥
रहे दिवस दो अवधीमें काह करूं मैं हाये ।
आये नहीं रघुकुलकमल जीव रहा घबराये ॥
उर पीर विरहकी जागी को मोसम दुष्ट अभागी ॥
बीते अवधी न आये हैं प्रभु रहे जो तनमें प्राण ।
मूढ मंद मति कुटिल तू अधम को मोह समान ॥

(भरतजीका विकल होकर भूमिपर गिरना.)

सीन नं. ७.

(वाल्मीकिजीका ईश्वरके गुणानुवाद गाना.)

भजन.

(तर्ज—सावन के बदरवा कारे.)

वाल्मीकिजी—नर रामनाम गुण गा ले ।
ममता तृष्णा मान इर्षा भवसागर नद्दी नाले ॥
लोभ मोह मद अमित भयंकर ग्राह नाग हैं काले ॥
सुत दारा परिवार कुटुंब सब कर दे राम हवाले ।
रामभजनकी अपने तिरवको नय्या जीव बना ले ॥

(पुष्पकविमानका आकाशमार्गसे उतरना और श्रीरामचन्द्र[redacted] लक्ष्मणजी और जानकीजीसहित वाल्मीकिजीको दण्डवत् करना[redacted] मुनिका आनन्द होकर महाराजको कण्ठ लगाना.)

रामचन्द्रजी—प्रिय हनुमान् ! तुम अयोध्यामें जावो, [redacted] प्यारे बन्धुको मेरा आगमन जनावो, माताओंको मेरी कुश[redacted] सुनावो, मैं महाराजकी चरणसेवा करके शीघ्रही आऊंग[redacted]

(मारुतसुतका दण्डवत् करके चलना.)

सीन नं. ८.

(भरतजीका श्रीरामचन्द्रजीके वियोगमें नन्दीग्राममें बैठना.)

गजल धुन जिला बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज—जापान कह रहा है सुन हिन्दुस्थानवालो.)

अवधीमें एक दिवस है अजहू न भ्रात आये ।
कल बीतैं वर्ष चौदह मैं अब करूं क्या हाये ॥
माता तोहे कहूं क्या नहीं दोष है किसीका ।
विधनाने जो लिखा है मिटता नहीं मिटाये ॥
लछमन है धन्य तोको धिक्कार आह मोको ।
सिया राम विन जियत हूं नहीं पार कुछ बसावे ॥

(भरतजीका मूर्छित अवनीपर गिरना.)

सीन नं. ९.

(श्रीरामचन्द्रजीका सुग्रीव आदिक सहित श्रीगंगाजीके तीर विराजमान होना, जानकीजीका पूजन करना.)

अंग्रेजी वजन धुन सुंदरा ताल कवाली.

(तर्ज—जैसी करनी वैसी भरनी करनीको तू करकर देख.)

जानकीजी—जय जय गंगा सब दुख भंगा प्रणतपाल तुम महतारी । जय जय माता जगसुखदाता शीश विराजै

त्रिपुरारी ॥ महिमा अपरम्पार तुम्हारी जीव चराचर हितकारी। कलिमलहरणी भवनिधि तरणी कीरति पावन विस्तारी ॥ तव ध्यान जो धरैं जल पान जो करैं। संसारसे तरैं भवकूप ना परैं ॥ अघरोमनाशनी सब पापडाकिनी मुनिसंतपालनी शिव गौरजा प्यारी। जयजय गंग। सब दुख भंग। प्रणतपाल तुम महतारी ॥

(निषादका आकर दण्डवत् करना, रामचन्द्रजीका उसको कण्ठ लगाना.)

सीन नं. १०.

(श्रीकौशल्याजीका राजभवनमें दुःखित होना.)

ठुमरी जैजैवन्ती.

(तर्ज-आंगनमें मत सोवे री सुन्दर आजकी रैन चन्द्र गहेगो.)

कौशल्याजी—काह करूं सखी चेन न आवे पुत्र विना मोहे कछू ना सुहावे। रोवत बीतत सब निशि वासर खान पान मोहे नेक न भावे ॥ विन देखे रघुवर वैदेही मोर हृदेकी जरन न जावे। राम विना सबही जग सूना आंखनमें अँधियारी छावे ॥ जन्म जन्म गुण मानूं मैं वाका जो प्रियपुत्रसे मोहे मिलावे ॥

ठुमरी.

(तर्ज-पुत्री नादान बियाबानमें तू कैसे आई.)

शत्रुघ्नजी—बोलो तो मात आवें भ्रात बैठो धीर धारो। चिन्ता काहेको छाई त्यागो माता विकलाई ॥

आवेंगे आज भाई फरकैं शुभ अंग माई ।
शगुन जनावैं रघुवर आवे भूप कहावें क्रीट सजावें ॥
माताजी नैन उघारो बोलो तो मात आवें भ्रात बैठो धीर धारो

(कौशल्याजीका शत्रुघ्नको कंठ लगाना.)

सीन नं. ११.

(भरतजीका श्रीरामचंद्रजीके विरहमें नन्दीग्राममें बैठना.)

मांड.

(तर्ज–मेरा जोबन बीता जाय बादला वेगी जायो रे.)

भरतजी–

मेरा सुभग अंग फरकै है प्यारे भ्राता आवेंगे ॥
दहिन भुजा है फरकती उड उड बोले काग ।
निश्चय मुझको होत है अब होहि उदय मम भाग ॥
रघुपति कंठ लगावेंगे । मेरा सुभग अंग फरकै है प्यारे
भ्राता आवेंगे ॥

(हनुमान्‌जीका आना.)

हनुमान्‌जी– दोहा ।

जासु विरह सागर प्रभू, रहे मगन मन होय ।
लषण जानकी सहित हरि, आवत है अब सोय ॥

भरतजी–भाई ! तुमने तो अति प्रिय वचन सुनाये हैं, जिनके श्रवण करनेसे मेरे मृतक शरीरमें प्राण आये हैं. अपना नाम बताओ और प्रियबंधुकी कुशल सुनावो.

हनुमान्‌जी–महाराज ! श्रीरघुनाथजीने सम्पूर्ण दुष्टोंको

प्रहार किया है, भूमिका भार उतार दिया है, मेरा नाम हनुमान् है, मध्यमभी संजीवन मोर लाते समय आपका दर्शन किया है, अब हर्षयुत महलोंमें जावो, माताओंको महाराजका आगमन जनावो.

(भरतजीका आनन्द होकर हनुमान्जीको कंठ लगाना.)

ठुमरी.

(तर्ज—रामको आधार बंदे रामको आधार रे.)

भरतजी—धन्य धन्य भाग आज कौन जगत मो समान ।
कमलनयन शामवरण दुष्टदलन कष्टदहन ।
अंगसे लगावें मोह आज तो कृपानिधान ॥

सीन नं. १२.

(श्रीकौशल्याजीका राजभवनमें दुःखित बैठना.)

लावनी धुन बिहाग ताल कवाली.

(तर्ज—मुख चंदा कैसा नैना तेरे कटारी.)

कौशल्याजी—नहीं आये प्यारे पुत्र जिया घबराये ।
मैं कौन अब करूं उपाय चैन नहीं आवे ॥
विधि कैसी विपता हाये मोपै डारी ।
मेरे लगी हृदेमें आग छाई अंधियारी ॥
अब आ त प्यारे लाल दुखित महतारी ।
बीते है चौदा वर्ष जाऊं बलिहारी ॥
मोहे तुम बिन प्यारे पुत्र कछू न सुहावे ।
काहे आये न मेरे लाल जिया घबरावे ॥

(कौशल्याजीका दुःखित भूमिपर गिरना, शत्रुघ्नजीका उठाना.)

शत्रुघ्नजी— दोहा।

दहन अंग भुज नयन मम, फरकत बारम्बार ।
मन हर्षित प्रिय मात मोहे, होहैं सगुन अपार ॥
उड उड बैठे काग अब, देख भवनपर मात ।
अवश आज आवैं अवध, राम लषण प्रियभ्रात ॥

कौशल्याजी—जनकसुता सिय कुशलयुत, जो आवे दोउ भाय ।
रत्नजटित तो आलना, तोहें दूं काग बनाय ॥

(भरतजीका आनन्दमन आकर दंडवत् करना.)

भरतजी—अनुज जानकीसहित प्रभु, रघुकुलकैरवचंद ।
आवत है अब अवधमें, मात मगन आनन्द ॥

(कौशल्याजीका भरतजीको कंठ लगाना.)

ठुमरी.

(तर्ज—आज विपत कष्ट मिटे पूरी मनकामना.)

कौशल्याजी—धन्य धन्य धन्य आज पुत्रको मैं पाऊंगी ।
मोरी प्यारी आली आवो भूषन वस्त्र सजाऊंगी ॥
आज प्यारे रामको मैं कंठसे लगाऊंगी ।
जानकी रघुवर लषण आज मिलैं धन धन ॥
जीवना सफल हुआ नैन फल उठाऊंगी ।
कष्ट दुख संकट मिटै बिछडो पियारे मिल गये ।
रामकी मैं मात सखी आज फिर कहाऊंगी ॥

(सम्पूर्ण प्रजावासियोंका आनंद होकर श्रीरामचंद्रजीके दर्शनोंके कारण चलना.)

सीन नं. १३.

(भरतजीका सम्पूर्ण प्रजावासियों और माताओंसहित महाराजके दर्शनकी अभिलाषामें पुरीके बाहर खडा होना.)

ठुमरी.

(तर्ज—यह जग है गोरख धंदा.)

ग्रामस्त्री—प्रिय आली मंगल गावो दर्शन रघुपतिके पावो ।
मिटे आज कष्ट भय भारी मिलें रघुवर सीता प्यारी ॥
विधनाने कीन्ह सहाई सब हर्ष आनन्द मनावो ।
वनवास राम बीता है हुवा कारज मनचीता है ॥
प्रिय भाग हमारे जागे मनवांछित फल अब पावो ॥

(पुष्पकविमानका आकाशसे उतरना, श्रीरामचंद्रजीका वसिष्ठजी और सब माताओंको दंडवत करके भरतजीको कंठ लगाना, बिभीषण आदिकका श्रीकौशल्याजीको दंडवत् करना.)

रामचन्द्रजी—प्रिय जननी ! यह मुझको प्राणोंसेभी प्यारे हैं, उनकीही सहायतासे मने दुष्ट निशाचर मारे हैं.

(कौशल्याजीका सुग्रीव बिभीषण और हनुमान्जी आदिकको कंठ लगाना. सबका आनन्दयुत नगरमें प्रवेश करना.)

सीन नं. १४.

(श्रीकौशल्याजीका आनन्दयुत सम्पूर्ण प्रजावासियोंसहित राजभवनमें विराजमान होना.)

ठुमरी अंग्रेजी बजन.

(तर्ज—जावो जी जावो बडे दानके दिलानेवाले.)

देवकन्या—आयेजी आये प्रिय रामा पियारे बनते आये ।
सुंदर सुकुमार सुहाये राजा दशरथके जाये ॥

निश्चर रणभूमि सुवाये मुनिजन हैं अभय बनाये।
भूमिका भार दीन्हा टार सबके कष्ट मिटाये ॥
ईश्वरने करी सहाई विधनाने बात बनाई ।
उजरी यह पुरी बसाई हिर्देकी तपत बुझाई ॥
आली आवो मंगल गावो हर्ष मनावो ।
धन धन हैं भाग पियारे आज सीता राम आये ॥

सीन नं. १५.

(सम्पूर्ण प्रजावासियोंका राजसभामें आना, श्रीरामचन्द्रजीका श्रीजनकनन्दिनीसहित सिंहासनपर विराजमान होना, वसिष्ठजीका राजतिलक करना, देवतागणका पुष्प बरसाना.)

ठुमरी.

(तर्ज–आज शाम मोह लियो बंसरी बजायके.)

देवतागण–सिर छत्र सोहै शाम तन शोभा अपार है ।
दामिनद्युति श्रीजानकी मेघवर्ण रामजी ॥
छबिसींव रूप देखके सकुचावे मार है ।
माधुरी मूर्त अनूप मोह लेत जगतरूप ॥
चन्दन तिलक है भाल पै सुन्दर शृंगार है ॥

(ड्रापसीनका धीरे धीरे गिरना.)

सप्तम भाग समाप्त.

इति नाटक धर्मप्रकाश
अर्थात्
श्रीरामजानकीजी चरित्र समाप्त ।

अनर्घनलचरित्र.

महानाटक.

महाशय ! इस अनर्घनलचरित्रनाटकमें महाभारतोक्त नलदमयंतीकी समग्र कथा लिखीगई है. नलदमयंतीकी कथा जैसी कुछ सारगर्भित तथा अनेक प्रकारसे शिक्षाप्रद है उसका समग्र संसार जानता है और सभी लोग इस कथाके जानने तथा सुननेमें रुचि रखते हैं। ऐसा किसका हृदय पत्थर होगा जो नलदमयंतीकी करुणकथाको पढसुनकर पिघल न जाय। और भाषामें आजतक महानाटक नहीं बना यह महानाटक है। और आजकलहके नाटकोंमें मनमाने गर्भांक दिये जावेहैं इसमें संस्कृतके नाटयशास्त्रकी रीतिसे गर्भांक दियागयाहै। संस्कृतनाटयशास्त्रसे अनभिज्ञलोग इस अनर्घनलचरित्रनाटकको पढकर संस्कृतके नाटयशास्त्रकी मर्यादाको तथा गर्भाककी मर्यादाको भलीभांति जानसकते हैं, क्योंकि यह नाटक संस्कृतनाटयशास्त्रकी मर्यादासे बतायागयाहै। और इस ग्रंथके पढनेसे संस्कृतभाषाका बोधभी बहुत कुछ होसकताहै।

महाशय ! आजादिन साहित्यशास्त्रके परमाचार्य काशीके महामहोपाध्याय सी. आई. ई. विद्वद्वरश्री ७ श्रीगंगाधरशास्त्रीजी महाराजही हैं ऐसा कौन पुरुष है जो उक्त श्रीशास्त्रीजीमहाराजको विद्यासमुद्र न जानताहो यह नाटक उक्त श्रीशास्त्रीजी महाराजके एकवात्सल्यपात्र छात्र पंजाबी पंडितसुदर्शनाचार्यशास्त्रीने बनाया है और क्या लिखें आप एक वेर देखिये तभी आप कविके चातुर्यको जानसकते हैं। कविने औरभी अनेक ग्रंथ संस्कृतमें तथा भाषामें लिखकर विद्वत्समाजमें नाम पाया है। कविने भूमिकामें नलदमयंतीकी मूलकथाभी समग्र लिखदी है। सभकी सुलभताके कारण इसका दाम केवल १ एकही मुद्रा नियत कियाहै। जिसके हाथमें यह ग्रंथ गया उसने फिर छोडा नहीं।

सिद्धांतचन्द्रिका उत्तरार्द्ध

भाषाटीकासहित।

लीजिये संस्कृत व्याकरणके विद्यार्थियोंका सौभाग्य न कहें तो और क्या कहें ? जिसको कि वर्षोंसेलोग तगादेपर तगादे भेज रहे थे कि भाषाटीका चंद्रिकाका उत्तरार्द्ध भेजो उसको वर्षोंसे तैयार कराते कराते बडे परिश्रमसे तैयार कर अब छाप सके इसके साथही साथ हम अपने परम पूज्य पंडित काशीरामशास्त्रीजीको अनेक धन्यवाद देते हैं। जिन्होंने स्वयं महान् एवं अविश्रांत परिश्रम कर इस अमूल्य ग्रंथकी अत्यंत सरल सुबोध भाषाटीका कर संस्कृत विद्याका अनन्त उपकार किया है। इस भारतवर्षमें प्रायः कोई संस्कृत विद्वान् न होगा जो महत् व्याकरण ग्रन्थको न जानता हो परन्तु थोडी व्याकरणताके जाननेवाले तथा नवीन विद्यार्थिगण विचारे इसको यथार्थ न समझ सकनेके कारण इस अनुपम ग्रन्थरत्नसे अपरिचितही नहीं वरन् नितांत अनभिज्ञ थे। इसमें भ्वादि समस्त धातु, चुरादि सम्पूर्ण प्रक्रियाओं और पूर्व कृदंत तथा उत्तर कृदंतका पूरा पूरा वर्णन है फिर विशेषता यह है कि सूत्रोंका पदच्छेद और स्पष्ट वृत्तिके पश्चात् विस्तारित भाषाटीकासे यथार्थ अर्थ देकर अनेक उदाहरणोंद्वारा समझाया गया है जिसको कोईभी कसाही अल्पातिअल्प पढा हुआ विद्यार्थी अल्प कालमें स्पष्टतया समझकर थोडेही दिनोंमें एक योग्य व्याकरणी हो सकेगा। सफेद, मोटे और चिकने कागजकी सुंदर कपडेसे जिल्द बंधे हुए ग्रन्थका मूल्य केवल ग्लेज ३॥ रु० रफ् ३ रु० लगता मात्र डाकव्यय अलग।

वैद्यशिरोमणि ।

अर्थात्

बृहत्त्रयीसार.

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

धर्म अर्थ काम मोक्ष ये चार फल मनुष्यरूपी वृक्षसे उत्पन्न होते हैं. उस मनुष्यरूपी वृक्षका मूल आरोग्य है. और आरोग्यका मूल कारण सावधानी है अतः सबका मूल सनातन आयुर्वेद है. आयुर्वेद (वैद्यविद्या) के ग्रन्थोंको सामान्य पुरुषोंने नहीं बनाया, वरन् जो महात्माजन अपने योगवलसे भूत भविष्य वर्तमानकालको क्षणमात्रमें ध्यान करके जान लेते थे उन त्रिकालज्ञ ज्ञानियोंने अति परिश्रमसे आयुर्वेदके ग्रन्थोंको निर्माण करके समस्त प्राणियोंपर उपकार किया है. आधुनिक समयमें जितने वैद्यकग्रन्थ इस भारतखंडमें प्रचलित हैं उनमें सुश्रुत, चरक, वाग्भट ये तीन ग्रन्थ बडे कहे जाते हैं इसीसे इनको बृहत्त्रयी कहते हैं और कहाभी है कि " निदाने माधवः श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः ॥ शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सके ॥ १ ॥ " यहां सुश्रुतका शारीरस्थान, वाग्भटका सूत्रस्थान, चरकका चिकित्सास्थान मुख्य माना जाता है. इन्हीं तीनोंको लेके ज्योतिर्वित्पंडित नारायणप्रसादमिश्र लखीमपुरखीरीनिवासीने वैद्यशिरोमणि (बृहत्त्रयीसार) नामसे यहग्रन्थ लिखकर सरल देशभाषासे अलंकृत किया है और इस ग्रन्थको तीन खंड अर्थात् पूर्वखंड, मध्यखंड, उत्तरखंड करके लिखा है. तहां पूर्व खंडमें सुश्रुतका शारीरस्थान, मध्य खण्डमें वाग्काभट सूत्रस्थान, उत्तर खण्डमें चरकका चिकित्सास्थान लिखा, भावार्थ यह कि आयुर्वेदके सम्पूर्ण ग्रन्थोंमें बृहत्त्रयी मुख्य है और बृहत्त्रयीका सार यह वैद्यशिरोमणि ग्रन्थ है इस एकही ग्रन्थसे सुश्रुत, चरक, वाग्भट इन तीनों ग्रन्थोंका काम निकल जायगा. तीनों ग्रन्थोंके पृथक् २ खरीदनेकी आवश्यकता नहीं रहेगी और सबके सुभीतेके लिये मूल्यभी बहुतही अल्प रक्खा जायगा ।